वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन 1

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. जे. एम. सी. - 1

जनसंचार माध्यमों के
लिए लेखन

पत्रकारिता एवं जनसंचार
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन - 1

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

- **डॉ. राधावल्लभ व्यास**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय
  कोटा (अध्यक्ष समिति)
- **डॉ. ए. डबल्यू. खान**
  कुलपति
  इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  नई दिल्ली
- **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व-महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)
- **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  महानिदेशक, महानिदेशालय आकाशवाणी
  नई दिल्ली
- **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व-अध्यक्ष
  पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी
- **प्रो. जे.एस. यादव**
  निदेशक
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली
- **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिंदुस्तान
  जयपुर
- **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ-संपादक	भाषा-संपादक
जितेन्द्र गुप्ता	**डॉ. विष्णु पंकज**
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक	वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार
नई दिल्ली	जयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो.(डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो.(डॉ.)एम.के. घड़ोलिया**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक(अकादमिक)	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल

सहायक उत्पादन अधिकारी,

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन - अप्रैल 2012

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। कुलसचिव व.म.खु.वि. कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित ।

एम. जे. एम. सी. -1

जनसंचार -माध्यमों के लिए लेखन

पाठ्यक्रम - प्रथम
खण्ड (1)

1

इकाई 1 लेखन के मूल तत्व	8–20
इकाई 2 फीचर-लेखन	21–40
इकाई 3 टेलीविजन के लिए फीचर-लेखन	41–47
इकाई 4 टेलीविजन के लिए लेखन	48–59
इकाई 5 टेलीविजन - संवाददाता	60–69

पाठ लेखक

1. डॉ.विजय कुलश्रेष्ठ
सहआचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

2. श्याम माथुर
उप संपादक
राजस्थान पत्रिका
जयपुर

3. डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार
जयपुर

4. रामकुमार
पत्रकार, लेखक
कोटा

5. हमीदुल्ला
हिन्दी नाटककार
जयपुर

6. डॉ. रीतारानी पालीवाल
रीडर, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

7. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
अध्यक्ष-हिन्दी विभाग
क्रिश्चियन डिग्री कॉलेज, लखनऊ(उ.प्र.)

8. डॉ. राधामोहन श्रीवास्तव
अध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र विभाग
बड़हलगंज, गोरखपुर(उत्तर प्रदेश)

9. डॉ. कैलाश पपने
विशेष संवाददाता
दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

10. सुभाष सेतिया
संपादक 'आजकल'
प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
पटियाला हाउस, नई दिल्ली

11. डॉ.लक्ष्मीकांत दाधीच
प्राध्यापक, वनस्पति शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय कोटा

12. दीनानाथ दुबे
पत्रकार, लेखक
कोटा

13. राधेश्याम तिवारी
जनसंचारकर्मी एवं लेखक
जयपुर

14. श्रीमती सुषमा जगमोहन
संध्या टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

15. सत सोनी
संपादक- संध्या टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

16. डॉ. रमेश जैन
अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

17. डॉ. हेमन्त जोशी
प्राध्यापक- पत्रकारिता विभाग
भारतीय जनसंचार संस्थान
नई दिल्ली

18. रामेश्वर मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक
नई दिल्ली

19. डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ
रीडर-हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

20. जयदेव शर्मा
प्रभारी- दैनिक नवज्योति
कोटा

खंड एवं इकाई परिचय

'जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन' खंड (1) में आपको पांच इकाई से परिचय कराया जा रहा हैं। ये हैं -1 लेखन के मूल तत्व, 2. फीचर लेखन, 3. टेलीविजन के लिए फीचर-लेखन, 4. टेलीविजन के लिए लेखन, 5. टेलीविजन संवाददाता।

इकाई 1. 'लेखन के मूल तत्व' की हैं। इसमें लेखन का प्रारम्भ, लेखन का महत्व, लेखन के प्रकार, लेखन के मूल तत्व, लेखन कौशल का विकास तथा लेखन में सावधानियां आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया हैं। प्रस्तुत इकाई आपको लेखन की संभावनाओं से परिचित कराएगी। इससे आप एक कुशल लेखक बन सकेंगे।

इकाई 2. 'फीचर लेखन की हैं। इसमें फीचर क्या हैं फीचर की विशेषताएं, फीचर के मूल स्वरूप, फीचर-लेखन, विभिन्न विधाओं से तुलना, फीचर के विषय आदि पर प्रकाश डाला गया हैं। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप एक कुशल फीचर-लेखक बन सकेंगे। आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए अच्छी तरह फीचर लिख पाएंगे।

इकाई 3. 'टेलीविजन के लिए फीचर लेखन' से सम्बंद्ध हैं। इसमें टेलीविजन फीचर अवधारणा एवं स्वरूप, फीचर का उद्देश्य, फीचर के स्रोत, फीचर के तत्व, ध्वनि एवं छायांकन, चित्र रूपक आदि बिन्दुओं पर यथेष्ट जानकारी दी गई हैं। इसका अध्ययन करने के बाद आप टेलीविजन के लिए फीचर-लेखन अच्छी तरह लिख सकेंगे।

इकाई 4. 'टेलीविजन के लिए लेखन' की हैं इस इकाई में टेलीविजन के लिए कैसे लिखा जाए आदि पर व्यापक चर्चा की गई हैं। टेलीविजन के लिए लेखन, तकनीकी की जानकारी, लेखक, निर्देशक और फिल्मी भाषा पर सम्पूर्ण जानकारी दी गई हैं।

इकाई 5. 'टेलीविजन-सावंददाता' की हैं प्रस्तुत इकाई में टेलीविजन संवाददाता पर व्यापक प्रकाश डाला गया हैं। इसमें टेलीविजन- संवाददाता की परिभाषा, मुद्रित, माध्यम, प्रसारण, माध्यम, टेलीविजन- संवाददाता की भूमिका, संवाददाता की विशेषताएं, बाह्य पहलू, आंतरिक पहलू, दायित्व बोध, प्रबन्धन क्षमता, तकनीकी कुशलता, टीम भावना, निष्पक्षता, व्यवहारिक कार्य, समाचार-लेखन, भेंटवार्ता / साउंड लाइट, पीस ट् कैमरा आदि तथ्यों पर यथेष्ट जानकारी दी गई हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप एक कुशल टेलीविजन-संवाददाता बन सकेंगे। आजकल टेलीविजन- संवाददाता की अधिक मांग हैं और इस क्षेत्र में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं

जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन में आपको अन्य खंडो में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के लिए कैसा लिखा जाए इस संदर्भ में विशेष परिचय कराया जाएगा।

इकाई 1 लेखन के मूल तत्व

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 लेखन का प्रारंभ

1.3 लेखन का महत्व

1.4 लेखन के प्रकार

1.5 लेखन के मूल-तत्व

- 1.5.1 विषय या विचार
- 1.5.2 लेखन का स्वरूप
- 1.5.3 लेखन का ढांचा या प्रस्तुति
- 1.5.4 लेखन की शैली
- 1.5.5 आत्मिक स्पर्श

1.6 लेखन-कौशल का विकास

- 1.6.1 अध्ययनशीलता
- 1.6.2 सूक्ष्म-निरीक्षण का प्रयास
- 1.6.3 अनुभवों पर आधारित
- 1.6.4 कल्पनाशीलता
- 1.6.5 प्रारूप या रूपरेखा

1.7 लेखन में सावधानियां

1.8 मूल्यांकन

1.9 सारांश

1.10 उपयोगी पुस्तकें

1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1.0 उद्देश्य

लेखन एक कला है। मनुष्य के भीतर विचारों, भावों एवं संवेदनाओं की विविध प्रकार की तरंगें उत्पन्न होती है जिन्हें अभिव्यक्ति देना या लिखना, उसकी एक जन्मजात प्रवृत्ति है। यह एक प्रकार की सृजन-प्रक्रिया है। इस सृजन प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि इसके मूल तत्वों की गहरी समझ हो और यथाआवश्यक अभ्यास भी हो । इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप

- लेखन का महत्व और उसके प्रकारों के बारे में जान जाएंगे।
- सृजनात्मक लेखन एवं सूचनात्मक लेखन का अंतर समझ जाएंगे।
- विषय के अनुरूप लेखन का महत्व पहचानने लगेंगे।
- अनुभव और लेखन के अंतरंग संबंध को समझ जाएंगे।
- शैली और भाषा का महत्व जान जाएंगे।

- एक लेखक के आवश्यक गुणों के जानकार हो जाएंगे।

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए वह जानी या अनजानी वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। उसकी प्रवृत्ति सदैव जिज्ञासु रही है। इसके साथ ही यह भी मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति है कि वह अपनी बात या अपने अनुभव दूसरों के साथ बांटे। उसके मन में जो बात है, उसे वह अभिव्यक्ति देना चाहता है। यह अभिव्यक्ति संकेतों, रेखाओं, शब्दों, चित्रों, लेखन, नाटक, नृत्य, संगीत आदि विभिन्न माध्यमों से की जा सकती है। कोई भी सूचना, विचार, प्रवृत्ति या अनुभव इस प्रकार संप्रेषित करने की मानव-प्रवृत्ति ही लेखन की विधा का आधार है।

सूचनाओं, अनुभवों, विचारों, सुख-दुख की भावनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया अनादिकाल से चली आ रही है। प्रागैतिहासिक काल में भी मनुष्य एक दूसरे से हाथों के द्वारा संकेतों या चेहरे के भावों से अपनी बात को प्रकट करने का प्रयास करता था। आपस में संवाद की यह प्रक्रिया संकेतों के साथ ध्वनि के माध्यम से भी प्रकट की जाती थी। लेकिन अभिव्यक्ति या संप्रेषण की यह प्रक्रिया अत्यधिक कठिन और अस्पष्ट थी। इस प्रक्रिया की अनेक सीमाएं थीं। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य ने एक दूसरे को अपनी बात समझाने और स्वयं दूसरों की बात समझने की दिशा में जिस कला का विकास किया और इस प्रक्रिया ने जिस महत्वपूर्ण विधा को जन्म दिया, वह थी-लेखन की कला।

1.2 लेखन का प्रारंभ

नदी, घाटियों और घने जंगलों के बीच उन भयावह स्थितियों की कल्पना की जा सकती हैं जिनमें शैलाश्रयों या नदीं किनारों पर बने शैलाश्रयों के बीच मनुष्य वन्य जीवों से अपनी रक्षा करता था। शैलाश्रयों और शैलाखंडो पर हजारों साल पहले अर्थात् प्रागैतिहासिक काल में अंकित रेखाचित्र, आकृतियां और रूपांकन ऐसे दस्तावेज हैं जो मनुष्य की अपने को अभिव्यक्ति करने और मन की गहरी परतों को खोलकर अपने भावों और विचारों को विभिन्न आकृतियों, प्रतीकों आदि के माध्यम से व्यक्त करने की उसकी आदिम प्रवृत्ति का परिचय देते हैं। भावों को या विचारों को अंकित कर देने की इस प्रवृत्ति से ध्वनि या प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति को दिशा मिली । धीरे-धीरे ये प्रतीकात्मक रेखाएं "अक्षरों" और फिर लिपि के रूप मे विकसित हुई। इस प्रकार दृश्य-रूप में अंकित प्रतीकों, रेखाओं और रूपांकनों से आदि-मानव द्वारा अंधेरी गुफाओं मे, पाषाणों पर प्रारंभ की लेखन-यात्रा। यह भी कह सकते हैं कि मनुष्यों के बीच दृश्य-संकेतों और प्रतीकों से संप्रेषण की जो प्रणाली प्रारंभ हुई, उसमें निहित है -लेखन कला के विकास का पहला बीज।

इस प्रकार सबसे पहले शब्दों के चिह्न बने जो उचरित ध्वनि नहीं बल्कि सीधे पदार्थ का बोध कराते थे। पदार्थ का अर्थ है- संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि का बोध कराने वाला पद या शब्द। ये चिह्न लिपि-चिह्न या "आइडियोग्राफ" कहलाते हैं। इस प्रकार पदार्थ का बोध कराने वाले चिह्नों से मिस, बेबिलोन, चीन आदि देशों में लिपियां विकसित हुई। भारत में भी ऐसा हुआ होगा लेकिन चीन और जापान में तो इस प्रकार की लिपियों के विकसित रूप आज भी विद्यमान हैं । शब्द की रचना को किसी चिह्न के माध्यम से प्रकट करना संभव होने के बाद यह कठिनाई पैदा हुई कि शब्द की अनेक ध्वनियों

को किस प्रकार व्यक्त किया जाए। अत: एक ध्वनि या वर्ण के लिए एक प्रकार का चिह्न बनाने का यत्न हुआ। यों धीरे-धीरे मनुष्य ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए रास्ते खोजे ओर इस संपूर्ण खोज-प्रक्रिया से उत्पन्न हुई लेखन की विधा।

मिस और मेसोपोटामिया में छह हजार साल पहले मिट्टी के टुकड़ों पर लेखन के प्रयत्न प्रारंभ हुए जिनमें समय के साथ सुधार होता गया। शिलाओं पर लिखना प्रारंभ हुआ। लिखने का अर्थ था-खोदना। बाद में पत्थरों पर अक्षर उभारे जाने लगे जो उत्कीर्ण-लेख कहलाते हैं। फिर तलाश हुई सुवाह्य (पोर्टेबल) साधनों की। तब मिला पत्र या पत्ता। पंखों या डंडियों (कलम) का लेखन के लिए प्रयोग होने लगा। ताड़ पत्र या भोज पत्र पर गोल लिखाई शुरू, हुई ताकि पत्ता कटे नहीं। इस विकास यात्रा के अंत में आदमी कागज और स्याही तक पहुंचा। साथ ही लेखन के द्वारा ज्ञान को एक पीढ़ी-से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य भी सरल हो गया। मानव इतिहास में जितनी भी खोजें हुई उनमें लेखन की खोज और इसके विकास का कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे मनुष्य के लिए अपनी स्वयं की क्षमताओं और ज्ञान को संचित करना संभव हुआ। मनुष्य को अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन भी प्राप्त हुआ। लेखन के द्वारा सदियों की सच्चाइयां और ज्ञान के अथाह भंडार से सतत् प्रवाहित स्रोत मानव जाति की धरोहर बन गया। अज्ञान का अंधेरा छंटने लगा ।

1.3 लेखन का महत्व

लेखन की विधा ने ज्ञान के भंडारण को संभव बना दिया और मनुष्य की जिज्ञासा-पूर्ति के हारा खोल दिए। ज्ञान-विज्ञान की प्रगति का स्रोत बन गया-मनुष्य द्वारा रचित ज्ञान-भंडार। इसके अलावा मनुष्य की अपने को अभिव्यक्ति करने की आदिम प्रवृत्ति को सहज मार्ग मिल गया। लेखन का विकास ही एक प्रकार से मनुष्य की प्रगति और सभ्यता-संस्कृति की प्रगति का आधार है। लेखन का महत्व मनोवैज्ञानिक और सौंदर्य बोध की दृष्टि से भी कम नहीं है क्योंकि मनुष्य के भावात्मक एवं वैचारिक धरातल पर क्रिया-प्रतिक्रिया या संवेदनाओं की जो लहरें उत्पन्न होती हैं, उन्हें अभिव्यक्ति देने और विचारों तथा भावों को प्रकट कर देने की उसकी प्रवृत्ति उसी प्रकार एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिस प्रकार मां में अपने बच्चे को जन्म देने की प्रवृत्ति है या बीज के मिट्टी में डालने के बाद खाद-पानी-ऊर्जा मिलने पर उसके अंकुर निकलने की प्रक्रिया है। प्राणी मात्र अपनी संवेदना या आवेगों को अभिव्यक्त करता है। श्रावण माह में जब चारों ओर हरियाली छा जाती है तो मोर पंख फैलाकर नाचने लगता है और अपनी प्रसन्नता के आवेग को मुखर अभिव्यक्ति देने लगता है। इसी प्रकार सुख-दुख या अन्य प्रकार के विचारों और भावों को लेखन के द्वारा अभिव्यक्ति देकर संवेदनशील मनुष्य एक राहत या संतोष की अनुभव करता है। अर्जित ज्ञान और अनुभवों का लिखित संप्रेषण भी उसे आत्मविभोर करता है। इसलिए लेखन एक प्रकार की विवशता है जो मनुष्य को लिखने के लिए बाध्य करती है। वह अपनी बात लिखकर अपने को मुक्त अनुभव करता है।

लेखन के द्वारा मनुष्य अपने विचारों, अनुभवों और ज्ञान को समाज के साथ बाटता है। समाज के एक अंग के रूप में मनुष्य और समाज के रिश्ते को प्रगाढ़ करने का कार्य भी लेखन से संपन्न होता है। इन्हीं कारणों से साहित्य की रचना होती है और लेखन की विधा आज भी इलेक्ट्रानिक माध्यमों की होड़ में भी टिकी हुई है।

1.4 लेखन के प्रकार

लेखन की प्रक्रिया का क्षेत्र व्यापक है और इसके विविध आयाम और प्रकार हैं। लेखन मात्र सूचनात्मक, विवरणात्मक और सतही चीजों की अभिव्यक्ति तक भी सीमित हो सकता है। तथ्यपरक या विश्लेषणात्मक लेखन की भी एक श्रेणी होती है। साहित्य की दृष्टि से गद्य, पद्य नाटक आदि वर्गो में भी लेखन को बांटना संभव है। मोटे तौर पर लेखन को सृजनात्मक और असृजनात्मक, इन दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है। परन्तु यहां यह भी ध्यान मै रखना चाहिए कि कोई भी लेखन पूर्णरूपेण सृजनात्मक या असृजनात्मक नहीं हो सकता है। जहां सृजनात्मक या रचनात्मकता का अधिक पुट हो, उसे हम सृजनात्मक लेखन की श्रेणी में रख सकते हैं और जहां तथ्य या विश्लेषण अधिक हो, उसे असृजनात्मक लेखन कह सकते हैं। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि सूचना प्रधान लेखन या रूखी, विचारहीन, कल्पना रहित अभिव्यक्ति ही होती है।

सृजनात्मक लेखन के अंतर्गत भाव प्रवण, संवेदनशील, ललित भाषा और कल्पना से युक्त साहित्यक लेखन को ले सकते हैं। इस प्रकार के लेखन का उद्देश्य मात्र सूचना देना नहीं होता बल्कि किसी अदृश्य भाव या विचार अनुभूति को प्रकट करना होता है। लेखन की रचनात्मकता के सन्दर्भ में मनन, चिंतन या दृश्य-जगत के बारे में या अमूर्त विचारों जैसे प्रेम, देवत्व आदि विभिन्न पहलुओं को लेकर लेखन किया जाता है। सामाजिक स्थितियों, जीवन के विभिन्न पक्षों आदि पर कल्पनाशीलता के साथ जो मौलिक लेखन परंपरा है, उसे विशेष रूप से सृजनात्मक लेखन माना जाता है। इसमें कथा, कहानी, ललित निबंध, उपन्यास आदि शामिल है। जीवन के प्रति व्यक्ति का निजी सोच और दृष्टि ऐसे लेखन में प्रमुख होती है। भाषा और शैली का लालित्य भी साहित्य लेखन का सहज स्वाभाविक अंग है। सृजनात्मक लेखन का लक्ष्य, मनुष्य को उसके अंतर्मन की अभिव्यक्ति की अनुभूति देने, उसे उत्तम और अच्छा बनाने की दिशा लिए होता है।

असृजनात्मक लेखन में विचारों और तथ्यों के लेखन का वह दायरा शामिल होता है जहां सृजनात्मक रूप में मनुष्य के ज्ञान का विस्तार हो। इतिहास, भूगोल, विज्ञान, पुरातत्व आदि को इस प्रकार के लेखन में समिलित कर सकते हैं। ऐसे लेखन में तर्क या विश्लेषण के द्वारा निश्चित विधि से किसी विषय का विवेचन किया जाता है। यहां भी लेखन में गति और कौशल का होना आवश्यक है।

कुल मिलाकर लेखन को पूर्णत: अलग-अलग वर्गों में विभाजित करना संभव नहीं है क्योंकि यह एक ऐसी विधा है जिसका फैलाव बहु त अधिक है। सूचना प्रधान लेखन में लेखक की विशिष्ट अभिरुचि और अनुभवाश्रित शैली के कारण सृजनात्मक लेखन की छाप नजर आने लगती है। सुविधा के लिए और समझने के लिए लेखन को विभिन्न प्रकार के वर्गो या श्रेणियों में बांटा जाता है। सूचनात्मक लेखन का उदाहरण प्रस्तुत है जिससे किसी स्थान या प्रदेश की स्थिती का ज्ञान होता है। यहां कल्पना या रचनात्मकता की बजाय तथ्य प्रस्तुत किए गये हैं -

"भारत की मुख्य भूमि के दक्षिण पश्चिम कोने पर स्थित छोटे-से राज्य केरल में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खजाना है। 38,663 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस प्रदेश को तीन भागों-उच्च भूमि, मध्य भूमि और निचली भूमि में बांटा जा सकता है। इस छोटे से प्रदेश की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार 2 करोड़ 84 लाख 680 है। आबादी के घनत्व के हिसाब से यह 655 बैठता

है अर्थात् प्रत्येक किलोमीटर पर सर्वाधिक लोग, इतनी आबादी के बावजूद यह प्रदेश धरती पर स्वर्ग-सा लगता है तो सिर्फ इसलिए कि प्रकृति ने यहां खुले हाथों से सुन्दरता लुटाई है।'

इस प्रकार के विवरणात्मक लेखन में भी प्रवाह, गति और संयम का पुट आवश्यक है। इससे हटकर सृजनात्मक लेखन में बात पर कल्पना के पंख लग जाते हैं। केरल की भौगोलिक स्थिति के बारे में प्रस्तुत उदाहरण से भिन्न यहां अंडमान के बारे में कुछ पंक्तियां लेखन में सृजनात्मकता का परिचय देने वाली हैं

"बहर अगर बहर न होता तो बयाबान होता।"

गालिब की यह अति यथार्थवादी ढंग की कल्पना अंडमान में एक खास तरह से याद आती है जैसे हम एक साथ बहर यानी समुद्र और बयाबान में पहुंचगए हों। गंभीर, अनंत नीला समुद्र और बीच-बीच मे उभरे खूब हरे बियाबान द्वीप. समुद्र पहले अभिभूत करता है और फिर चुप कर देता है।...समुद्र मन में वैसी उत्सुकता नहीं जगाता जैसी कि पहाड़ जगाते हैं। पहाड़ ऊंचाई का और शायद उनके सामने हमारे बौनेपन का भी एहसास देते हैं और साथ ही कुछ और आगे जाकर कुछ और जिज्ञासा भी जगाते हैं, परंतु समुद्र अपनी विशालता और निर्जनता के आगे हमें लाचार-सा कर देता है। शायद समुद्र भी एक तरह का बियाबान है. पानी का बीहड़, निर्जन नंगा-विस्तार (मंगलेश डबराल)

बोध प्रश्न - 1

1. लेखन का प्रयोजन बताइए।
2. सृजनात्मक लेखन किसे कहते हैं? सोदाहरण बताइए।
3. लेखन के महत्व पर प्रकाश डालें1

1.5 लेखन के मूल तत्व

अभिव्यक्ति के रूप में लेखन एक जीवन्त विधा है। अंतर्मन या भावना के तरल धरातल पर उत्पन्न विचारों और संवेगों को शब्दों में पारदर्शी ढंग से ढाल देना और अभिव्यक्ति के स्तर पर विचारों और भावों को सजीव प्रस्तुति देना ही प्रभावपूर्ण और ठोस लेखन का सबूत है। विचारों और भावों को मात्र शब्दों का जामा पहना देना ही लेखन नहीं है। लेखन की सफलता की कसौटी यह है कि उसमें लेख की आत्मा की अनुभूतियां धुलती-मिली और रची-बसी हो। पाक को लगे कि जो कुछ वह पढ़ रहा है, उसके भीतर भी कहीं वैसा ही एहसास जीवंत हो रहा है। इस दृष्टि से लेखन कहीं शून्य में घटित नहीं होता। मनुष्य शरीर की तरह उसका एक ढांचा होता है। लेखन किसी घटना, विषय या विचार से संबंध रखता है। इस प्रकार लेखन का कोई बिन्दु या विषय आवश्यक है। विषय और ढांचे के अलावा उसका एक रूप-रंग या स्वरूप भी होता है। लेखन की जीवंतता का भाव तभी हो सकता है जब उसके भीतर एक आत्मिक स्पर्श हो। इस प्रकार, एक विषय- स्वरूप, ढांचे के अलावा लेखन की कोई शैली होनी चाहिए । मनुष्य का शरीर जिस प्रकार पाँच तत्वों से बना होता है, उसी प्रकार लेखन को गतिमय, प्रवाहमय एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए उसमें पांच तत्वों की प्रमुखता होनी चाहिए।

1.5.1 विषय या विचार

लेखन में विषय या विचार का मूल अनुभव पर आधारित रहता है। ज्ञानेंद्रियों की सहायता से अपने आसपास का अवलोकन करके मनुष्य जीवन में अनुभव प्राप्त करता है। दृश्य और अदृश्य रूप

से जीवन के सुख-दुख की घटनाएं, विविध स्थितियां आदि मानव मन पर निरंतर अंकित होती रहती हैं और उसके भीतर क्रिया-प्रतिक्रिया की एक निरंतर चलने वाली धारा उसे आंदोलित करती रहती है। इस प्रकार अनुभव की एक सतत क्रिया के दारा मनुष्य की भावना या विचारों पर प्रभाव पड़ता है और उसके भीतर बहुत कुछ संगृहीत हो जाता है।

मनुष्य को बाहरी संसार की घटनाएं एवं स्थितियां विचार करने, चिंतन करने और मंथन करने के लिए उसे निरंतर प्रेरित करती हैं। इस बाह्य एवं भीतरी संसार के यथार्थ का वह अपने लेखन में ताना-बाना बुनता है। विषय या विचारों की कोई सीमा नहीं है। लेखन के लिए हजारों और अदृश्य चीजें, घटनाएं, परिस्थितियां या मानव मन में निरंतर हलचल पैदा करने वाले विचार या भावनाएं लेखन का विषय बन सकती है। लेकिन यहां यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि किसी भी विषय पर लिखने का लक्ष्य क्या है? कोई बात अभिव्यक्त करके मनुष्य अपने को संतुष्ट करना चाहता है या वह अन्य लोगों तक अपनी बात पहुंचाकर अपने भावों एवं विचारों को समाज के साथ बांटना चाहता है। यह भी हो सकता है कि ज्ञान की दृष्टि से जिस विषय को छूने का प्रयास किया गया है, वह मानव मात्र के लिए सूचनात्मक, शैक्षणिक, मनोरंजक या कल्याणकारी हो। लेखन कोई निरुद्देश्य संपन्न की जाने वाली क्रिया नहीं है। उसे सोद्देश्य, प्रभावी और सार्थक होना चाहिए।

1.5.2 लेखन का स्वरूप

बाह्य संसार पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि हर वस्तु की अपनी प्रकृति, स्वभाव और रंग-रूप है। इस प्रकार लेखन के भी विविध रंग-रूप या एक स्वरूप (फॉर्म) होता है। लेखन की अनेक विधाएं और रूप हैं। कोई भी व्यक्ति किसी भी विषय पर कविता, गीत, कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास आदि लिख सकता है। लेखन के विषय और किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखन किया जा रहा है, इन दो प्रश्नों के उत्तर में लेखन का स्वरूप तय होता है। यदि फलक या कैनवास छोटा है और कुछ ही पात्रों को लेकर जीवन की किसी घटना या कथा को लिखना है तो वह कहानी का रूप होगा और कथा का फलक विस्तृत है तो वह उपन्यास के दायरे में समेटी जा सकेगी।

लेखन के विभिन्न तत्व आपस में एक-दूसरे से गहरा सम्बन्ध रखते हैं । यदि किसी विचार भाव या विषय पर कविता लिखी जाती है तो उसी के अनुरूप शैली, भाषा, स्वरूप, ढांचा तय होगा।

1.5.8 लेखन का ढांचा या प्रस्तुति

जिस प्रकार किसी इमारत का ढांचा तैयार करने के लिए एक नक्शा तैयार किया जाता है और उस नक्शे को बनाते समय उस स्थान की सीमा या क्षेत्रफल (स्पेस) को ध्यान में रखना पड़ता है और इमारत के ढांचे के लिए आवश्यक सामग्री जुटानी पड़ती है, ठीक उसी तरह, लेखन के लिए यह आवश्यक है कि चुने गए विषय के अनुरूप तथ्य या जानकारी एकत्रित की जाए। इस प्रकार एकत्रित सामग्री को सिलसिलेवार संयोजित करने के बाद लेखन की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए।

लेखन में आवश्यक गुणों का समावेश करने, उसे ग्राह्य एव प्रभावपूर्ण बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसे एक व्यवस्थित आकार दिया जाए। उसकी कोई व्यवस्थित प्रस्तुति हो। आमतौर से, प्रारंभ, मध्य और अंत, इन तीन भागों में किसी भी लेखन को विभाजित करने या तीन स्तंभों पर अवस्थित करने का प्रचलन है। किसी भी कृति को यों तीन भागों में प्रस्तुत करने की सदियों पुरानी

लेखन-परंपरा चली आ रही है ।लेकिन सृजनात्मक लेखन के लिए बंधी-बंधाई परंपरा का पालन हमेशा संभव नहीं होता। प्रतिभावान लेखक प्रयोग धर्मी होता है। साहित्य के क्षेत्र में तो निरंतर प्रयोगधर्मिता का निर्वाह होता है। समय-समय पर लेखन के ढांचे और प्रस्तुति की तकनीकें बदलती आई हैं। प्रस्तुति के स्वरूप में परिवर्तन भी किए जा सकते हैं क्योंकि ढांचा या प्रस्तुति अपने आप में लेखन का उद्देश्य नहीं है बल्कि यह तो लक्ष्य तक पहुंचने का माध्यम है।

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि लेखन की विधा में प्रस्तुति या ढांचा, एक शिल्प है और लेखक शिल्पकार है। वह ढांचे को लचीला बना सकता है। यह बात जरूर है कि शिल्प के अपने मूल-तत्व होते हैं और इनका संयोजन ही सौंदर्यबोध की दृष्टि से सार्थक प्रभाव की सृष्टि करता है। लेखन की सामग्री शब्द है जो विचार या भाव को अभिव्यक्ति देता है। शब्दों, वाक्यों के प्रयोग और उन्हें किसी पुस्तक के अध्यायों में प्रस्तुत करके एक पुस्तक की संरचना की जाती है। संगीत में स्वरों और वाद्यों के तालमेल से एक रचना को प्रस्तुत करके संगीत की रसमय लहरों की प्रस्तुति की जाती है। जैसे संगीत, चित्र, नृत्य, नाटक आदि में विविध शिल्प विधान द्वारा अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाया जाता है उसी तरह लेखन में भी शिल्प महत्वपूर्ण है। लेखन स्वांत: सुखाय या केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए भी हो सकता है। पुस्तक, पत्रिका या समाचारपत्र के लिए भी लिखा जा सकता है। नाटक मंचन के लिए लिखे जाते हैं। फिल्म या टेलीविजन पर प्रस्तुति के लिए भी लेखन हो सकता है या रेडियो के लिए भी।

हर माध्यम के तकनीकी और कलात्मक पक्ष को ध्यान में रखना जरूरी है। उदाहरण के लिए एक फीचर या आलेख समाचारपत्र में मुद्रण के लिए भी लिखा जा सकता है या रेडियो प्रसारण के लिए भी। उसी विषय पर फीचर टी.वी. पर भी दिखाया जा सकता है। लिखते समय मुद्रण, श्रव्य और दृश्य माध्यमों के तकनीकी पक्ष को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

1.5.4 लेखन की शैली

शैली का अर्थ है -विचारों और भावों को अभिव्यक्ति देने का अन्दाज या तरीका। एक ही विषय पर किया गया लेखन शैली की दृष्टि से अलग- अलग हो सकता है। अंदाजेबयां या अभिव्यक्ति के तरीके से प्रभाव की सृष्टि होती है। शब्द ही ब्रह्म है। लेखक का शब्द भंडार कितना व्यापक है, भाषा की प्रकृति की कितनी गहरी पकड़ है, शब्दों को किस प्रकार वाक्यों में पिरोया गया है और बात कहने का ढंग कैसा है, ये सब बातें शैली का निर्माण करती हैं । शैलीगत विशेषताओं का निर्माण व्यक्ति की निजी विशेषताओं से होता है। शैली के लिए कई बार लोग एक विशेष लेखक की कृतियों का अध्ययन करते-करते उससे प्रभावित होकर उस शैली की नकल करने लगते हैं लेकिन यह उधार की शैली होती है। जिस शैली पर आपके व्यक्तित्व की छाप होगी वही आपकी असली शैली कहलाएगी। इसके लिए कोई बना-बनाया मार्ग या फार्मूला नहीं है। शैली व्यक्तिगत पहचान का माध्यम है।

वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, संस्मरणात्मक, डायरी शैली जैसा वर्गीकरण आलेख की प्रवृत्ति बताते हैं, विषय वस्तु की प्रस्तुति के स्वरूप का बखान करते हैं। लेखन को इस तरह की शैलियों में विभाजित नहीं किया जा सकता। कथ्य का संयोजन तथ्यपरक, विचारपरक सूचनात्मक, भावात्मक हो सकता है। लेकिन किसी भी शैली की विशेषताओं में, उसका सीधा, सरल, सरस, रोचक, कलात्मक और प्रभावपूर्ण होना अनिवार्य है। यह किसी भी लेखक की शैली की सफलता

का द्योतक है, यदि वह शब्दों में जीवंत दृश्यों की अनुभूति दे सके या दृश्यों को अपनी रचनाओं में चलचित्र की तरह जीवंत कर दे। अपनी बात को पाठक के मन या हृदय पर अंकित कर दे। लेखक और पाठक के बीच संप्रेषण के स्तर पर कोई दूरी नहीं रहे तो यह लेखन शैली की सफलता माना जाना चाहिए।

1.5.5 आत्मिक स्पर्श

लेखन में ईमानदारी का होना आवश्यक है। एक सबा और ईमानदार लेखक वह है जो वह देखता है, उसे लिखता है या जो भोगता या अनुभव करता है, उसे बिना किसी चतुराई या चालाकी के सधी अभिव्यक्ति देता है। यदि लेखक विचार, चिन्तन, सुख-दुख आदि की अभिव्यक्ति को ऐसा धरातल प्रदान कर दे कि पाठक को लगे कि किसी ने उसके विचारों, कुंठाओं या भावों को सच्ची अभिव्यक्ति दी है तो ऐसे लेखन को जीवंत कह सकते हैं। इसे यों भी कह सकते हैं कि ऐसा लेखन संभव है जबकि लेखक अपनी आत्मा को लेखन में उंडेल दे अर्थात् लेखन में एक आत्मीय स्पर्श भर दे जो पाठक के अंतर्मन को छू जाए। उरने लेखन की सत्यता का आभास दे दे। हंसी-खुशी, दुख-दर्द आदि की अनुभूतियां मनुष्य मात्र में समान है। किसी भी प्राणी को दुख पहुंचाना उसके प्रति हिंसा है। अत: आत्मिक स्पर्श से पूर्ण और गंभीरता के साथ किया गया लेखन, पाठक को यह अनुभूति देने में सफल हो सकता है कि लेखक ने अपने विचारों, भावों सुख-दुख की अनुभूतियां के माध्यम से उसके सुख-दुख को अभिव्यक्ति दी है। पाठक और लेखक को एक समान धरातल पर खड़ा करने के लिए यह आवश्यक है कि लेखन में लेखक की आत्मा की गंध बसी हो।

बोध प्रश्न - 2

1. विषय और विचार महत्वपूर्ण हैं या स्वरूप?
2. लेखन के ढांचे से क्या तात्पर्य है?
3. आत्मिक का महत्व बताइए।

1.6 लेखन- कौशल का विकास

कई बार लोग इस सम में रहते हैं कि लेखक बनना तो जन्मजात प्रतिभा से ही संभव हो सकता है। अत: वे अधिक प्रयास नहीं करते । कुछ सीमा तक यह कहा जा सकता है कि आनुवांशिक परिस्थितियों या वातावरण की अनुकूलता से कई लोगों में लेखन के प्रति एक स्वाभाविक ललक होती है और यह ललक उनका मार्ग सरल बना देती है । परंतु, अभ्यास, लगन और निरंतर परिश्रम से मनुष्य असंभव को भी संभव बना सकता है। लेखन भी एक विधा है । एक कला है । किसी भी विधा या कला के प्रति अभिरूचि के साथ संबंध जोड़ने और उसको सीखने के लिए सतत प्रयत्न करने से उसमें कुशलता अर्जित करना संभव है । आवश्यकता है -समर्पण के साथ अभ्यास करते रहने की । हर वस्तु पर उसकी कीमत लिखी रहती है । किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार उसकी कीमत चुकानी पड़ती है, उसी प्रकार किसी भी विधा में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर चिंतन, अभ्यास और परिश्रम करते रहना आवश्यक होता है । लेखन में कुशलता का विकास करने के लिए कुछ बिन्दुओं पर ध्यान देकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए ।

1.6.1 अध्ययनशीलता

लेखन का क्षेत्र अति व्यापक है । इसलिए लेखन में दक्षता एवं कुशलता प्राप्त करने के लिए कोई भी क्षेत्र अपनी अभिरुचि के अनुरूप चुना जा सकता है । इसके अलावा जिस भाषा में लेखन करना हो, उसमें दक्षता प्राप्त करना या उस भाषा में अपने को सहज अभिव्यक्ति देना आवश्यक है । अत: भाषा का ज्ञान ही नहीं उसकी गहरी समझ भी होनी चाहिए । लेखन में शब्दों का सही ढंग से उचित रूप में प्रयोग करने के लिए शब्द ज्ञान भी समृद्ध होना जरूरी है । यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए भाषा पर अपनी पकड़ मजबूत करने के अलावा भाषा-विशेष में रचित साहित्य एवं लेखन का अध्ययन करते रहना चाहिए ।

आमतौर से अध्ययन की प्रवृत्ति को निरन्तर कायम रखना कठिन होता है । परन्तु एक अच्छा लेखक बनने और लेखन में सिद्धहस्त होने का रास्ता सरल होते हुए भी निरंतर कदम बढ़ाते रहने की मांग करता है । लेखन में कुशलता प्राप्त करने के लिए अध्ययनशीलता का होना आवश्यक है । ऐसा करने से जहां सामान्य ज्ञान एवं विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त होने के साथ-साथ रचनाशीलता, शब्द-रचना, उनके प्रयोग, शैली की प्रौढ़ता, लेखन में स्पष्टता एवं प्रवाह जैसे गुणों को सीखने में सहायता मिलती है वहां निरंतर अध्ययन से, ज्ञान के अथाह भंडार में डुबकी लगाने से महान लेखकों के रचना-संसार से भी साक्षात्कार होता है । अध्ययनशीलता से आत्म-शिक्षण की प्रक्रिया संपन्न होती है । व्यक्ति की जिज्ञासु - प्रवृत्ति और अधिक से अधिक सीखते रहने की अभिरुचि, उसे निरंतर गतिमान और सबल बनाने का कार्य करती है । अध्ययनशीलता प्रवृत्ति से लेखन में निखार आता है । इस प्रकार निरंतर पढ़ने - लिखने की आदत से विचारों एवं दृष्टिकोण को स्पष्ट, सरल, सुगम और सुबोध शैली में प्रस्तुत करने का मार्ग प्रशस्त होता है । अभिव्यक्ति में दक्षता और प्रौढ़ता आती है । स्वयं को लेखन में पारंगत जानकर यदि अध्ययन से हाथ खींच लिया तो अपेक्षित निपुणता प्राप्त करना संभव नहीं हो पाएगा । एक सफल लेखक बनने के लिए पढ़ने की आदत डालने का प्रयास करना चाहिए । समय काटने या मनोरंजन के लिए पढ़ना एक बात है और गंभीरता से अध्ययन करना, पढ़ी हुई पुस्तकों का विश्लेषण करना और कृति-विशेष के विविध पक्षों की बारीकियों में झांकना दूसरी बात है । गंभीरता से किया गया अध्ययन, शब्द-ज्ञान को समृद्ध करने के अलावा लेखन के लिए एक सुदृढ़ आधार भी देता है ।

1.6.2 सूक्ष्म-निरीक्षण के प्रयास

अध्ययनशीलता के साथ यह भी आवश्यक है कि एक अच्छा लेखक बनने या लेखन में कुशलता प्राप्त करने के लिए दृष्टि को सदैव खुला और चौकन्ना रखने की आदत का विकास किया जाए । जीवन के विविध पक्षों, स्थितियों और चारों और फैले विस्तार का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने का सतत् प्रयास किया जाए । जीवन के जटिल प्रश्नों को उद्घाटित करना, प्रकृति के सौंदर्य और रहस्यों को समझना, चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में जांचना, स्वभावगत विशेषताओं और चीजों की पूरी तरह पहचान करना आदि तभी संभव है, जब उनका बारीकी से निरीक्षण करने की आदत डाली जाए ।

1.6.3 अनुभवों पर आधारित

दूसरों के अनुभव और विचारों को पढ़कर भी लेखन का अभ्यास तो किया जा सकता है लेकिन मौलिक एवं रचनात्मक लेखन के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्ति के स्वयं का अनुभव भंडार

विकसित हो । अपने ही अनुभवों को लेकर उन्हें अभिव्यक्ति देने का कार्य लेखन में प्राण की प्रतिष्ठा करता है । लेकिन अनुभवों को ज्यों का त्यों लिख देना, मौलिक लेखन या सृजन नहीं कहलाता है । जीवन में प्राप्त अनुभवों या संकलित तथ्यों को लिख देना काफी नहीं । अनुभवों का मंथन और उन पर चिंतन करना भी जरूरी है । मंथन और चिंतन से अनावश्यक तथ्यों की कांट-छांट करके अनुभवों को परिपक्वता देनी चाहिए । अपने भीतर अनुभवों की आंच को अनुभूत करने से वे व्यक्तिगत, निजी और अधिकृत बन जाते हैं । लेखन का कार्य किसी सजीव कृति को जन्म देने की प्रक्रिया के समान है । जिस प्रकार मां के गर्भ में नौ महीने रहने के बाद शिशु का स्वत: ही जन्म होता है, ठीक वैसे ही अपने अनुभवों को तपने के बाद ही अभिव्यक्ति के योग्य समझना चाहिए । ऐसा करने से लेखन में एक शक्ति और ऊर्जा उत्पन्न होगी । एक गति और स्फूर्ति का संचार हो सकेगा ।

लेखन मे दक्षता प्राप्त करने का छोटा या तुरंत लक्ष्य तक पहुंचाने वाला कोई रास्ता नहीं है। लेखक में धैर्य और संयम होना चाहिए । पहाड़ों से फूट पड़ने वाले झरनों की तरह एक स्वाभाविक गति और प्रवाह की सृजन में लय होनी चाहिए। समझ एवं अभ्यास से ही ऐसा हो सकता है

1.6.4 कल्पनाशीलता

लेखन की विधा में सृजनात्मकता के निर्माण के लिए कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिए । जिस विषय या विचार पर लेखन करना है, उसके बारे में यह जानना चाहिए कि उस विषय पर बहुत लोग लिख रहे हैं या वह एक नया विषय या विचार है? यह भी प्रश्न अपने आपसे पूछा जा सकता है कि उक्त विषय की सार्थकता या उपयोग क्या हो सकता है? लेखन का लक्ष्य क्या है? यदि मौलिक और नया विचार है तो श्रेष्ठ बात है । विचार या विषय नया नहीं हो तो भी उस पर लिखा जा सकता है क्योंकि हमेशा नए विषय और विचार तो उपलब्ध नहीं हो सकते । जीवन, मृत्यु, प्रेम, घृणा, भूख, बेकारी आदि विषय हैं जिन पर अनेक लोग लिख चुके हैं और इन विषयों पर लेखन का सिलसिला जारी है । विषय कोई भी हो, उसके विविध पहलू होते हैं । किसी भी विषय की गहराई में जाने, कल्पना और व्यक्तिगत चिंतन का स्पर्श देने के बाद एक लेखक की क्षमता किसी भी विषय को रोचक और पठनीय आधार दे सकती है । कल्पना के पंखों पर सवार होने की आदत डालनी चाहिए परन्तु यह सावधानी भी रखनी होगी कि यथार्थ का सूत्र हाथ में रहे ।

1.6.5 प्रारंभ या रूपरेखा

एक बार यह स्पष्ट होने पर कि किस विषय या विचार पर लेखन करना है, उस विचार या विषय के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करना चाहिए । चिन्तन की प्रक्रिया में कथ्य या विषय, कथानक, स्थितियों, पात्रों, संवादों आदि को समिलित किया जा सकता है । जिस विषय को छूने का प्रयास किया गया है, उसका उपयोग कहां होगा, मुद्रण के लिए लेखन है या रेडियो या टी.वी. के लिए प्रसारित किया जाना है या उसका उपयोग कहीं अन्य उद्देश्य से किया जाना है, आदि प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए। इस प्रक्रिया के बाद लेखन का प्रारूप तैयार कर लेना चाहिए ।

मौलिक लेखन को समर्पित लोगों के मस्तिष्क में एक अस्पष्ट विचार आने पर भी वे प्राय: लिखना प्रारंभ कर देते हैं और उनके मस्तिष्क में पहले से संकलित अनुभव उनके लेखन को प्रेरित करके किसी लक्ष्य तक उनकी रचना को पहुंचा सकते हैं परन्तु लेखन की यात्रा प्रारंभ करने वाले लेखकों

को तो अपना लक्ष्य निर्धारित करके व्यवस्थित ढंग से लेखन प्रक्रिया का अभ्यास शुरू करना चाहिए । संगीत की तरह एक प्रभाव की सृष्टि करने के लिए उन्हें रचना के प्रारंभ और अंत को ध्यान में रखते हुए एक रूपरेखा बनाकर संपूर्ण लेखन प्रक्रिया को संयोजित करने का अभ्यास करना चाहिए । लेखन में गति और प्रवाह भी हो, इसकी जांच का मापदंड यह है कि पाठक किसी रचना को पढ़ना प्रारंभ करे तो वह उस रचना को दिलचस्पी के साथ तक पढ़े । लेखन में इस गुण का समावेश करने के लिए प्रारंभ और अंत, दोनों को रुचिकर बनाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए और उसका मध्य भाग भी कमजोर न हो, यह भी सावधानी बरतनी चाहिए।

कोई भी व्यक्ति जन्म से बड़ा या महान लेखक नहीं होता । किसी भी बड़े कार्य का आरंभ एक कदम आगे बढाने से होता है । अत: लेखन कला में आगे बढ़ने के लिए डायरी लेखन का नियमित अभ्यास भी शुरू किया जा सकता है लेकिन यह कार्य मात्र घटनाओं या दिनचर्या के आलेखन तक सीमित न हो । इसमें संवेदना एवं रचनात्मकता का पुट हो । बड़े-बड़े लेखकों के डायरी लेखन की विधा का अध्ययन इस दिशा में मार्गदर्शन कर सकता है ।

1.7 लेखन में सावधानियां

लेखन की विशेषताओं में प्रमुख है-लेखन में गति एवं प्रवाह का होना । यह गुण तभी पैदा होता है जबकि लेखन में स्पष्टता हो । यह स्पष्टता तभी आती है जब लेखक के मन में विचार या विषय वस्तु की स्पष्ट रूपरेखा बन चुकी हो । यदि लेखक स्वयं विषय की बारीकियों और विवरण के बारे में पूरी तरह आश्वस्त नहीं है तो वह अपना संदेश या विचार पाठक को समझा नहीं पाएगा । आलेख में भटकाव होगा. पैनापन और प्रवाह नहीं होगा ।

स्पष्टता के साथ लेखन के विषय या विचार के प्रति लेखक की रुचि और विषय में पैठ होनी चाहिए । ऐसा नहीं होने पर लेखन में रचनात्मकता का अभाव होगा और कोई भी रचना पाठक के दिलोदिमाग पर प्रभाव डालने में सफल नहीं हो सकेगी । आप लेख लिख रहे हैं या कहानी, पाठक की दिलचस्पी बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि कथ्य तार्किक ढंग से आगे बड़े, एक के बाद एक परत खुलती चली जाए और अत में पाठक किसी नतीजे पर पहुंच सके ।

यदि किसी रचना में विषय की संपूर्णता या स्पष्टता नहीं है तो वह अपने लक्ष्य में विफल हो जाती है । व्यक्तिगत कुंठाओं या विचारों को किसी निहित उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखन का आधार नहीं बनाना चाहिए । ऐसा करने से लेखन की उपादेयता समाप्त हो जाती है । निष्पक्षता और पारदर्शिता के गुणों का भी हाल हो जाता है । अत: इस प्रवृत्ति से बचना चाहिए ।

लेखन में किसी भी कथ्य को घुमा-फिराकर कहने के बजाए सीधे और सरल ढंग से अपनी बात कहने का अभ्यास करना चाहिए । घुमा-फिराकर बातों को कहने या लिखने से अस्पष्टता का खतरा बना रहता है । इसके अलावा सृजनात्मक लेखन में बहुत ज्यादा तथ्यों और तर्क के साथ किसी बात को पाठकों के मस्तिष्क पर थोपने की प्रवृत्ति भी उचित नहीं मानी जाती । लेखन में एक रुचिकर प्रवाह और लचीलापन जरूरी है । स्पष्ट, सुगम, सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति ही सृजनात्मक लेखन की पहचान है । क्लिष्ट या कठिन शब्दों के जाल के माध्यम से अपनी लेखन- क्षमता दर्शाने या लच्छेदार भाषा का प्रयोग करने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए ।

प्रचलित शब्दों, मुहावरों या लोकोक्तियों का यथा आवश्यकता प्रयोग किया जाना चाहिए । साथ ही लेखन करते समय सदैव उन पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए जिनके लिए लेखन कार्य किया

जा रहा है । बच्चों के लिए जो शैली और शब्दावली अपनाई जाएगी वह शिक्षित वयस्कों के लिए लिखे गए लेख से अलग होगी । साधारण पाठक के लिए पांडित्यपूर्ण शब्दावली का उपयोग कभी उचित नहीं समझा जाएगा । अपनी विद्वत्ता या लेखन प्रतिभा का चमत्कार दिखाने की कोशिश में अक्सर बात बिगड़ जाती है । सहजता हमेशा रुचिकर होती है ।

लेखन में सुस्पष्टता एवं प्रभाव की सृष्टि करने के लिए सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि पाठक को समझने के लिए कसरत न करनी पड़े । लेखक और पाठक के बीच कहीं कोई दूरी न रहे। वाक्य भी छोटे-छोटे होने चाहिए । लेखन की सफलता इस बात में है कि रचना में सहजता हो, आत्मीयता हो और पाठक के प्रति ईमानदारी एवं दायित्व भावना से जुड़ा एक सरोकार हो ।

1.8 मूल्याकन

लेखन विधा में दक्षता प्राप्त करने के लिए धैर्य और संयम के साथ निरंतर अभ्यास करते रहने के साथ-साथ अपने लेखन का स्वयं मूल्याकन करने की आदत भी डालनी चाहिए । लिखने के बाद थोड़ा जोर से पढ़ें । इससे लेखन की अभिव्यक्ति और विचारों की स्पष्टता में कहीं कमी है तो उसका एहसास हो जायेगा । हो सकता है कि लिखते समय विचारों और भावों को व्यक्त करने की धुन में कहीं कुछ ऐसा लिख दिया गया हो जो अनावश्यक लगे या जिसमें कोई बात दोहराई हुई लगे । ऐसे शब्दों या वाक्यों को काट सकते हैं । अपने लेखन को काट देना कठिन कार्य जरूर है, परंतु जो बात स्वयं को ठीक नहीं लगे, उसे पाठक के सामने परोसना उचित नहीं है । अपने ही लेखन की समालोचना करना आसान कार्य तो नहीं है परन्तु अभ्यास से बहुत कुछ संभव है । एक सप्ताह या कुछ दिन ठहरकर भी अपने लेखन को फिर से पढ़ सकते हैं।

इसके अलावा सृजनात्मक लेखन में रुचि रखने वाले या सक्रिय पाठकों का एक समूह तैयार करके उनसे अपने लेखन पर चर्चा कर सकते हैं । समालोचना से डरना नहीं चाहिए । समालोचना से सोचने और करने के लिए नया मार्ग मिलता है । इस प्रकार स्वयं अपना मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति से गंतव्य तक पहुंचने में सहायता मिल सकती है ।

बोध प्रश्न-3

1. अध्ययनशीलता के लाभ बताइए ।
2. लेखन में अनुभव की उपयोगिता का महत्व समझाएं।
3. लेखक अपनी रचना का मूल्यांकन कैसे कर सकता है।

1.9 सारांश

विचार और अभिव्यक्ति के स्तर पर परिपक्वता और सुस्पष्टता का रास्ता तय कर लिया जाए, शब्द को ब्रह्म के रूप में महत्व दिया जाए और बिना किसी आडंबर या बनावट के सहज रूप से, समर्पित भाव से लेखन विधा के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करके अपने आपको अभिव्यक्त करने का अभ्यास किया जाए तो लेखन विधा में दक्षता प्राप्त करना संभव है।

पाठक के लिए रचना बोझिल न बने, इसका ध्यान रखने के साथ-साथ सृजनात्मकता की यह भी पहचान है कि किसी भी विषय या विचार पर लेखक की बात को समझने के बाद पाठक की कल्पना और सोच के स्तर पर एक हलचल पैदा हो सके । एक प्रभाव की सृष्टि हो और उसके सोचने के लिए भी कहीं कोई गुंजाइश बची रहे ।

1.10 उपयोगी पुस्तकें

1. Hopper, Vincent F. And Cesric Gale: Essentials of Writing, 3rd Ed. (LC-61-8198) Baron Pubs, 1986.
2. Jackson, Donald, the story of Writing (ISBN O-8008-00172-5) Pentalic, Taplinges, 1981.
3. Lyman, Edna, What to tell and how to tell 57 (3rd ed,) rpt. of 1911 ed Gale University Press, 1971.
4. Quigly Pat, Creative Writing. A Handbook of Technques for Effective
5. Writing Vol. II, Potentials Development, 1983 (ISBN 0-932910-40-8)
6. विविधा : प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली ।
7. भारतीय प्रसारण के विविध आयाम : मधुकर गंगाधर, महरौली, नई दिल्ली- 301

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. लेखन के मूल तत्व कौन-कौन से हैं? इनकी संक्षिप्त विवेचना कीजिए ।
2. लेखन-कौशल से आप क्या समझते हैं?
3. लेखन में क्या-क्या सावधानियां रखनी चाहिए?
4. संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए-
   (अ) लेखन की शैली
   (ब) लेखन का ढांचा
   (स) लेखन मे आत्मिक-स्पर्श
   (द) लेखन में कल्पनाशील

इकाई 2 फीचर-लेखन

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 फीचर क्या है

2.3 फीचर की विशेषताएं

- 2.3.1 जिज्ञासा और नौ रत्न
- 2.3.2 दूसरी विधाओं के उपादान
- 2.3.3 संवेदनशीलता

2.4 फीचर के मूल स्वरूप

- 2.4.1 समाचारी फीचर
- 2.4.2 विशिष्ट फीचर

2.5 फीचर लेखन

- 2.5.1 फीचर-लेखक की योग्यताएं
- 2.5.2 फीचर-लेखन की तैयारी
- 2.5.3 भाषा, शैली और आन्तरिक गठन
- 2.5.4 शीर्षक
- 2.5.5 प्रस्तावना या भूमिका
- 2.5.6 विवेचना या विश्लेषण
- 2.5.7 उपसंहार या निष्कर्ष
- 2.5.8 चित्रांकन

2.6 विभिन्न विधाओं से तुलना

- 2.6.1 निबंध, लेख और फीचर
- 2.6.2 समाचार और फीचर
- 2.6.3 कमेंट्री और फीचर
- 2.6.4 कहानी और फीचर
- 2.6.5 संपादकीय और फीचर
- 2.6.6 अन्य विधाएं और फीचर

2.7 फीचर के विषय

- 2.7.1 व्यक्तित्व-फीचर
- 2.7.2 समाचार-फीचर
- 2.7.3 त्यौहार सम्बन्धी फीचर
- 2.7.4 रेडियो-फीचर
- 2.7.5 विज्ञान-फीचर

2.7.6 चित्रात्मक-फीचर
2.7.7 व्यंग्यात्मक-फीचर
2.7.8 यात्रा-फीचर
2.7.9 मानवीय रुचि विषयक फीचर
2.7.10 ऐतिहासिक फीचर
2.8 सारांश
2.9 शब्दावली
2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
2.11 निबंधात्मक प्रश्न

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- फीचर का अर्थ समझ सकेंगे,
- फीचर की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- फीचर-लेखन की प्राथमिक आवश्यकताओं से परिचित हो सकेंगे,
- फीचर के स्वरूप को समझ सकेंगे,
- फीचर के विविध प्रकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे,
- समाचारपत्र के विभिन्न स्तंभों और फीचर का अंतर समझ सकेंगे,
- और आप एक अच्छे फीचर-लेखक बन सकेंगे ।

2.1 प्रस्तावना

समाचार में सभी क्षेत्रों की घटनाओं के समाचार तो होते ही हैं, इसके अलावा संपादकीय, विशेष आलेख, हास्य-व्यंग्य, कार्टून और फीचर भी होते हैं जो समाचार पत्र का चरित्र और व्यक्तित्व करते हैं । विभिन्न अखबारों में बहुत्से समाचार एक जैसे होते हैं । संवाद समिति से आए समाचार का पाठ थोड़े बहुत अंतर के साथ सभी अखबारों में एक-जैसा हो सकता है । संवाद समिति का समाचार न हो तो भी वह कौन-कब-कहीं आदि ककारों या समाचार के व्याकरण में बंधा होता है । लेकिन दूसरे स्तंभों पर यह बात नहीं लागू होती । इनमें फीचरों का स्थान सर्वोपरि है । प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार एलेक्सस मैकनी के अनुसार सामान्य समाचार आधारभूत क्षेत्र कौन, कब, कहीं, क्यों और कैसे (छह ककार) से बाहर अथवा परे हटकर संघात करने वाला लेखन फीचर है । फीचर में मुख्यत: किसी मार्मिक पक्ष का प्रतिपादन होता है । समाचारों में यह पक्ष प्राय: नहीं आ पाता । अब तो हर अखबार कोशिश करता है कि हर दिन कुछ समाचार फीचर शैली में लिखे जाएं । अगर समाचार अखबार का शरीर है तो फीचर उसकी आत्मा । इस पाठ में हम फीचर के सभी पक्षों का विश्लेषण करेंगे ।

2.2 फीचर क्या है?

फीचर (Feature) शब्द लैटिन के फैक्ट्रा (Factura) से बना है । फीचर के अनेक अर्थ हैं। वेब्स्टर के नए शब्दकोश के अनुसार फीचर के कुछ अर्थ हैं -

1. व्यक्ति या वस्तु का स्वरूप
2. चेहरे अथवा चेहरे के अंग विशेष, जैसे आख, नाक, मुंह आदि का स्वरूप
3. समाचारपत्र या पत्रिका में प्रकाशित विशिष्ट रचना
4. पूरी लंबाई का चलचित्र आदि

फीचर को हिन्दी में कुछ विद्वानों ने "रूपक" भी कहा है । यह शब्द काव्यशास्त्र के एक अलंकार, दृश्य-काव्य और नाटक के अर्थ में रूढ़ हो चुका है । दूसरे, फीचर का इस्तेमाल बहुत हो रहा है । रेडियो फीचर, फोटो फीचर आदि धड़ल्ले से चलते हैं इसलिए यह शब्द इसी रूप में व्यवहृत करना समीचीन होगा । पत्रकारिता में फीचर से तात्पर्य समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित विशिष्ट आलेखों से है, जो हमें जानकारी देने के अलावा आनंदित और प्रफुल्लित भी करते हैं । इन लेखों में वर्ण्य विषय का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया जाता है कि उनका वास्तविक अर्थ और स्वरूप साक्षात् व प्रत्यक्ष हो उठता है । इसीलिए ये फीचर कहे जाते हैं ।

परिभाषा

फीचर की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं की जा सकी है । अनेक विद्वानों ने फीचर की विविध दृष्टियों से जो परिभाषाएं की हैं वे फीचर के गुणों का स्पष्टीकरण करती हैं ।

रा.र. खाडिलकर की दृष्टि में, " फीचर वे लेख हैं जो पाठकों को यह बताएं कि कोई घटना क्यों हुई तथा उसका परिणाम क्या होगा । "

डॉन डंकन के अनुसार "फीचर जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण, दैनिक जीवन की करुणा, उसकी नाटकीयता और परिहास पक्ष को ग्रहण करके उसका चित्रण करने की एक विधि है । फीचर एक "सैंडविच" के समान है, जिसके दोनों पार्श्व शक्कर की परत से ढंके हुए केक के टुक्ड़े तथा बीच में मसालेदार मांस तथा आलू भरे रहते हैं ।"

जेम्स बेविस के अनुसार, " फीचर समाचार को नया आयाम देता है, उसका परीक्षण करता है, विश्लेषण करता है तथा उस पर नया प्रकाश डालता है । फीचर का सर्वश्रेष्ठ प्रकार वह है जो सामयिक हो तथा समाचार से जुड़ा हुआ हो ।'

प्रमुख लेखक डॉ. विवेकीराय के अनुसार समाचारात्मक निबंध रूपक है और वह विभिन्न क्षेत्रों की नवीनतम हलचलों का शब्द-चित्र होता है । पी.डी. टंडन के अनुसार फीचर एक प्रकार का गदय गीत है । व्यंग्य लेखक श्रीकृष्ण चन्द्र शर्मा के लिए फीचर किसी विचार (मान्यता), व्यक्ति, घटना आदि का त्रिविध शाब्दिक चित्रण है जिसे स्थायी रूप दे दिया गया हो ।

इन परिभाषाओं में फीचर को विभिन्न दृष्टियों से देखने का प्रयास किया गया है । प्रत्येक परिभाषा उसकी किसी न किसी एक विशेषता पर बल देती है । फीचर को समग्र रूप से समझने के लिए कोई एक परिभाषा पर्याप्त नहीं है । फिर भी कहा जा सकता है कि "फीचर" वस्तुत: प्रवृत्तियों और भावनाओं का सरस, मधुर और अनुभूतिपूर्ण वर्णन है । फीचर लेखक गौण है, वह मात्र एक माध्यम है जो फीचर द्वारा पाठकों की जिज्ञासा, उत्सुकता और उत्कंठा को शांत करता हुआ समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का आकलन करता है । इस प्रकार फीचर में सामयिक तथ्यों का यथेष्ट समावेश तो होता ही है लेकिन अतीत की घटनाओं तथा भविष्य की सम्भावनाओं से भी वह जुड़ा रहता है । उसमें समय की धड़कनें गूंजती हैं।

2.3 फीचर की विशेषताएं

फीचर स्थिति का विहंगावलोकन ही नहीं करता, वह प्रश्नों का उत्तर भी देता है और अज्ञात का ज्ञान भी कराता है । फीचर मानो किसी घटना की दूरबीन से जांच करता है । अच्छे फीचर के गुणों की जब हम बात करते हैं, तो उसके मूल चार आधारों पर हमारा ध्यान जाना आवश्यक है । ये हैं -जिज्ञासा, सत्यता, योग्यता और विश्वास ।

2.3.1 जिज्ञासा और नौ रत्न

वह फीचर निःसार है, जो प्रथम वाक्य से ही पाठक के मन में उत्तरोत्तर जिज्ञासा उत्पन्न न कर सके । फीचर जानकारी की प्यास पैदा करे और उसे बुझाता भी रहे । फीचर सत्य पर आधारित हो । उसमें ऐसी कोई कल्पना भी न की जाए, जो किसी आधार पर टिकी न हो, कालिदास के ग्रंथों के टीकाकार मल्लिनाथ का कहना है -लेखक को यह सदैव याद रखना चाहिए- "नामूलं लिख्यते किंचित", अर्थात् जिस बात का आधार नहीं हो उसे लिखना नहीं चाहिए । योग्यता, लेखक के स्वाध्याय, तथ्यों के प्रेषण और शैली के हृदयग्राही स्वरूप में समाहित है । विश्वास लेखक और पाक दोनों के लिए जरूरी है । आत्म-विश्वास के साथ और विश्वास की शैली में लिखा गया फीचर पाक में भी विश्वास उत्पन्न करेगा । फीचर पढ़कर यदि पाठक को लगा कि बात जंची नहीं, तो फीचर का उद्देश्य ही पूरा नहीं होता। पाठक को मिला संतोष, लेखक द्वारा उत्पन्न विश्वास का ही रूपांतर है । अतः पाठक को संतुष्ट करना परम आवश्यक है । बहुधा लेखक कृति के प्रति अपने आपको संतुष्ट मानकर उसकी श्रेष्ठता आंक लेते हैं । विश्वास का गुण दूसरे की तुला पर तुलता है, अपने पर नहीं ।

फीचर-लेखक जिन बातों से अपने आलेख को अधिक आकर्षक बना देता है, उनमें से चुने हुए "नौ रत्न" इस प्रकार हैं-

1. मोहकता
2. सामान्य तथ्यों का आकर्षक रूप
3. सीमित न हो
4. तर्कसंगत दृष्टिकोण
5. गतिशील शैली
6. विचित्रता
7. व्यापकताभाव और प्रभाव का दायरा-
8. व्यक्तियों की विशेष जानकारी
9. तथ्य और उसके प्रभाव के महत्व पर जोर,
10. ज्ञान और भावना की शक्ति का विकास

2.3.2 दूसरी विधाओं के उपादान

टाइम्स ऑफ इण्डिया (दिल्ली) के भूतपूर्व समाचार संपादक श्री विश्वंभरनाथ कुमार के अनुसार भावना और आलोचना फीचर के आवश्यक अंग हैं । फीचर में भावना की व्याख्या की जाती है । काशी पत्रकार संघ की विशेष अनियतकालिक स्मारिका "पत्रकार" (1972) के पूर्वी उत्तरप्रदेश अंक में "हिन्दी में फीचर लेखन" पर डॉ. विवेकीराय का लेख दृष्टव्य है । डॉ. विवेकीराय का कहना है कि फीचर आधुनिकता का अनिवार्य आग्रह है । जिन निबंधेतर विधाओं के साथ जुड़कर विविध रूप में उसकी रचना होती है, उसकी तालिका निम्नलिखित है-

(क) पर्सनल ऐसे (ललित निबंध)
(घ) फैंटेसी (स्वैर-विधा)

(ख) स्केच (रेखाचित्र) (ड़) शार्ट स्टोरी (लघु कथा)

(ग) रिपोर्ताज (विवरणिका) (च) पत्र, डायरी और वार्ता आदि

इस प्रकार डॉ. विवेकीराय के मतानुसार फीचर सब कुछ है और सब में उसकी व्याप्ति है । यदि हम फीचर को इतना अधिक व्यापक कर देंगे, तब तो उसका अपनापन तथा उस विधा की विशेषता क्या होगी, उसका बोध कराना कठिन हो जाएगा । हम फीचर को यदि उसकी सीमाओं में देंखे ,तो अधिक उपयुक्त होगा । फीचर को खिचड़ी बनाने से उसका महत्व कहीं का न रहेगा और न उसकी कसौटी भी तैयार हो सकेगी । एक अन्य दृष्टिकोण वरिष्ठ पत्रकार पी.डी. टंडन का है । फीचर के विषय में टंडनजी के जो विचार 1952-53 में थे, वही 1976 में हैं । उनकी मान्यता है कि फीचर एक प्रकार का गद्यगीत है । फीचर हमारा मनोरंजन करता है । फीचर मुख्य रूप से विवेक और आनंद के लिए लिखा जाता है । अवश्य ही तीस वर्ष पहले फीचर को उसी कसौटी पर परखा जाता था, जिसका संकेत टंडनजी ने अपने लेखों में किया है । परन्तु फीचर की परख के नियम अब बहुत बदल गये हैं । अब फीचर केवल मनोरंजन और विनोद का साधन नहीं है । फीचर को जिस रस में सरोबार करना हो, किया जा सकता है । अब फीचर को गद्यगीत मानना उसके महत्व को कम करना है।

संक्षेप में हम यहां इतना ही कहना चाहते हैं कि फीचर आधुनिक पत्रकारिता के लेखन की वह विधा है जो मनोरंजक ढंग से समाचार की वर्तमान भूमि पर खड़ी होकर अतीत पर दृष्टि डालती हुई भविष्य की ओर इंगित करने में सक्षम है । फीचर में लेखक का 'व्यक्तित्व सामने नहीं आता । उसका लेखक तो पत्रकार की तरह पर्दे के पीछे रहकर पाठक के लाभार्थ घटनाओं और व्यक्तियों का वर्तमान, भूत और भविष्य के परिवेश में मूल्यांकन करना है । फीचर न रेखाचित्र है, न रूपक और न गद्यगीत, फीचर फीचर है । फीचर है किसी समाचार के व्यापक प्रभाव का दर्शन और मूल्यांकन।

फीचर में विशेष और अनोखे सत्य का विश्लेषण मिलता है । फीचर पाठक की जिज्ञासा, सहानुभूति, आशंका, विनोद, संत्रास और आश्चर्य का उद्दीपन करता है । पत्रकारिता विषयक अनेक पुस्तकों के लेखक जार्ज फाक्स मोर का विचार है कि फीचर का प्राण संवेदना है ।

2.3.3 संवेदनशीलता

डेनवर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष एलमो स्काट वाटसन की मान्यता है कि फीचर किसी भावना के इर्द-गिर्द चक्कर काटता है । समाचार को ऐसा रूप दिया जाता है कि वह और आकर्षक बने, पाठक का ध्यान खींचे और सामान्य पाठक की भावनाओं को छू जाए । कारण यह है कि पाठक समाचार के महत्व से उतना आंदोलित नहीं होता, जितना मानवीय संवेदना (प्रेम, घृणा आदि) से । किसी अच्छे फीचर को पढने के बाद पाठक को किसी न किसी तरह का संतोष प्राप्त होता, जो मनोरंजन, जानकारी अथवा शिक्षा के रूप में हो सकता है।

"न्यूज राइटिंग" पुस्तक के लेखक जार्ज ए. हग का विचार है कि फीचर में सामान्यत: उसी प्रकार की मानव प्रकृति और वैसी ही परिस्थितियों का विश्लेषण होता है जिनका हम नित्यप्रति अनुभव करते हैं और जो किसी के जीवन में घटती या घट सकती है । उसके अनुसार फीचर यह याद दिलाता है कि हम सब समान अनुभव के भागीदार हैं ।

फीचर के लक्षणों के विषय में "मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म इन इण्डिया" के लेखक डॉ. एस. मेहता का कहना है कि "फीचर में उस तथ्य को उभारा जाता है, जो महत्व का होते हुए भी स्पष्ट नहीं होता और उसका प्रस्तुतीकरण ही फीचर के व्यक्तित्व, उसकी शक्ति और उसके औचित्य का बोध देता है । अध्ययन, अनुसंधान और साक्षात्कारों के बल पर फीचर में तथ्यों का विस्तार किया जाता है । फीचर किसी विषय के जानकार और अज्ञानी पाठक के लिए शिक्षक और पथ-प्रदर्शक का काम करता है।

"संपादन के सिद्धान्त" पुस्तक में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का मत है कि फीचर लेखक अपने आँख, कान, भावों, अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषणों का सहारा लेकर उसे रुचिकर, आकर्षक और हृदया ग्राही बनाता है ।

श्री विश्वनाथ सिंह का कहना है कि फीचर-लेखक पाठक को स्वस्थ तथा गंभीर मनोरंजन देता है । इसका प्रभाव क्षणिक या अस्थाई नहीं होता । यह पाठक के मन तथा विचारों को एक झटका देता है । उसे एक विशेष ढंग से सोचने-विचारने के लिए प्रेरित करता है और तब अपना एक स्वतंत्र विचार बनाने का अवसर भी प्रदान करता है । डॉ. ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श' का कहना है- 'अच्छा रूपक (फीचर) किसी विषय की पार्श्वभूमि में समाचार के पीछे समाचार का विश्लेषण, चर्चा तथा स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है । वह ज्ञात अथवा अल्पज्ञात घटना की समीक्षा कर लेखबद्ध चित्र प्रस्तुत कर पाठक को नवीन तथ्यों से अवगत कराता है । वह अन्वेषण करता है तथा विषय-वस्तु को अनावृत्त कर विश्वसनीय साक्ष्य से अपनी स्थापनाओं को पुष्ट बनाता है । वह घटनाओं के प्रभाव का पूर्वानुमान करता है तथ संभावित परिणामों की ओर ध्यानाकर्षित करता है ।

फीचर के प्रति ऐसा आकर्षण क्यों? समाचार नयी जानकारी देता है । इस नवीनता के कारण सामान्य पाठक उसको पढ़ना चाहता है । फीचर में समाचार और समस्या आदि के रहस्य की विशेष जानकारी के साथ आत्मीयता, भावना और विवेचना के गुणों का समावेश होता है । इन तत्वों के कारण ही पाठक की उससे भावनात्मक संतुष्टि होती है । पाठक की यही संतुष्टि उसके आकर्षण का मूल कारण है । इस संतुष्टि की उपलब्धि फीचर में समाविष्ट उसके अनेक मूल तत्वों के कारण होती।

बोध प्रश्न -1

1. फीचर किसे कहते हैं?
2. फीचर को कौन से नौ तत्व आकर्षक बनाते हैं?
3. फीचर समाचार का सरस, व्यापक संदर्भयुक्त मोहक विस्तार है'। क्या आप इससे सहमत हैं?

2.4 फीचर के मूल स्वरूप

2.4.1 समाचारो फीचर

समाचारयुक्त फीचर में दैनिक समाचार को मनोरंजक ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है । वे अल्पकालिक महत्व के होते हैं । जिन घटनाओं का या तो उसके किसी पक्ष का समाचारिक महत्व नहीं होता, परन्तु जो पाठक को आकर्षक लगने वाली होती हैं, उन्हीं को जल्दी और संक्षेप में मनोरंजक तथा आकर्षक ढंग से लिखकर फीचर का रूप दे दिया जाता है । उदाहरण के तौर पर किसी स्त्री का बच्चा नदी में डूबकर मर गया । यह तो समाचार हुआ । दुखिया स्त्री को सपना आया । उसने नदी

के किनारे अपने पुत्र के कपड़े देखे । उन्हें वहां जाकर पहचाना और इस प्रकार पुत्र के डूबकर मरने की पुष्टि हुई । पुत्र-वियोग, स्वप्न-ज्ञान और सबके साथ जुड़ी हुई मातृत्व की भावना को प्रकाश में ला देने से संक्षिप्त समाचारी फीचर तैयार हो गया ।

तात्कालिक समाचारी फीचर लिखने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना जरूरी है । यह एक ऐसी पेशबंदी है, जिससे फीचर की पकड़ आसान हो जाती है और जिससे लेखन भी सरल हो जाता है-

1. दैनिक घटनाओं और समाचारों में मानवीय पक्ष की खोज ।
2. जीवन के सुखांत और दुखांत पहलुओं पर विचार ।
3. अधिक याद रहने वाली कहानी ही पाक को अधिक छूती है ।
4. करुण फीचर को सरल और संवत रखा जाए ।
5. छिछले हास्य और बाजारू भाषा का प्रयोग न करें ।
6. धर्म, जाति और राष्ट्रीयता पर आक्षेप न हो ।
7. शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान रखा जाए ।
8. घटना के आकर्षक पहलुओं पर ध्यान दिया जाए, लेखक उन्हें अपने मन से न गढ़े ।
9. फीचर में बनावटी तथ्यों को भरने की कोशिश न की जाए । बनावटी तथ्यों से फीचर को औपन्यासिक रूप देना उपयोगी नहीं । तथ्य पवित्र है, नाटकीयता नहीं ।

2.4.2 विशिष्ट फीचर

विशिष्ट फीचर के लिए सामग्री एकत्र की जा सकती है । कुछ सामग्री लेखक के पास है । पुरानी एकत्र सामग्री भी काम में आ सकती है । पुरानी स्मृतियों को ताजा किया जा सकता है और उन्हें पुनः आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है । नियतकालिक विषयों पर लिखे गए फीचर थोड़े हेरफेर के साथ कभी भी काम में आ सकते हैं, उत्सवों, ऋतुओं, पर्यटन-स्थलों, ऐतिहासिक स्थानों, महापुरुषों, चिरस्मरणीय घटनाओं तथा जीवन के शाश्वत प्रश्नों पर लिखे गए फीचर सदैव ताजा रहते हैं । उन्हें सदा पसंद किया जाता है ।

इस प्रकार के तैयार करने के लिए पहले से तैयारी करनी पड़ती है । इन्हें लिखने के लिए सामग्री जुटानी पड़ती है और स्वाध्याय जारी रखा जाता है । नोटबुक में यथास्थान लिखना चालू रहता है । समाचारपत्रों की कतरनें विषयवार एकत्रित करनी पड़ती है । अत: फीचर के लेखक को इन बातों पर विशेष रूप से ध्यान रखना पड़ता है-

1. लेखक को कौन-कौन से विषय रुचिकर हैं, उसका किन-किन विषयों पर अधिकार है और, उन विषयों के बारे में लेखक को अन्य साहित्य जुटा सच्चे की सुविधा है तथा ज्ञानवर्धन का कोई और साधन भी संभव है अथवा नहीं? इन सब बातों पर विचार करने के पश्चात फीचर का विषय निश्चित करना चाहिए ।
2. जो-जो फीचर के विषय हमने सोचे हैं, उनके बारे में हमारा अनुभव कितना है और उस अनुभव को और कितना अधिक बढ़ाया जा सकता है? दूसरों के अनुभवों के आधार पर अच्छा फीचर

नहीं लिखा जा सकता । जब तक हमारे पास कुछ अपने अनुभव नहीं होंगे, तब तक दूसरे व्यक्तियों के अनुभवों के खरे-खोटे होने का पता भी तो नहीं लग सकता।

3. फीचर लेखक में निरीक्षण-शक्ति का होना अति आवश्यक है । निरीक्षण-शक्ति का अर्थ केवल देख सकता ही नहीं, किसी वस्तु को देखकर उसके प्रभाव को हृदयंगम करना भी होता है । निरीक्षण-शक्ति की सहायता से लेखक उन तथ्यों तक पहुंच सक्ता है, जिन तक सामान्य पाठक कभी नहीं पहुँच पाता । निरीक्षणशक्ति के अभाव में फीचर के लेखक में अपनापन नहीं आता । फीचर का न अपना व्यक्तित्व निखरता है और न लेखक का व्यक्तित्व ही बनता है। पैनी निगाह से देखने, उस पर मनन करने तथा अपने निष्कर्षो पर पहुंचने का सतत अभ्यास जरूरी है ।
4. फीचर का मूल आधार समाचार है । समाचार केवल पढ़े ही न जाएं, बल्कि फीचर के उपयुक्त लगने वाले समाचारों की कतरने भी एकत्र होती रहें । समाचारी फीचर के तथ्यों को आधार बनाकर जब लेखक स्वप्न के रहस्य, उनकी सत्यता, उनमें तारतम्य का गठन, दुर्घटनाओं और स्वप्नों का ताल-मेल मनोरंजक ढंग से इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वे हृदय को छू जाएं, तब वह सम्पूर्ण फीचर बन जाता है । इस प्रकार का फीचर तैयार करने में कुछ समय तो लगता ही है । सम्पूर्ण फीचर तुरत-फुरत का लेखन नहीं, वह तो अध्ययन, अध्यवसाय और लेखन-चातुरी का चमत्कार होता है । सम्पूर्ण फीचर सामयिक, स्थानीय, देशव्यापी, सर्वदेशीय, नियतकालिक और शाश्वत हो सकते हैं । विशिष्ट फीचर में लेखक के साहित्यिक तथा वैज्ञानिक तरीकों के साथ-साथ प्रखर वर्णन शैली और नाटकीयता का आश्रय लेकर तथ्य-कथ्य को अधिक विस्तृत, संवेदनशील, आकर्षक तथा मनोरंजक बनाया जाता है । लेखक उसके माध्यम से पाक को शिक्षण भी देता है, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में जबकि समाचारी फीचर में किसी प्रकार अथवा किसी रूप में शिक्षण समाहित नहीं होता ।

2.5 फीचर- लेखन

2.5.1 फीचर-लेखक की योग्यताएं

फीचर-लेखक की कलम में रवानगी होनी चाहिए, जिसके लिए प्रतिभा, परिश्रम और अनुभव की विशेष आवश्यकता है । अच्छे फीचर-लेखक में निम्न विशेषताएं अवश्य होनी चाहिए-

1. फीचर-लेखक का भाषा पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए । यदि भाषा लेखक के इशारों पर थिरकती रहेगी तो फीचर में लालित्य और तरलता का समावेश हो सकेगा ।
2. फीचर-लेखक का ज्ञान बहुआयामी भी होना चाहिए । धर्म, दर्शन, संस्कृति, समाज, साहित्य, इतिहास आदि की समझ फीचर को पूर्ण तथा तर्कसंगत बनाती है ।
3. फीचर को प्रभावकारी तथा मनोरंजक बनाने के लिए आवश्यक है कि फीचर-लेखक के पास कवि-सा लय, समीक्षक-सा प्रौढ़ चिंतन, इतिहासकार-सा इतिहास-बोध, वैज्ञानिक-सी तार्किकता, समाजशास्त्री-सा समाज-बोध तथा युगदृष्टा की भांति भविष्य को परखने की शक्ति हो ।

4. आधुनिक फीचर कला में चित्रकला तथा फोटोग्राफी का विशेष स्थान है । अत: फीचर-लेखक को रेखांकन तथा छायाचित्रों की गहरी पकड़ होनी चाहिए, ताकि अपने फीचर की विषयवस्तु के अनुरूप वह उसमें रेखाचित्रों का समायोजन कर सके ।
5. फीचर-लेखक को परिवेश के प्रति सजग तथा समसामयिक परिस्थितियों के प्रति जागरूक होना चाहिए, ताकि. वह उन विविध विषयों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देख सके, जिन पर रोचक फीचर लिखे जा सकते हों ।
6. फीचर-लेखक को अपनी आंतरिक प्रवृत्ति, ज्ञान और अनुभव पर विश्वास होना चाहिए ।
7. फीचर-लेखक को अपनी आंखों तथा कानों पर विश्वास रखते हुए भावों, अनुभूतियां, एवं निरीक्षण - शक्ति का सहारा लेकर फीचर तैयार करने चाहिए ।

2.5.2 फीचर-लेखन की तैयारी

1. फीचर-लेखक दूसरे लोगों से साक्षात्कार भी करता है और लोगों के अनुभवों की जानकारी प्राप्त कर आलेख तैयार करता है । साक्षात्कार पर आधारित लेख में अनेक तथ्य जीवन के निचोड़ के रूप में मिल जाते हैं । अत: अपने और अन्य लेखकों के साक्षात्कार विषयक लेखों की कतरनें जमा करनी चाहिए । ये फीचर-लेखन में बड़े उपयोगी सिद्ध होती हैं ।
2. सरकारी और विभागीय रिपोर्टो की विस्तृत जानकारी तो समाचारपत्रों में प्रकाशित नहीं हो पाती। अनेक रिपोर्टों में ऐसे तथ्य अप्रकाशित रह जाते हैं, जो बड़े मार्मिक और प्रभावशाली होते हैं।
3. मानसिक आधार पर गहन चिंतन किए बिना स्थूल आधार पर आडंबर और पुस्तकों के अध्ययन पर लगाया गया समय बेकार ही रहता है । इस मानसिक आधार को पुष्ट करने के लिए फीचर लेखक को निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो जाता है।
   (1) फीचर का विषय ऐसा होना चाहिए जो रुचिकर हो, लोकमानस को छूने वाला हो, इसके लिए यह जरूरी है कि विषय समयोचित हो ।
   (2) कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनका दायरा विस्तृत होता है और कुछ का केवल स्थानीय । स्थानीय विषय के फीचर में स्थानीय बातों को प्राथमिकता दी जाती है, उन्हीं को उभार दिया जाता है । स्थानीय विषयों से हटकर पाठकों की रुचि को ध्यान में रख जो फीचर लिखे जाते हैं, उनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है । उनमें संदर्भ भी ऐसे नहीं दिए जाते जो केवल स्थानीय महत्व के हों । ऐसे फीचरों की भाषा में ऐसे मुहावरों का आना भी उचित नहीं, जो केवल आंचलिक कहे जा सकते हैं ।
   (3) किस पत्र-पत्रिका के लिए फीचर लिखा जा रहा है, इसका विचार लेखक के मन में रहना चाहिए । प्रत्येक पत्र-पत्रिका का अपना अलग व्यक्तित्व होता है । उसके अपने पाठक होते हैं । अभ्यास के कारण उन पाठकों की एक प्रकार की रुचि बन जाती है । उनके दिमाग किसी खास सांचे में ढ़ल जाते हैं । अत: यह आवश्यक है कि फीचर-लेखक किसी विशेष पत्र के लिए फीचर लिखते समय उसके पाठकों की वृत्ति, रुचि और पत्र की नीति का भी ध्यान रखे ।

(4) पाठक की रुचि और पत्र की नीति का ध्यान रखते समय लेखक को इस तथ्य पर भी नजर रखनी चाहिए कि फीचर सामान्य पाठक के लिए है, न कि विशेष के लिए । सामान्य बुद्धि के पाठकों की संख्या अधिक होती है और उन्हीं से किसी पत्र की लोकप्रियता आंकी जाता है । सामान्य पाठक ने फीचर पसंद किया, तो समझिए कि फीचर-लेखक की कदर बढ़ने की संभावना है ।

(5) जहां तक फीचर के आकर्षण का प्रश्न है वह बहुमुखी हो न कि अति सीमित । आकर्षण का आधार एकांगी होने से पाठकों की संख्या सीमित होगी और वह उन्हें कम रुचेगा । मानव स्वभाव बहुरंगी है । उसकी प्रकृति एकरूपता से जल्दी ऊब जाती है । उसे विविधता में मजा आता है । इसी रहस्य को ध्यान में रखकर फीचर में आकर्षण की विविधता लाने का प्रयास किया जाता है ।

(6) फीचर का पाक उसमें समाहित सत्यों और अनुभवों का परीक्षण करने को आतुर हो जाता है । अत: फीचर में जो बातें लिखी जाएं, वे पूर्ण रूप से व्यावहारिक होनी चाहिए । वे ऐसी काल्पनिक न हों, जिनका किसी धरातल पर परीक्षण न हो सके । यदि ऐसा हुआ तो पाक का लेखक पर से विश्वास उठ जाएगा और उसकी कृति भविष्य में लोकप्रियता खो देगी ।

2.5.3 भाषा,शैली और आंतरिक गठन

जब हम लिखेंगे तो हमारा लिखने का अपना कोई ढंग होगा । वह ढंग बेढंगा भी हो सकता है और अच्छा भी। लेखन का अच्छा ढंग ही शैली बन जाता है । "लेखन कला" पुस्तक के लेखक आचार्य सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार- "लेखन की अच्छी शैली वही है, जो लोक-प्रयोगों से समन्वित हो, जो अपनी, और अपने देश की जान पड़े, जिसमें शब्दों का प्रयोग शिष्ट और प्रभावोत्पादक, हो, पाठक जिसे भली प्रकार समझ सकें।"

संपादकाचार्य बाबू बालमुकुंद गुप्त ने एक प्रसंग में लिखा है- "लिखने की भाषा भी वही अच्छी समझी जाती है जो बोलचाल की भाषा हो, मनगढ़ंत न हो, उसी को बामुहावरा भाषा कहते हैं । मुहावरे का अर्थ बोलचाल है । भाषा का एक दोष जटिलता भी है । जिस वाक्य में "अर्थात्" की जरूरत पड़ती है, उसको सरल-स्वच्छ भाषा में लिखने वाले कभी पसन्द नहीं करते, एक अन्य स्थान पर गुप्तजी ने विचार प्रकट किया है- "किसी देश की भाषा उस समय तक काम की नहीं होती, जब तक उसमें उस देश की मूल भाषा के शब्द बहुतायत के साथ शामिल नहीं होते'।

भाषा और भाव के उचित संमिश्रण से शैली बनती है । किसी विद्वान की मान्यता है कि भावहीन भाषा से भाव की सृष्टि नही हो सकती । बिना संयत भाषा के अभिप्रेत भाव भी व्यक्त नहीं होता ।

मोटे तौर पर शैली के दो प्रकार हैं-वर्णनात्मक और भावात्मक । एक में लेखन का ढ़ंग वर्णन कर रूप लेता है और दूसरे में भाव की प्रधानता होती है । इन दोनों शैलियों का मिश्रण भी हो सकता है । फीचर-लेखन में मिश्रित शैली का प्रयोग ही अधिक उपयुक्त होता है । हमारे गद्य की भाषा लयात्मक होनी चाहिए । उसमें लय-लालित्य होगा, तब वह आनंददायक होगी । भाषा-शैली को गौण समझना उचित नहीं । पहले तो इस बात का महत्व है कि जो कुछ कहा जा रहा है वह कैसे, किस ढंग से, किस

चातुरी से और वह कैसा चमत्कार उत्पन्न करने वाला है । उसके पश्चात "क्या कहा जा रहा है" के महत्व की गणना होती है।

शैली के आवश्यक गुण हैं -सरलता, स्पष्टता, सजीवता, मर्मस्पर्शिता और प्रभावोत्पादकता । इनके साथ "विनोद" का पुट हो, तो वह सोने में सुहागे का काम करता है । बालकृष्ण भट्ट ने एक स्थान पर लिखा है- "सच पूछो तो हास्य ही लेख की आत्मा है । लेख पढ़कर कुंद की कली के समान दांत न खिल उठें, तो वह लेख ही क्या है ।"

इसके साथ ही यह कहना भी पूरी तरह ठीक नहीं कि व्यक्ति ही शैली है अथवा शैली ही व्यक्ति है । विश्वनाथ प्रसाद ("भाषा, "द्विवेदी स्मृति अंक, अगस्त 1964) की मान्यता है कि शैली के पूर्ण विकास के लिए यह आवश्यक है कि लेखक या कवि अपने विषय में अपने आपको बिलकुल डुबकर, अपने आपको बिल्कुल भूलकर रम जाए । विषय के वर्णन मे आत्मविभोर हुए बिना शैली का निखार कहां? शैलीकार तो अपने व्यक्तित्व का होम करके ही, अपने को बिलकुल खपा करके, वातावरण के स्वरूप अथवा स्वानुभूति कह यथावत् अंकन कर पाता है ।

फीचर लेखन की शैली में व्यक्तित्व का प्रदर्शन नहीं, उसका गोपन अधिक आवश्यक अंग माना जाता है । विषय, प्रसंग, परिस्थिति और प्रकरण के अनुरूप ही फीचर-लेखक शब्दों का चयन और वाक्यों का गठन करता है । यह लचीलापन ही शैली को निखारता है और यही उसमें प्रसाद गुण की वृद्धि करता है।

फीचर-लेखन की शैली के बारे में के. पी. नारायणन् का विचार है- "वह छोटी नदी के प्रवाह-जैसी होनी चाहिए । फीचर के लिए भावात्मक शैली का प्रयोग अधिक उपयुक्त है ।"

फीचर लेखन की प्रभावोत्पादक शैली के लिए संक्षेप मे आवश्यक गुण इस प्रकार हैं-

1. "अरथु अमित अति आखर थोरे" -तुलसीदास
2. प्रसाद गुण, आसानी से समझ में आ जाए
3. साहित्यिक पुट लिए टकसाली तथा ओजपूर्ण भाषा
4. शब्दों तथा वाक्यों के अर्थ गौरव का ज्ञान और उसका शुद्ध प्रयोग
5. कहने का अपनापन जो नवीन, चटकीला, सटीक और मनोरंजक हो
6. मुहावरे, कहावतों और सूक्तियों का सही प्रयोग
7. वाक्यों का गठन सरल हो, परन्तु ढीलापन लिए हुए नहीं
8. वाक्यों के गठन में अनेक रूपता
9. शब्दों, वाक्यों और विचारों की पुनरावृत्ति न हो
10. पैरा न तो बहुत छोटे हों और न अधिक लम्बे ही
11. जहां तक संभव हो पैरा के प्रथम वाक्य में ही महत्वपूर्ण नवीन विचार को प्रथम स्थान मिल जाए
12. प्रत्येक पैरा के गठन में भी विविधता जान पड़े
13. प्रत्येक वाक्य और पैरा में कथन का तारतम्य बना रहे
14. अनावश्यक कुछ न हो, न भाव और न वाक्य

15. विषय के अनुरूप कथन का रूप हो
16. तकनीकी तथा दुरूह वृक्षावली तथा शब्दों का कम से कम प्रयोग किया जाए
17. ग्रामीण शब्दों का प्रयोग न किया जाए तो अच्छा । प्रसंगानुसार उनका कहीं प्रयोग कर भी दिया जाए तो बुरा नहीं
18. भाव और भाषा में उलझन न जान पड़े
19. अनुवादी भाषा का पूर्ण परित्याग
20. भाव और भाषा के संस्कारों की रक्षा का ध्यान
21. शैली परिमार्जन के लिए रचना का बार-बार पतन ।

2.5.4 शीर्षक

शीर्षक का नयापन, उसकी ताजगी और आकर्षण फीचर के सौंदर्य की अभिवृद्धि में विशेष सहायक होता है । शीर्षक लगाना कष्टसाध्य कार्य है । अनेक बार यह देखा गया है कि हम निबंध, फीचर आदि तो लिख लेते हैं, किन्तु सटीक शीर्षक देते समय काफी परेशानी महसूस करते हैं । घंटों तक शीर्षक नहीं सूझता । वस्तुत: शीर्षक थोड़े से शब्दों का समुचय है, जिसमें सम्पूर्ण फीचर का मूल कथ्य या भाव हमारे सामने प्रकट हो जाता है । शीर्षक स्वयं में सम्पूर्ण फीचर की विषयवस्तु को संजोए रखता है । सामासिकता अच्छे शीर्षक का प्रमुख गुण है । आज के इस यांत्रिक एवं गतिशील जीवन में पाठक के पास अधिक समय नहीं हैं । शीर्षक का ताजापन ही उसकी रुचि एवं चेतना को फीचर को पढ़ने पर मजबूर कर सकेगा । शीर्षक का साज-सज्जा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है । पृष्ठ को आकर्षक तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में भी शीर्षक का विशेष योगदान होता है । अत: इस क्षेत्र में फीचर-लेखक को अपने ज्ञान और अनुभव का पूरा उपयोग करना चाहिए । शीर्षक चुनते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें पूर्णता हो । अपूर्ण तथा अस्पष्ट शीर्षक फीचर के प्रभाव को कम कर देते हैं । कुछ लेखक या संपादक उपशीर्षकों का भी प्रयोग करते हैं । उपशीर्षकों से फीचर की विषयवस्तु शीघ्र ही स्पष्ट हो जाती है । अत: सूझबूझ के साथ इनका प्रयोग भी करना चाहिए ।

2.5.5 प्रस्तावना या भूमिका

प्रस्तावना, भूमिका, आमुख या "इंट्रो" फीचर का प्राण है । यह फीचर का मुखारविंद है, चेहरा है । फीचर का सार तत्व या मुख्य तथ्य का उद्‌घाटन इस खंड में प्रस्तुत करने की सामान्य परंपरा है । अच्छा "इंट्रो" ही पाठक को पूरा फीचर पढ़ने के लिए मजबूर करेगा । घटिया या साधारण स्तर का "इंट्रो" अच्छे से अच्छे फीचर का "काल" बन जाता है । "इंट्रो" की नाटकीयता, मनोरंजकता, भावनात्मकता अथवा आलंकारिता अनायास ही फीचर में सजीवता का संचार कर देती है । पाठक की जिज्ञासा-वृत्ति को जागृत करने वाले, प्रथम पंक्ति में ही पाठकों को आकृष्ट कर लेने वाले तथा फीचर के मूल उद्देश्य को स्पष्ट करने वाले इंट्रो ही श्रेष्ठ तथा स्तरीय माने जाते हैं । जिस प्रकार किसी मनुष्य से प्रथम साक्षात्कार के समय उसके मुख-मंडल को देखकर उसके व्यक्तित्व का अनुमान करते हैं और उसकी छवि हम अपने हृदय में अंकित कर लेते हैं, उसी प्रकार आमुख के माध्यम से हम फीचर की आत्मा से साक्षात्कार करते हैं ।

2.5.6 विवेचन या विश्लेषण

आमुख के बाद वस्तु विवेचन या विश्लेषण में फीचर की मूल संवेदना या कथ्य की व्याख्या की जाती है, इसी केंद्रीय भाव को दृष्टिगत करता हुआ तथा विचारों के तानेबाने बुनता हुआ लेखक विभिन्न परिच्छेदों में लययुक्त क्रम से अपनी बात कहता चलता है । भाव या विचारों की विश्रृंखलता फीचर को हल्का व प्रभावहीन कर देती है । अत: लेखक को इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि उसकी भाव या विचार-चेतना मूल कथ्य या विषय पर ही केंद्रित रहे । विषय को अधिक पुष्ट एवं प्रामाणिक बनाने वाले तथ्यों एवं विचारों का ही इस खंड में आंकलन, संकलन व ग्रंथन होना चाहिए । असंबद्ध तथा विषयेतर प्रसंगों के समावेश से फीचर पाठकों की दृष्टि की पकड़ खो देता है । अत: इस बारे में नवोदित फीचर-लेखकों को विशेष जागरूक रहना चाहिए ।

2.5.7 उपसंहार या निष्कर्ष

फीचर का अंतिम भाग उपसंहार या निष्कर्ष कहा जाता है । इस खंड में लेखक किसी निष्कर्ष पर पहुंचता हुआ पाठक की जिज्ञासाओं का समाधान कर देता है या दिशा संकेत देकर बात समाप्त कर देता है । उपसंहार प्रभावोत्पादक होना चाहिए ।

2.5.8 चित्रांकन

फीचर के साथ उसकी विषयवस्तु के अनुरूप नक्शे, चित्र या रेखाचित्र देने से आकर्षण और प्रभावोत्पादकता बढ़ जाती है । अत: फीचर लिखते समय तत्संबंधी कार्टूनों, चित्रों आदि का प्रयोग करना चाहिए । आजकल रेखाचित्रों, चित्रों तथा कार्टूनों का चलन बहुत बढ गया है । अत यह आवश्यक है कि फोटोग्राफी की सामान्य जानकारी लेखक, पत्रकार और संपादक को हो, जिससे कि वह चित्रों का चयन या उनको खिंचवाने की व्यवस्था स्वयं कर सके ।

2.6 विभिन्न विधाओं से तुलना

फीचर और संपादकीय, लेख, निबंध, कहानी आदि में मौलिक अंतर है, हालांकि कुछ विधाओं के तत्व फीचर में भी होते हैं ।

2.6.1 निबंध. लेख और फीचर

निबंध, (अंग्रेजी पर्याय "ऐसे") का अर्थ किसी विषय अथवा विचार से संबंधित सामग्री को बांधना या एकत्र करना है । निबंध मुक्त अथवा स्वच्छंद रचना है । फ्रांसीसी-लेखक माइकेल दमानतेन "ऐसे" या निबंध के जनक माने जाते हैं । वह निबंध के माध्यम से अपने "मैं " को सच, सहज और सामान्य तरीके से व्यक्त करते हैं । उन्हीं का अनुकरण कर निबंध लेखक का “मैं " खुलकर खेलता रहा । बाद में निबंध में "मैं " बहुत कुछ लुप्त हो गया । अब उसमें दुनिया का सब कुछ होता है सिर्फ "मैं " नहीं । लेखक को मनमानी करने की छूट होती है । वह विषय या विचार का बंधन नहीं मानता । निबंध लेखन मनमाने या अनाड़ी ढंग से शब्दों का खिलवाड़ नहीं है । वह गद्य में अभिव्यक्ति की ऐसी सिद्धि और ऐसा कलात्मक संप्रेषण है, जिसमें लेखक अपने जीवनानुभवों और उपलब्धियों को जाने या अनजाने

इस प्रकार रखता है कि पाठक उसी भाव-भूमि पर सचरण करने लगता है । उसमें लेखक का "अपनापन" स्पष्ट झलके । विषय तो व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की बैशाखी मात्र है ।

लेख आधुनिक शब्द है । इसका प्रयोग अंग्रेजी शब्द "आर्टिकल" के पर्याय के रूप में होता है । यह शब्द पत्रकारिता के विकास के साथ जुड़ा हुआ है । लेख में मुख्यत निर्वेयक्तिक ढंग से किसी विषय का विवेचन होता है । निबंध और लेख मे विशेष अंतर नहीं है । निबंध में पांडित्य का रूप अधिक निखरा हुआ और भारी भरकम होता है । लेख बहुत कुछ हल्कापन लिए हुए होता है । निबंध स्थायी साहित्य का अंग बन सकता है और बन जाता है । लेख की दृष्टि सामयिक है । वह तुरत-फुरत वाले साहित्य की कोटि में आता है ।

निबंध, लेख और फीचर की तुलना करें तो पाएंगे कि निबंध और फीचर दोनों में श्रेष्ठ गद्य के दर्शन होते हैं । दोनों स्थायी साहित्य की कोटि में पहुंचने की कोशिश में रहते हैं । दोनों में आधारभूत विषय-चयन कोई सीमा नहीं । निबंध में "मैं" किसी न किसी रूप में झलकता है । फीचर में "मैं" होता ही नहीं और होना भी नहीं चाहिए । निबंध में पांडित्य की झलक अवश्य होती है । फीचर में पांडित्य का लेशमात्र दर्शन नहीं होता ।

लेखक और फीचर पत्रकारिता से अधिक संबद्ध हैं । लेख और फीचर दोनों का ही आधार सामयिक कोटि का होता है । फीचर तथा लेख अच्छे गद्य के नमूने होने चाहिए । दोनों सूचनापरक हैं और इनका अपने-अपने प्रकार से आकर्षक होना जरूरी है । लेख के विषय विस्तृत और गहन होते हैं । लेख एक विषय को छूता हुआ अनेक विषयों को अपने दायरे में समेट लेता है । लेख में विद्वत्ता का पुट होता है । वह शैली और प्रतिपादन करने में अधिक गंभीर होता है, पर निबंध की तुलना में कम, लेख औपचारिक होता है । किसी तथ्य का प्रतिपादन करते समय अपना मत प्रकट करना लेखक का पूर्ण अधिकार ही नहीं है, उससे उसकी अपेक्षा भी की जाती है । फीचर अनौपचारिक ढंग से लिखा जाता है । फीचर-लेखक अपनी राय संक्षिप्त रूप में ही प्रकट करता है । आलोचना करने का उसका तरीका सीधा न होकर अप्रत्यक्ष होता है ।

लेख में तथ्यों, तारीखों और आकड़ों का बाहुल्य हो सक्ते है । लेख की सीमा पर कोई प्रतिबंध नहीं । यदि सीमा है, तो पत्र-पत्रिका के आकार और संपादक की इच्छा के अनुसार ।

फीचर का विषय निश्चित और संकुचित होता है । उसमें अधिक तथ्यों और आकड़ों का दिया जाना जरूरी नहीं । लेख में चित्र आवश्यक नहीं । चित्र और कार्टून फीचर के आवश्यक अंग हैं । अनेक फीचर चित्र-प्रधान होते हैं । फीचर में रंगीनी और नाटकीयता होनी ही चाहिए । फीचर-लेखन की शैली गंभीर न होकर विनोदी होती है । मन पर चोट और उस पर अधिकाधिक प्रभाव डालने का गुण उसमें होना जरूरी है । फीचर का स्वरूप छोटा ही होना चाहिए ।

किसी एक विषय पर लेख के लिए जितनी तैयारी की जरूरत है, उससे कहीं अधिक मसाला फीचर के लिए जुटाना पड़ता है । लेख के कारण, प्रवृत्ति और विचारधारा पर अधिक रोशनी नहीं डाली जाती । फीचर तो अधिकतर घटनाचक्र और लोक-प्रतिक्रिया पर केंद्रित रहता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेख और निबंध मस्तिष्क की उपज है तो फीचर हृदय की । लेख और निबंध मानस-पुत्र हैं । फीचर है हृदयतंत्री की झनकार ।

2.6.2 समाचार और फीचर

समाचार घटना का विवरण है । घटना स्वयं में समाचार नहीं । दूसरी तरफ फीचर का आधार समाचार है । फीचर समाचार नहीं है । विलियम एल. रिवर्स ने "द मारन मीडिया" नामक अपनी पुस्तक में विचार व्यक्त किया है कि फीचर का जाल समाचार से बड़ा होता है । फीचर-लेखक पठनीय अनुभव प्रस्तुत करता है । उसमें सूचना को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना शैली, लालित्य और विनोद को ।

"इंवेस्टीगेटिव रिपोर्टिंग" पुस्तक के लेखक प्रो. करटिस डी. मैकडेगल दोनों मे उद्देश्य का भेद मानते हैं । फीचर समाचार को आच्छादित कर लेता है । खोजी और व्याख्यात्मक समाचारों पर भी फीचर छा जाता है । समाचार पत्रों में भी समाचार की तुलना में फीचर को अधिक महत्व दिया जाता है ।

समाचार तथ्यपरक होता है, फीचर उस समाचार को नया आयाम देता है । उसकी परीक्षा और शल्य-क्रिया भी कर डालता है । दोनों की लेखन-शैली में भेद होता है । समाचार संक्षिप्त और रूखाई लिए है, पर फीचर उसकी तुलना में अधिक रंगीन और सजा- धजा । इन दोनों के प्रस्तुतीकरण में भी भेद है । समाचार को "अन्य पुरुष" के रूप में लिखा जाता है । फीचर को उत्तम, मध्यम अथवा अन्य पुरूष के रूप में लिख सकते हैं । फीचर में तथ्य रंगीन और सजीव होते हैं । चुटीली तथा प्रभावोत्पादक भाषा उसमें पृष्ठभूमि, प्रतिपादन और भावात्मक प्रस्तुतीकरण का आधार होती है । फीचर लेखक अधिक विमर्शक होता है और समाचार लेखक अधिक वर्णनात्मक । फीचर का शाश्वत तत्व समाचार की क्षणभंगुरता को लांघने वाला होता है ।

2.6.3 कमेंट्री और फीचर

कमेंट्री शब्द पत्रकारिता क्षेत्र में बहुत प्रयुक्त होता है । इस शब्द का प्रयोग दूरदर्शन अथवा आकाशवाणी पर दृश्यगत के वर्णन के साथ समीक्षा के रूप में होता है । अंग्रेजी का कमेंट शब्द टीका-टिप्पणी के अर्थ में प्रयुक्त होता है । इस शब्द से कमेंट्री शब्द बना है । उसका अर्थ है "किसी तथ्य का वर्णन करते हुए आलोचना, समीक्षा या टीका करना" । ब्रियन निकल्स का कहना है कि फीचर का बांकपन उसमें निहित भावुकता और टीका में हैं । कमेंट्री में वर्णन और टीका है, पर भावुकता नहीं । लेखन अथवा मौलिक वर्णन में तथ्यपरक आलोचना का थोड़ा बहुत अंश हो, तो पाठक या श्रोता को अच्छा लगता है । कमेंट्री में भावुकता को स्थान देना उचित नहीं । फीचर में तथ्यों की व्याख्या और टीका के साथ भावुकता का विशेष पुट होना आवश्यक है ।

2.6.4 कहानी और फीचर

फीचर तथ्यों पर आधारित है, पर कहानी कल्पना पर 1 फीचर विश्वसनीय है, कहानी नहीं । कहानी-लेखन भी सधी घटनाओं पर आधारित हो सकता है, पर उसे इतना तोड़ा-मरोड़ा और विरूपित कर दिया जाता है कि न वह इतिहास रहती है और फीचर ।

2.6.5 संपादकीय और फीचर

विलियम एल. रिवर्स की मान्यता है कि संपादकीय, समीक्षा तथा अन्य विचार लेखों से फीचर अलग होता है । यह भेद है केवल "राय" की अभिव्यक्ति के प्रकार में । तर्कसंगत निर्णय और वकालत में जो भेद है, वही फीचर और संपादकीय आदि में । फीचर-लेखक तथ्यों को तोलता है, उनके आधार पर वकालत नहीं करता । वह पाक को फुसलाता नहीं, पर उसके ज्ञान में वृद्धि करता है।

संपादकीय से फीचर कहीं मेल खाता है, कहीं नहीं । उनका मेल तो वही तक है, जब वे समाचार के तथ्यों का विश्लेषण करते, विशिष्टता प्रदान करते अथवा उन्हें छिपाते हैं । फीचर संपादकीय से तब भिन्न हो जाता है, जब उसमें तथ्यों का निष्पक्षता से सर्वेक्षण किया जाता है । संपादकीय में लेखक के विचार और मत पर विशेष जोर रहता है । फीचर इसके विपरीत है । उसका लेखक अपने विचारों का धनी तथा अपने मत का दृढ़ता से प्रतिपादक नहीं जान पड़ता है । सब कुछ होते हुए भी उसमें "अपनापन" नहीं होता । संपादकीय "लोकनेता" है, फीचर "जनसेवक।"

2.6.6 अन्य विधाएं और फीचर

फीचर की तुलना कहानी, नाटक, संस्मरण और रिपोर्ताज से कदापि नहीं की जा सकती । हां, यह अवश्य है कि लेखन की इन विधाओं की झलक फीचर में यथाप्रसंग आ सकती है । ऐसा करने से फीचर अधिक रोचक और प्रभावी बन जाता है । पर फीचर में इनका प्रयोग बहुत ही कम मात्रा में और उपयुक्त प्रकरण को अधिक निखारने के साधन रूप में करना चाहिए । जैसे मुख का सौंदर्य ललाट, कपोल अथवा चिबुक के एक-दो तिल बढ़ा देते हैं, वैसे ही इन विधाओं में से एक-दो का संक्षिप्त प्रयोग फीचर की शोभा की वृद्धि कर देता है । मुख पर छाए अधिक तिल जिस प्रकार उसको कुरूप कर देते हैं । उसी तरह फीचर में ऊपर दी गयी विधाओं की अधिक मात्रा उसकी विशिष्टता को समाप्त कर देती है । यदि हम यह कहें कि जैसे मुख और तिलों की तुलना करना हास्यास्पद है, वैसे ही फीचर की कहानी, नाटक, संस्मरण और रिपोर्ताज से किसी तरह की तुलना करने का प्रयास भी ।

बोध प्रश्न -1

1. मार्मिकता और संवेदनशीलता फीचर का प्राण है । इस कथन से क्या आप सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।
2. फीचर लेखन शैली के आवश्यक गुण बताइए ।
3. निबंध और लेख से फीचर की तुलना कीजिए ।

2.7 फीचर के विषय

परिवेश की व्यापकता के कारण फीचर-लेखन के लिए भी विभिन्न विषय चुने जा सकते हैं । मानवीय जीवन के विविध पहलुओं पर फीचर लिखे जा सकते हैं, तथा जनरुचि के अनेक क्षेत्रों को फीचर का विषय बनाया जा सकता है । सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक आदि क्षेत्रों के विभिन्न विषयों पर श्रेष्ठ फीचर लिखे गए हैं । चित्रात्मक तथा व्यंग्यात्मक फीचर आज विशेष लोकप्रियता अर्जित कर रहे हैं । के. पी. नारायणन ने फीचर के तीन प्रमुख भेदों का विवेचन

किया है-व्यक्तित्व फीचर, त्यौहार फीचर तथा चित्रात्मक फीचर । पी. डी. टंडन ने पौराणिक फीचर का भी उल्लेख किया है ।

प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने फीचर के दो प्रमुख भेद किए हैं-समाचार प्रधान और विशिष्ट तथा इन्हीं दो भेदों में समस्त प्रकारों को समाहित किया है । व्यावहारिक दृष्टि से फीचर के अनेकानेक भेद किए जा सकते हैं । कुछ मुख्य भेदों की चर्चा यहां की जा रही है -

2.7.1 व्यक्तित्व फीचर

प्रत्येक युग में ऐसे महान पुरुषों ने जन्म लिया है, जिन्होंने क्षेत्र-विशेष में महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की है । उन पर फीचर लिखने का सामान्य प्रचलन है ।

2.7.2 समाचार फीचर

ऐसे फीचरों का मूल आधार समाचार ही होता है । ये फीचर कथात्मक गठन के कारण लोकप्रिय होते हैं । घटना का पूर्ण विवेचन-विश्लेषण इसके अंतर्गत किया जाता है । समाचार तो अपने आप में सूचनात्मक होता है, किन्तु समाचार फीचर उस समाचार के सन्दर्भ में व्यापक जानकारी, उसके विविध पक्षों एवं प्रवृत्तियों को समाहित करते हुए देता है ।

2.7.3 त्यौहार संबंधी फीचर

हमारे देश की संस्कृति त्यौहार बहुल संस्कृति है । विभिन्न जातियों संप्रदायों के अपने-अपने त्यौहार एवं पर्व हैं, जिनके पीछे एक सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा रही है । होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस आदि पर्वों पर ऐसे फीचर लिखे जाते हैं । इनमे पर्वो की मूल संवेदना एवं उनके पौराणिक संदर्भों को प्रस्तुत करके आधुनिक संदर्भो में उसकी व्याख्या-विश्लेषण करने की प्रवृत्ति रहती है ।

2.7.4 रेडियो-फीचर

रेडियो-फीचर समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले फीचर से सर्वथा भिन्न विधा है । इसकी शैली एवं स्वरूप में भी पर्याप्त भिन्नता है । इस भिन्नता का प्रमुख कारण यह है कि जहां पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फीचर पढ़ने के लिए होते हैं, वहीं रेडियो फीचर प्रसारण के लिए होते हैं । इस कारण इसमें संगीत तथा ध्वनि-पक्ष काफी प्रबल होता है । लारेंस मिलियम ने फीचर को "वस्तु का रेडियो नाटकीय प्रस्तुतीकरण" (रेडियो ड्रैमेटिक प्रेजेंटेशन आफ एक्टिविटी) कहा है । लुई मैकनीस की धारणा है-रेडियो फीचर किसी गतिविधि का नाटकीय प्रस्तुतीकरण है । किन्तु इसमे लेखक की रिपोर्टर या फोटोग्राफर से कुछ और अधिक होना चाहिए, उसे अपनी यथार्थ सामग्री का चयन काफी विवेक से करना चाहिए तथा उसके बाद उसे इस प्रकार नियंत्रित करना चाहिए कि वह एकल नाटकीय प्रभाव के अनुकूल हो सके ।

भारत में ऑल इंडिया रेडियो की रिपोर्ट में फीचर की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है - "फीचर कार्यक्रम सूचनाओं तथा मनोरंजन को प्रस्तुत करने के सभी उपलब्ध साधनों एवं प्रसारण के तरीकों को रुचिकर रूप से प्रस्तुत करने की विधि है ।" हिन्दी साहित्य कोश में "रेडियो फीचर" का इतिहास इस प्रकार दिया गया है- " फेलियस फेल्टन के अनुसार बी.बी.सी. में "फीचर" नाम "डाकुमेंट्री" के लिए

व्यवहृत होता है । आज से लगभग 30 वर्ष पहले बी.बी.सी. में "फीचर" नाम की रचनाएं नहीं होती थी, लेकिन बी.बी.सी. का नाटक विभाग रेडियो टेकनीक के संबंध में नए-नए प्रयोग कर रहा था । उसे विशेष अवसरों के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करना पड़ता था । इन कार्यक्रमों की सूचनाएं "रेडियो हाइलाइट" या विशेष कार्यक्रम शीर्षकों से समाचारपत्रों में दी जाती थी । उसी प्रकार बी.बी.सी. के विशेष कार्यक्रमों की सूचनाएं पत्रों में निकलती थीं । इन्हें लोग "फीचर्ड प्रोग्राम" कहते थे । बोलचाल में "फीचर्ड" के "ड" का लोप हो गया और उसे "फीचर" प्रोग्राम कहने लगे । "

रेडियो फीचर का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है । इसके माध्यम से हम महापुरुषों की जीवनी, क्षेत्र-विशेष की सांस्कृतिक जीवन-झांकी, ऐतिहासिक स्थानों का परिचय आदि पा सकते हैं ।

2.7.6 चित्रात्मक फीचर

चित्रों के माध्यम से अपनी बात कहने की प्रवृत्ति आज पाठकों में काफी लोकप्रिय हो रही है । ऐसे फीचर में चित्र ही अपनी बात कहते हैं, शब्दों की आवश्यकता काफी कम पड़ती है । चित्रों का चयन इस प्रकार से किया जाता है कि जिससे वे स्वत: ही अपनी कथा या मूलकथा को स्पष्ट कर देते हैं । चित्रों को आपस में जोड़ने के लिए तथा कथा का तारतम्य बनाए रखने के लिए कभी- कभी चित्रों के साथ शीर्षक दे दिए जाते हैं । लेकिन यहां चित्र ही प्रधान होते हैं, शीर्षक नहीं ।

2.7.7 व्यंग्यात्मक फीचर

सामाजिक और राजनैतिक जीवन में घटित होने वाली घटनाओं पर व्यंग्य करते हुए सरस और चुटीली भाषा में हास्य का पुट देकर लिखे गए फीचर इस कोटि में आते हैं । इनके पीछे एक विशेष लक्ष्य या उद्देश्य रहता है । ये व्यंग्य मात्र छींटाकशी या चरित्र-हनन का प्रयास न होकर सामाजिक, राजनैतिक जीवन की विषमता, विद्रूपता और असंगति दिखाने के लिए लिखे जाते हैं । इनके मूल में सुधार की भावना रहती है । "ठिठुरता हुआ गणतंत्र" हरिशंकर परसाई का ऐसा ही व्यंग्य-फीचर है ।

2.7.8 यात्रा फीचर

यात्रा फीचर के कई रूप और उद्देश्य होते हैं । सैलानियों को दर्शनीय स्थलों और सुविधाओं की जानकारी देने के लिए लिखे गए फीचरों के मुकाबले मानसरोवर यात्रा के दौरान हुई अनुभूतियों का वर्णन-विश्लेषण अधिक सार्थक और पठनीय होगा । यह लेखक यात्री पर निर्भर करता है कि वह यात्रा के दौरान क्या देखता-सुनता है, उसकी उस पर क्या प्रतिक्रिया होती है और उसे वह व्यापक संदर्भो से कैसे जोड़ता है । यह जुड़ाव ही फीचर को विशिष्ट बनाता है ।

2.7.9 मानवीय रुचि-विषयक फीचर

मानवीय पहलू पर लिखे गये फीचर आज विशेष लोकप्रिय हो रहे हैं । विलियम रिवर्स के अनुसार- "मानवीय रुचि के फीचर वे हैं, जिनसे पाक भावनात्मक रूप से जुड़ा हो और जो पाठक को उत्तेजित या हतोत्साहित करे, क्रोधित या प्रसन्न करे और उसमें सहानुभूति या अरुचि उत्पन्न करें ।"

मानवीय रुचि के अनुकूल लिखे गए फीचर भाव-प्रधान होते हैं, जो कारुणिक, मार्मिक तथा अनुभूतिपूर्ण हो सकते हैं । ये फीचर पाठक की संवेदनाओं को उद्दीप्त करते हैं । वस्तुत: यह क्षेत्र अत्यन्त

व्यापक एवं विस्तृत है तथा अपराध, प्रेम, रोमांस, फैशन, स्वास्थ्य, मानवीय समस्याओं आदि विषयों पर लिखे गये फीचर काफी लोकप्रिय हो सकते हैं ।

2.7.10 ऐतिहासिक फीचर

अतीत की घटनाओं के प्रति मनुष्य के हृदय में स्वाभाविक उत्सुकता रहती है । ऐतिहासिक व्यक्तियों, घटनाओं और स्मारकों आदि पर भावपूर्ण ऐतिहासिक फीचर लिखे जा सकते हैं ।

इन भेदों के अतिरिक्त फीचर के कुछ और भेद किए जा सकते हैं । जैसे राजनैतिक फीचर, क्रीड़ा जगत संबंधी फीचर, पौराणिक फीचर आदि ।

2.8 सारांश

सामान्य समाचार के आधारभूत क्षेत्र यानि कौन क्या, कब, कहाँ, क्यों और कैसे के बाहर अथवा परे हटकर जानकारी देने वाला और मानवीय पल को वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत संवेदनशील रचना को फीचर कह सकते हैं । इसमें तथ्य रंगीन और सजीव होते हैं । भाषा चुटीली और असरदार होती है । फीचर किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है । संदर्भों और प्रवृत्तियों की ओर संकेत करने वाला अनुभवाश्रित यह लेखन मर्मस्पर्शी होता है । पाठक घटनाओं को घटना-प्रधान समाचारों को आसानी से भूल जाता है लेकिन अच्छे फीचरों को नहीं । ये फीचर समाचार-पत्र को जानदार और अधिक पठनीय बनाते हैं ।

2.9 शब्दावली

फीचर (Feature)-रूपक फीचर का शाब्दिक अनुवाद हो सकता है और अनेक लेखक रुपक लिखते भी है, लेकिन रूपक अलंकार और नाटक के अर्थ में रूढ़ हो चुका है । फीचर शब्द चलन में आ गया है । इसलिए फीचर को फीचर ही कहना और लिखना चाहिए ।

इंट्रो (Intro)-समाचारों की तरह फीचर का भी आमुख या इंट्रो होता है ।

उप-शीर्षक (Sub-heading)-समाचारों में उप-शीर्षक देने की परंपरा नहीं है । लेकिन फीचर में बीच-बीच में उप-शीर्षक दिये जा सकते हैं, हालांकि यह अनिवार्य नहीं है ।

फोटो फीचर-फोटो फीचर में फोटो-चित्र प्रमुख होते हैं और शीर्षक या संक्षिप्त आलेख गौण, ये अतिरिक्त जानकारी देने और चित्रों को एक सूत्र में बांधने का काम करते हैं ।

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

फीचर लेखन-प्रेमनाथ चतुर्वेदी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली

रूपक लेखन-डॉ. ब्रजभूषण सिंह आदर्श, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

संपादन कला-के.पी. नारायणन, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,

Feature With Flair - Brin Nichalls, Vikas Publications, New Delhi.

Feature Writing for Newspapers - Demiel R. Williamson.

Writing and Selling Feature Articles- Helen M. Patterson

Mass Communication and Joumalism in India - D. S. Mehta, Allied Publications, New Delhi.

2.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. फीचर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए समझाइए कि निबंध से वह किस रूप मे भिन्न है ?
2. आपकी दृष्टि मे आदर्श फीचर की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं ?
3. फीचर को विषयानुसार किन वर्गो में बांटा जा सकता है ?
4. अपनी रुचि के किसी विषय पर संक्षिप्त फीचर लिखिए ।

इकाई 3 टेलीविजन के लिए फीचर- लेखन

इकाई को रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 टेलिविजन-फीचर-अवधारणा एवं स्वरूप
3.2.1 टेलीविजन-फीचर के उद्देश्य
3.2.2 फीचर के स्रोत
3.3 टेलीविजन-फीचर के तत्व
3.4 ध्वनि एवं छायांकन
3.5 चित्र रूपक
3.6 सारांश
3.7 निबंधात्मक प्रश्न

3.0 उद्देश्य

टेलीविजन के लिए फीचर-लेखन एक महत्वपूर्ण और नई विधा है । समाचारपत्रों और रेडियो के लिए फीचर-लेखन कला से आप परिचित होंगे । टेलीविजन के लिए फीचर लिखना इसलिए सहज नहीं है कि उसे लिखते समय छायांकन एवं ध्वनि पर भी दृष्टि रखनी पड़ती है । साथ ही फीचर का संपादन भी होता है ।

इस पाठ का मूल उद्देश्य आपको टेलीविजन के लिए फीचर कैसे लिखें, यह बताना है । इसके अध्ययन करने के बाद आप टेलीविजन-फीचर लेखन कला में पारंगत हो सकेंगे । उसके स्वरूप और तत्वों से भी परिचित हो सकेंगे ।

3.1 प्रस्तावना

फीचर शब्द का प्रयोग समाचारपत्रों, रेडियो, फिल्म आदि संचार-माध्यमों में अधिकांशत: किया जाता है । दूरदर्शन को यदि इन तीनों का एक संमिलित रूप कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि टेलीविजन में रेडियो की आवाज, फिल्म के कैमरे की दृष्टि और अखबारों जैसे समाचारों को प्रेषित करने का अद्भुत संगम है । इसलिए टेलीविजन के फीचर में इन तीनों विधाओं का विशिष्ट गुण विद्यमान है।

3.2 टेलीविजन-फीचर: अवधारणा एवं स्वरूप

यद्यपि टेलीविजन फीचर की अभी सर्वमान्य अवधारणा नहीं की गई है, फिर भी टेलीविजन-फीचर के अस्तित्व से इंकार नहीं किया जा सकता । वैसे भी टेलीविजन में प्रयोग और विकास की संभावनाएं अनंत हैं । इसलिए इस विकास क्रम में टेलीविजन का एक स्वरूप फीचर का भी है जो हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । निश्चित रूप से भारत में टी.वी. तकनीक के साथ फीचर (Feature) शब्द भी आयातित है । इसलिए फीचर शब्द का सही प्रयोग किन अर्थो में किया जाए, यह जान लेना बहुत जरूरी है । इसके पहले यह जानना जरूरी है कि आखिर फीचर क्या है?

व्यावहारिक जीवन में अक्सर ही किसी सुडौल गठन वाले शरीर को देखते ही हम कह बैठते हैं-इसका फीचर अच्छा है या इसका फीचर शार्प है यानी इसकी तस्वीर अच्छी बन सकती है । फीचर का समाचारपत्रों में भी काफी व्यवहार किया जाता है । फीचर को हम अन्य लेखों से अलग एक विशिष्ट दर्जा दे देते हैं । एक ऐसा निबंध जो शिल्प में निबंध-जैसा न लगे उसे कुछ लोग फीचर का नाम दे देते हैं । और हम अपने रोजमर्रे की जिन्दगी में भी फीचर फिल्म का जिक्र करते रहते हैं । इस फीचर स्थिति का मतलब होता है एक ऐसी कथात्मक फिल्म जो एक निश्चित अवधि या लंबाई की हो और जो हमें आनंदित भी करती हो । यदि हमें आनंदित न करे तो संभव है कि हम उसे देखने भी न जाएं । इसके अलावा फीचर का प्रयोग रेडियो में भी किया जाता है । एक ऐसा कार्यक्रम जो रेडियो रिपोर्ट न होकर फीचर की तरह लगे अर्थात् वह रिपोर्ट जो सूचनाओं के साथ अपनी विशिष्ट शिल्प और शैली के कारण आपको आनंदित करे, वह रेडियो फीचर कहलाने योग्य हो सकता है । संक्षेप में यदि देखा जाए तो फीचर शब्द का प्रयोग अखबार, रेडियो, फिल्म शब्द आदि संचार-माध्यमों में धड़ल्ले से किया जाता है । दूरदर्शन को यदि इन तीनों का एक संमिलित रूप कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी । क्योंकि दूरदर्शन में रेडियो की आवाज, फिल्म के कैमरे की दृष्टि और अखबारों जैसे समाचारों को प्रेषित करने का अद्भुत संगम है । इसलिए टेलीविजन के फीचर में इन तीन विधाओं का विशिष्ट गुण विद्यमान है ।

फीचर शब्द का हिन्दी में यदि अनुवाद करने की कोशिश करें तो इसका सही अर्थ रूपक भी हो सकता है । आकाशवाणी में फीचर का हिन्दी अर्थ रूपक ही कहलाता है । अंग्रेजी में जहां रेडियो फीचर के नाम से जाना जाता है, हिन्दी में हम उसे रेडियो रूपक ही कहते हैं । इस दृष्टि से हम अभिव्यक्ति की उस शैली को फीचर अर्थात् रूपक का नाम दे सकते हैं, जिस के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का बेहद स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया जा सके । चूंकि टेलीविजन अखबार, रेडियो और फिल्म के बाद की विधा है, इसलिए टेलीविजन-फीचर का कोई विशिष्ट स्वरूप अभी तक उभर नहीं सका है । दूसरे इस विधा की सबसे महत्वपूर्ण जरूरत होती है कि वह शब्दों की जगह दृश्यात्मकता से भरपूर हो क्योंकि रेडियो में साफ कहने, अखबार में साफ लिखने और टेलीविजन में साफ दिखाने की जरूरत होती है ।

3.2.1 टेलीविजन-फीचर के उद्देश्य

अब हम देखें कि टेलीविजन-फीचर के उद्देश्य क्या-क्या हो सकते हैं?

1. टेलीविजन-फीचर वास्तविक घटनाओं का रचनात्मक प्रस्तुतीकरण होता है ।
2. टेलीविजन के रूप को प्रस्तुत करने के कई तरीके हैं किन्तु उनमें कल्पना-शक्ति का उपयोग सीमित रूप में ही किया जाता है । यदि इसमें कल्पना का उपयोग अधिक मात्रा में किया गया तो रूपक अपना स्वरूप खो देगा ।
3. इसके प्रमुख तत्व आलेख, ध्वनि, कैमरा, संगीत और संपादन होते हैं ।
4. इसके आलेख के चार स्तर होते हैं । विचार के रूप में जिसे आइडिया कहा जाता है । दूसरे इसका विस्तार देते हैं तो कहानी का रूप हो जाता है । इसे और ज्यादा विस्तार देते हैं तो पटकथा हो जाता है । जब शूटिंग की जाती है तो दृश्यों और कैमरों के हिसाब से विभाजन कर लेते हैं, जिसे कैमरा-आलेख का नाम देते हैं ।

5. रूपकों के आलेख के लिए शोध भी आवश्यक होता है । शोध के आधार पर ही रूपकों में विश्वसनीयता भरी जाती है ।
6. आवश्यकतानुसार इसमें अभिनय आदि की जरूरत भी होती है ।
7. अभिनय के लिए अभिनेता या अभिनेत्रियों की जरूरत भी होती है ।
8. इसकी शूटिंग के लिए उपलब्ध संबंधित स्थलों पर शूटिंग करने की जरूरत होती है या कल्पना से उन स्थलों का निर्माण वास्तविकता लाने के लिए किया जाता है ।
9. यह रूपक रेडियो-फीचर से भिन्न होता है क्योंकि रेडियो में हम सिर्फ आवाजों का उपयोग करते हैं जबकि टेलीविजन-रूपक में बोलता हुआ व्यक्ति भी दिखलाई पड़ता है ।

3.2.2 फीचर के स्रोत

जैसाकि यह तय है कि फीचर (रूपक) का सबसे बड़ा स्त्रोत हमारी धरती है और इस धरती का समाज है । समाज के ही क्षेत्रों में विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति या चाहे कोई भी विषय हो, घटने वाली क्षण-प्रतिक्षण की तमाम छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी घटनाएं रूपक का विषय हो सकती हैं । मुद्रण-कला के विकास के साथ ही इस विधा का जन्म हुआ था किन्तु रेडियो ने अपनी जीवंतता के कारण इसकी महत्ता को और ज्यादा विस्तार प्रदान किया । आगे चलकर फिल्मों के कारण यह विधा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और सशक्त हो गई है । समाचारपत्रों में किसी के उद्धरणों को पढ़कर हम उस व्यक्ति के स्वरूप का सहज एक कल्पनात्मक अनुमान लगा लेते थे वहीं रेडियो से उस व्यक्ति को, उन उद्धरणों को, उसके मुंह से सुनते थे । किन्तु दूरदर्शन में उसी व्यक्ति के दर्शन भी कर लेते हैं । विशेष कर द्वितीय विश्वयुद्ध में इस माध्यम की जरूरत और उसके प्रभावों का ऐतिहासिक योगदान है । इस संदर्भ में मार्शल मैकलुहान का कथन सही प्रतीत होता है कि-"राष्ट्रपति कैनेडी की शवयात्रा ने यह साबित कर दिया है कि दूरदर्शन के पास सामूहिक भागीदारी का चरित्र है, जो पूरी जनसंख्या को एक धार्मिक प्रक्रिया से जोड़ लेता है । जबकि तुलनात्मक दृष्टि से प्रेस, सिनेमा और रेडियो, उपभोक्ता के लिए सिर्फ एक माध्यम के रूप में ही बने रहते हैं ।"

3.3 फीचर के तत्व

इस दृष्टि से देखा जाए तो एक अच्छे टेलीविजन-रूपक (फीचर) के लिए यह जरूरी है कि वह रुचिकर हो । यह रुचिकर तभी हो सकता है जब विषयवस्तु छायांकन, संगीत और संपादन में चुस्ती हो और गतिशीलता हो । श्रेष्ठ छायांकन अपने आप में एक महान् कला हो सकती है और यदि इस छायांकन को वाणी और संगीत का सहयोग मिले तो यह सोने में सुगंध का काम करता है । गरज यह कि रूपकों को दिलचस्प बनाने के लिए इन तत्वों के संतुलित और भरपूर उपयोग से एक नया प्रभाव पैदा किया जा सकता है जो दर्शकों की न केवल दिलचस्पी बनाए रखे बल्कि उसके द्वारा दी गई सूचनाओं या शिक्षा को उसके मन-मस्तिष्क से जोड़ दे । इसके लिए कल्पना तो हो ही लेकिन ऐसा भी न हो कि वह दर्शकों को फूहड़ या अति अविश्वसनीय लगे । इससे रूपक की गुणवत्ता पर असर पड़ता है। उसकी गंभीरता नष्ट होती है ।

अब हम टेलीविजन फीचर के उन महत्वपूर्ण एवं आवश्यक तत्वों पर विचार करेंगे जिन को मिलाकर एक सम्पूर्ण रूपक बनाया जा सकता है । सबसे पहले हम आलेख पर विचार करेंगे । आलेख

किसी भी अच्छे रूपक का वह आधार है जिस पर रूपक की इमारत तैयार की जाती है । वैसे भी यदि हम आलेख को दूरदर्शन से निकाल दें तो किसी भी तरह का कार्यक्रम बनाना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। आलेख ही कार्यक्रमों की रीढ़ है । आलेख अपनी प्रथम अवस्था में एक विचार की तरह होता है । विचार रूपी बीज में ही आलेख का वृक्ष छिपा रहता है । अत: सबसे पहले मन में किसी विचार का आना आवश्यक है । यह विचार धीरे-धीरे कथ्य का रूप धारण कर लेता है । जब हमारे पास कथ्य हो जाता है तो हम उस कथ्य को दर्शकों तक पहुंचाने के लिए तानाबाना बुनने की तैयारी करने लगते हैं ।

कथ्य को दर्शकों तक पहुंचाने के लिए एक कहानी तैयार करनी पड़ती है क्योंकि आलेख चाहे किसी भी तरह का हो सामान्यत: इसमें आदि, मध्य एवं अंत आवश्यक हैं । आदि की अवस्था से कथा का प्रारंभ होता है, मध्य की स्थिति में इसका फैलाव तथा अंत की अवस्था में जिसे हम चरम सीमा (Climax) भी कहते हैं, कथ्य को दर्शकों तक पहुँचा दिया जाता है । रूपकों में यह कथ्य सूचनात्मक शैली में भी दिया जा सकता है ।

इसके बाद कथा विस्तार के लिए हमें स्क्रीन प्ले की जरूरत होती है । जिसे पटकथा भी कहते हैं । दिखाए जाने वाले दृश्यों और संवादों का क्रमानुसार संयोजन ही इस पटकथा का मुख्य उद्देश्य है । पटकथा-लेखन से शूटिंग में हमें काफी सुविधा मिल जाती है । हम इसके आधार पर तय कर लेते हैं कि अमुक स्थल पर कितने दृश्य हैं और उनकी लगातार शूटिंग कर श्रम एव धन को बचाया जा सकता है । अच्छी पटकथा से ही अच्छे रूपांकन की संभावना मानी जाती है । पटकथा से रूपक को एक स्वरूप मिल जाता है ।

आलेख की चौथी स्थिति होती है शूटिंग आलेख । इसे निर्देशक और कैमरामैन मिलकर अपनी सुविधा के अनुसार तैयार करते हैं । उदाहरण के लिए किसी रूपक में उदयपुर के चार स्थलों को दिखाया जाना है तो निश्चित रूप से निर्देशक चाहेगा कि उदयपुर के उन तमाम स्थलों की शूटिंग एक साथ ही कर ली जाए भले ही वे रूपक में क्रमानुसार नहीं दिखलाये गए हो ।

रूपक के अच्छे आलेख के लिए जरूरी है कि भाषा सहज एवं सरल हो । ज्यादा लच्छेदार या मुहावरेदार शब्दों का चयन न किया जाए । द्वि- अर्थी अथवा दुरूह शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। उच्चारण में कठिन या भारी भरकम शब्दों का प्रयोग न हो तो ज्यादा अच्छा है।

आलेख के लिए टेलीविजन से जुड़े हुए लेखकों का सहयोग लेना ज्यादा अच्छा होता है क्योंकि यदि किसी बहुत बड़े साहित्यकार को दूरदर्शी-आलेख लिखने के लिए आमंत्रित किया जाता है तो कोई संभावना नहीं कि वह अच्छा आलेख भी तैयार कर देगा । उसे टेलीविजन के हिसाब से साहित्य की रचना करनी पड़ेगी जो टेलीविजन की तकनीक का जानकार कोई भी व्यक्ति कर सकता है । परामर्श और सहयोग के लिए इनका सहयोग लिया जा सकता है । टेलीविजन के रूपकों के आलेख के लिए शोध की जरूरत भी होती है । क्योंकि किसी भी घटना के बारे में जब तक पूरी और विश्वसनीय जानकारी या आकड़े नहीं हों तो रूपक में दोष आ सकता है । यदि कोई कार्यक्रम रूपक है तो घटनाओं या व्यक्ति की सत्यता की खोज तो होनी ही चाहिए । अनुसंधान और शोध पर आधारित आलेख की गरिमा बढ़ जाती है।

3.4 ध्वनि एवं छायांकन

आलेख के बाद रूपक के निर्माण के अगले चरण में ध्वनि एवं छायांकन का प्रश्न उठता है। फिल्म के माध्यम से रूपक बनाने में 16 एम.एम. के कैमरे तथा ध्वनि रिकार्डिंग के लिए एक अलग

टेप रिकार्डर की जरूरत होती है । ध्वनि का आशय यहां पर रूपक के संवादों तथा उन आवाजों की रिकार्डिंग से है जिसके सहयोग से रूपक को ज्यादा से ज्यादा सजीव बनाया जा सकता है । जैसे रात के दृश्य के लिए झींगुरों की आवाज या पानी की बहती हुई धारा दिखाने के समय पानी की कल्कल की ध्वनि ही इस श्रेणी मे आते हैं । अंग्रेजी में इसका नाम साउंड इफेक्ट है । किन्तु इलेक्ट्रानिक्स कैमरे के द्वारा रूपक बनाने का लाभ यह है कि इसके लिए शूटिंग के समय अलग से साउंड रिकार्डर की जरूरत नहीं होती । खासकर इ.एन.जी. कैमरे और इ.एफ.जी. कैमरे में यह सहूलियत मिलती है कि इसके रिकार्डर में ही छायांकन और ध्वनि-रिकार्डिंग की व्यवस्था एक साथ हो जाती है । कैमरामैन और निर्देशक मिलकर रूपक की स्थितियों के हिसाब से कैमरे का कोण निर्धारित करके शूटिंग करते हैं ।

शूटिंग के बाद फिल्म या वीडियो-संपादक के सहयोग से तमाम दृश्यों को आलेख के अनुसार निरन्तरता के साथ जोड़ा जाता है । दृश्य की अनावश्यक लंबाई, अनावश्यक हिस्सों को काटकर अलग कर दिया जाता है । जिससे रूपक में चुस्ती आ जाती है । संपादन में जितनी चुस्ती रहेगी । रूपक में दर्शकों को बांधकर रखने में उतना ही सामर्थ्य और आकर्षण होगा । कहा भी जाता है कि "अच्छी फिल्में संपादन-टेबल पर ही बनती है ।"

संपादन के साथ ही संगीत रूपक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । दृश्य और संवादों के खालीपन को संगीत से ही भरा जाता है । इसके जुड़ने के साथ ही रूपक की संपूर्णता मानी जा सकती है । संगीत, संवाद और ध्वनि-प्रभाव को मिश्रित करके एक ट्रैक बना लिया जाता है जिसे फिल्म संपादन के समय मैच करते हुए जोड़ दिया जाता है । इससे रूपक में जीवंतता आ जाती है । जैसे किसी जंगल के दृश्य के पीछे विभिन्न प्रकार की चिड़ियों की चहचहाहट और आते-जाते राहगीरों के संवाद को मिलाकर एक अच्छा-सा प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है । निर्माण की इस प्रक्रिया की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद यह जानना जरूरी है कि रूपक के कितने प्रकार हो सकते हैं ।

यह सैद्धान्तिक रूप से देंखे तो विषय की भिन्नताओं के हिसाब से कई प्रकार के रूपक हो सकते हैं । किसी ऐतिहासिक घटना या व्यक्ति को भी रूपक का विषय बनाया जा सकता है । यदि 1857 रूपक का विषय हो सकता है तो रानी लक्ष्मीबाई या तात्या टोपे भी रूपक के विषय हो सकते हैं । इस दृष्टि से रूपक व्यक्ति परक, इतिहास परक, समाचार या मौजूदा घटनाओं पर आधारित हो सकते हैं। सांस्कृतिक संदर्भो से जुड़ी छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी घटनाओं को भी रूपक का विषय बनाया जा सकता है । यात्राओं पर आधारित रूपक भी दूरदर्शन द्वारा बनाए गए हैं । प्रख्यात् फिल्मकार श्याम बेनेगल ने भारतीय रेलों पर यात्रा नाम से धारावाहिक फीचर तैयार किया है । इसके अतिरिक्त मानवीय रुचि विषयक रूपक भी हो सकते हैं । दूरदर्शन हर सप्ताह सुबह की सभाओं में "ए फेस इन दी क्राउड" शीर्षक से इस प्रकार के धारावाहिक प्रस्तुत कर रहा है । किन्तु इन सबसे अलग दूरदर्शन पर 'फोटो फीचर' की अपनी अलग पहचान है । यह टेलीविजन की एक विशेष विधा मानी गई है । इस पर विचार अलग से करना उचित होगा ।

3.5 चित्र- रूपक

स्थिर चित्रों के माध्यम से ध्वनि, संगीत एवं संवादों के सहयोग से टेलीविजन में रूपक बनाने की पद्धति काफी पुरानी है । इसमें निर्माण की उन स्थितियों या प्रक्रियाओं से होकर नहीं गुजरना पड़ता

है । अपेक्षाकृत इस विधा द्वारा बातें कहने में हमें आसानी हो जाती है क्योंकि दृश्यों की शूटिंग के लिए हमें बाहर नहीं जाना पड़ता । बाह्य दृश्यों की शूटिंग की मेहनत से हम बच जाते हैं क्योंकि इन संबंधित दृश्यों का स्थिर छायांकन करके स्टूडियों में ले आते हैं और स्टूडियो में पुनः फिल्म या इलेक्ट्रानिक्स कैमरे से दुबारा छायांकन करते हैं । इसके साथ ही स्थिर चित्रों में कैमरे के मूवमेंट से गति देने की कोशिश करते हैं । वैसे भी देखा जाए तो चित्रों के माध्यम से बात कहने की पुरानी परंपरा हमारे समाज में सभ्यता के विकास के साथ चलती आ रही है । किन्तु वैज्ञानिक सुविधाओं के कारण तरह-तरह के प्रयोग संप्रेषण माध्यमों में भी होते रहे हैं । फोटो-फीचर भी उसी प्रयोग का हिस्सा है । यदि हम फोटो फीचर अर्थात् चित्र-रूपक को 'बायस्कोप' का परिवर्तित रूप मानें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी । सिनेमा की शुरूआत के प्रथम चरण में बायस्कोप मेले या गांवों में दिखाया जाता था । एक लकड़ी के डिब्बे के अन्दर कुछ चित्रों को दिखाने के लिए उस बक्से में छह छेद होते थे जिसमें विशेष प्रकार के शीशे लगे होते थे जो चित्र को स्पष्ट और बड़ा करके दिखलाते थे । चित्रों को दिखाने के साथ ही, दिखाने वाला उन चित्रों के बारे में गा-गा कर या संवादों के माध्यम से बतलाया करता था । समय के साथ चलकर टेलीविजन का चित्र-रूपक आज अपनी अलग और महत्वपूर्ण पहचान बना चुका है । इस प्रकार हमने देखा कि टेलीविजन के फीचर छह प्रकार के हो सकते हैं । इनमें मुख्य निम्नलिखित हैं -

1. ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित जैसे -1857, 1942 इत्यादि ।
2. व्यक्ति-विशेष पर आधारित
3. सांस्कृतिक विषयों पर आधारित
4. यात्रा संबंधी रूपक
5. समाचार रूपक
6. मानव रूचि विषयक
7. स्वास्थ्य, कला, विज्ञान से जुड़े हुए विषयों पर आधारित रूपक
8. फोटो -फीचर या चित्र-रूपक

इसके प्रकारों की जानकारी प्राप्त लेने के बाद हमें इनकी उपयोगिता पर एक नजर डालना ज्यादा उचित होगा । इसके पहले वृत्तचित्र और रूपक के अंतर को भी समझ लेना जरूरी है क्योंकि टेलीविजन की दोनों विधाएं इतनी मिलती-जुलती हैं कि कभी-कभी दोनों में भेद करना मुश्किल हो जाता है । वृत्तचित्र और रूपक निर्माणावस्था से लेकर अंत इतने समरूप हैं कि मोटे तौर पर इन्हें जुड़वां भाई कहा जा सकता है । जिस प्रकार बहुत ही मिलतेजुलते जुड़वां भाइयों को बिना विशेष चिह्न या लक्षण के सही पहचान पाना कठिन है, वैसे ही इन विधाओं को एक दूसरे से अलग करना भी कठिन है । इन दोनों के बीच का अंतर शैलीगत तो है ही इसके साथ ही वृत्तात्मकता मे भी यह थोड़ा-सा भिन्न है । वृत्तचित्र जहा निर्माण के संदर्भ में कल्पना की उतनी उड़ान नहीं भर जितनी दूर तक चित्र-रूपक का विस्तार किया जा सकता है । कहने का अर्थ यह है कि वृत्तचित्र तथ्यों एव विषय की यथार्थता के घेरे को नहीं तोड़ सकता, जबकि रूपक में साहित्य का प्रभाव ज्यादा हो सकता है । रूपक में भावना एवं कल्पना का आधिक्य होता है और वृत्तचित्र में कल्पना यथार्थ या वास्तविकता के घेरे से बाहर नहीं लाई जाती । एक ही विषय पर वृत्त चित्र भी बनाए जा सकते है और रूपक भी किन्तु वृत्तचित्र में तथ्य, आकड़ों आदि की जरूरत होती है वहां रूपक में भाव प्रवणता, माधुर्य और कल्पनाशीलता का

होना अत्यन्त आवश्यक है । यहां पर हम एक मोटी विभाजक रेखा खींचकर दोनों के स्वरूपों को अलग कर देख सकते हैं ।

3.6 सारांश

हम टेलीविजन-रूपक की उपयोगिता पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि यह विधा टेलीविजन पर अभी तक इतनी लोकप्रिय नहीं हो पाई है जितनी स्वीकृति इसे रेडियो रूपक के अप में मिली है फिर भी यह संप्रेषण की छत ही कोमल और आकर्षक विधा है चित्र संगीत संवाद और ध्वनि के सहयोग से किसी भी व्यक्ति, वस्तु, जीव निर्जीव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी जा सकती है । भले ही हम वास्तविक जीवन में बीते क्षणों की मधुरता को वापस नहीं ला सकते किन्तु टेलीविजन के रूपकों के माध्यम से उसके काल्पनिक स्वरूप को तो वापस ला ही सकते हैं । संभव है कि यह विधा कल्पना की खोज ज्यादा ही करती है और इसके साथ ही प्रस्तुतीकरण में रचनात्मकता की जरूरत होने के कारण अभी तक कठिन प्रतीत होती रही है जबकि वृत्त-चित्र के निर्माण में एक फ्रेम के अंदर समेटने की स्वतंत्रता ज्यादा सहज प्रतीत होती है । फिर दूरदर्शन के लि रूपकों के निर्माण पर भी ध्यान देने की जरूरत ज्यादा है एक तो इस माध्यम की जरूरत है दूसरे दर्शकों को कल्पनाशीलता में ही नयापन नजर आता है ।

3.7 निबंधात्मक प्रश्न

1. टेलीविजन के लिए फीचर-लेखन और समाचारपत्रों के लिए फीचर-लेखन में क्या अंतर ?
2. टेलीविजन-फीचर के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?
3. फीचर के प्रमुख स्रोत क्या हैं?
4. टेलीविजन-फीचर के प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए ।
5. चित्र-रूपक से आप क्या समझते हैं?

इकाई 4 टेलीविजन के लेखन

इकाई की रूप रेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 टेलीविजन-लेखन का महत्व

- 4.2.1 समूह लेखन
- 4.2.2 आलेखों का वर्गीकरण
- 4.2.3 पटकथा
- 4.2.4 संवाद
- 4.2.5 शूटिंग-आलेख

4.3 आलेख के प्रकार

- 4.3.1 वृत्त-चित्र

4.4 तकनीक जानकारी

- 4.4.1 स्पष्ट परिपक्वता
- 4.4.2 ध्वनि प्रयोग
- 4.4.3 उत्कर्ष
- 4.4.4 सीन सिक्वेंस
- 4.4.5 शब्द-चयन का स्वरूप

4.5 लेखक, निर्देशक और फिल्म भाषा

- 4.5.1 फिल्म भाषा

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 उपयोगी पुस्तकें

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन कर लेने के बाद आप-

- टेलीविजन कार्यक्रम के मूल तत्वों से परिचित हो जाएंगे ।
- आलेख के विभिन्न सोपानों का महत्व समझने लगेंगे ।
- आलेखों के प्रकारों और उनकी पेचीदगियों के जानकार हो जाएंगे ।
- आलेखन में तकनीकी और कलात्मकता का महत्व जान जाएंगे ।
- दृश्य-माध्यम की दृश्यात्मक भाषा का महत्व बता सकेंगे ।

4.1 प्रस्तावना

टेलीविजन ग्रीक भाषा के शब्द टेली (दूरी) और लैटिन भाषा के विजन (मैं देखता हूं) को मिलाकर बना है । हजारों मील की दूरी पर क्या घटित हो रहा है उसे हम पर्दे पर देख सकते हैं उसके प्रत्यक्षदर्शी हो सकते हैं । अलबत्ता हमें टेलीविजन के पर्दे पर वही दिखाई देता है जो कैमरा दिखाना चाहता है।

घटनाओं और समाचारों के अलावा अनेक प्रकार के कार्यक्रम टेलीविजन पर आते हैं -नाटक धारावाहिक, वृत्त-चित्र, संगीत-कार्यक्रम, फिल्म, भेंटवार्ताएं, प्रश्नोत्तर और पहेलियां आदि । टेलीविजन कैमरा, ट्रांसमीटर और कमरे में रखे टेलीविजन यंत्र की सहायता से संप्रेषित दृश्य या कार्यक्रम स्टूडियो या घटनास्थल से हम तक पहुंचते हैं।

जिन यंत्रों, उपकरणों और उपस्करों की सहायता से कार्यक्रम-संप्रेषण संभव होता है उसे हार्डवेयर कहते हैं । जैसे कैमरा, प्रकाशीय उपस्कर, माइक्रोफोन, कनसोल, स्पेशल एफेक्ट जेनरेटर आदि ।

जो दृश्य, संदेश कार्यक्रम संप्रेषित किए जाते हैं उन्हे साफ्टवेयर की संज्ञा दी जाती है । यह बौद्धिक पक्ष है । उद्देश्यपरक संप्रेषित कार्यक्रमों का सर्जनात्मक पहलू होता है । लेखक, निर्देशक संगीतकार, संपादक आदि के सहयोग से कार्यक्रमों की प्रस्तुति होती है।

दर्शकों के प्रकार और उनकी अभिरुचि के अनुसार कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं । जैसे - मनोरंजन के लिए सामाजिक धारावाहिक, संगीत कार्यक्रम, फिल्मों का प्रसारण, ज्ञानवर्धन के लिए डिस्कवरी चैनल, खेलकूद कार्यक्रमों का प्रसारण आदि।

दृश्य यद्यपि माध्यम होने के बावजूद टेलीविजन में शब्द-संयोजन और लेखन का महत्व कम नहीं है और कुछ नहीं तो कार्यक्रम की अवधारणा, उद्घोषणा, कैमरामैन और निर्देशक के लिए निर्देश ये सब लिपिबद्ध किए ही जाते हैं । वृत्त-चित्र, धारावाहिक, नाटक आदि के लिए आलेख अनिवार्य होते हैं । कथानक, संवाद, स्क्रीन प्ले और शूटिंग स्क्रिप्ट के लिए अलग- अलग व्यक्ति अनुबंधित किए जा सकते हैं । छायांकन और संपादन के दौरान पटकथा में आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहते हैं, इसलिए इस माध्यम में लेखन समूह-लेखन का रूप ग्रहण कर लेता है ।

लेखक को माध्यम की तकनीकी की बारीकियों, भाषागत आवश्यकताओं और विशेषताओं की जानकारी होनी चाहिए ।

4.2 टेलीविजन-लेखन का महत्व

4.2.1 आलेख समूह लेखन

टेलीविजन के कार्यक्रम मुख्यत: चार अलग-अलग तत्वों पर आधारित होते हैं जिसमें सर्वप्रथम है लेखन/ निर्देशन, छायांकन एवं संपादन की प्रक्रिया बाद में आती है । हालांकि इन मुख्य तत्वों के अतिरिक्त संगीत, ध्वनि प्रभाव जैसे अन्य सहायक तत्व हैं किन्तु प्रारंभिक अवस्था में इन्हीं चार तत्वों पर विचार किया जाता है । लेखन और बचे हुए कार्यक्रम या तैयार कार्यक्रम के बीच एक अजीबसा रिश्ता होता है । हालांकि नाटक, उपन्यास या अन्य विधाओं की तरह से टेलीविजन- लेखन में बहुत फर्क होता है, फिर भी लेखन सम्पूर्ण कार्यक्रम की पहली शर्त होती है । अन्य विधाओं में तो आलेख

बदलना संभव नहीं होता किन्तु टेलीविजन में आदि-अन्त तक इसमें परिवर्तन की संभावना बनी रहती है ।

आमतौर पर यदि लेखन ही आलेख घोषणा के लिए दो-चार पंक्तियां भी लिख लेता है तो इस लेखन को ही आलेख कहा जाता है । इस आलेख में कार्यक्रम निर्माण के अंत तक परिवर्तन होने की संभावना बनी रहती है । इसलिए टेलीविजन के लेखन को सामूहिक लेखन माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि लेखक से लेकर निर्देशक, छायाकार एवं संपादन के स्तर तक आलेख में काट-छांट की संभावना बनी रहती है । यहां तक कि कलाकार भी कभी-कभी अपनी सुविधा एवं स्थितियों के अनुसार संवादों या आलेख की पंक्तियों को प्रभावशाली बनाने के लिए अपना योगदान दे सकते हैं । इसलिए किसी लेखक को टेलीविजन-लेखन से पहले इस तथ्य को स्वीकार करके ही लेखन के क्षेत्र में आना चाहिए क्योंकि इसमें अन्य विधाओं की तरह हठधर्मिता नहीं चलती क्योंकि यह भी फिल्म की तरह निर्देशक का माध्यम है । इसका पूरा कर्ता-धर्ता निर्देशक ही होता है । निर्देशक ही जहाज का कप्तान है जो पूरे कार्यक्रम के निर्णय को गति देता है या अपनी इच्छा से उसे मोड़ भी सकता है । निर्देशक ही लेखक के शब्दों को छायाकार के सहयोग से रूपायित करता है, अत: उसे आलेख को अपनी कल्पना के हिसाब तोड़-मोड़ भी सकता है ।

यदि निर्देशक और लेखक अलग-अलग न होकर एक ही होते हैं तब यह समस्या नहीं होती। इस प्रकार विवाद की समस्या तब भी नहीं होती जब लेखक और निर्देशक दोनों मिलकर समभाव से कार्यक्रम के निर्माण सें जुड़े रहते हैं लेकिन जब कार्यक्रम का निर्माण हो जाता है तब भले ही इन स्तरों पर आलेख में परिवर्तन किये गए हों किन्तु आलेख के लिए लेखक का ही नाम आता है । टेलीविजन के क्षेत्र में या कमोबेश फिल्म के क्षेत्र मे यह दिलचस्प पहलू है । कभी-कभी मूल लेखक की कहानी ही फिल्म बनते-बनते बदल जाती है फिर भी आलेख के लेखक के रूप में उसी लेखक का नाम आता है जब तक वह लेखक स्वयं को उससे अलग होने की घोषणा या उस कहानी को अस्वीकार न कर दे।

फिल्म या टी.वी. आलेख पर कार्यक्रम बनाना चूंकि सामूहिक कला है इसलिए इसके साथ एक लेखक के साथ अन्य दूसरे लेखक भी जुड़े हो सकते हैं । भारत की मशहूर फिल्म कम्पनी बीआर. फिल्म्स ने तो इसके लिए एक विभाग ही अलग से खोल दिया है जिस में एक लेखक की जगह स्टोरी-डिपार्टमेंट का नाम आता है । इसमें कार्यक्रम से जुड़े कई महत्वपूर्ण लोग शामिल होते हैं । खासकर विदेशी धारावाहिक में तो लेखकों की संख्या बढ़ाने की जरूरत तो होती ही है क्योंकि एक लेखक के लिए लगातार वर्षो तक सप्ताह में पांच दिनों तक चलने वाले धारावाहिकों के लिए लिखना असंभव होता है । इसलिए आलेख की जिम्मेदारी को अलग-अलग खंडों में बांट दिया जाता है ।

4.2.2 आलेखों का वर्गीकरण

सबसे पहले हम यदि आलेख का वर्गीकरण करें तो अनेक खंडों में इसे विभक्त कर सकते हैं। सर्वप्रथम तो किसी भी कार्यक्रमो के निर्माण के लिए किसी आइडिया या मोटे तौर पर कहा जाए तो 'थीम' की जरूरत होती है । 'थीम' किसी आलेख की आत्मा होती है । यदि आलेख का कलेवर विशाल हो और उसमें थीम नहीं हो तो उसका कलेवर उसी प्रकार निष्प्राण होता है जिस प्रकार एक स्थूल शरीर बिना आत्मा के मृत हो जाता है । यह एक विचार है जो किसी आलेख की सफलता या असफलता के लिए जिम्मेदार हो सकता है । इसलिए किसी भी आलेख के लिए सबसे पहले मस्तिष्क मे एक विचार

का पैदा होना जरूरी है । विचार के आने के बाद इसकी दूसरी प्रक्रिया कथा लिखने की शुरू होती है ।

विचार को केंद्रित करके ही कथा या कहानी की रचना प्रारंभ होती है । पूरी कहानी उसी विचार को प्रतिपादित करने के लिए लिखी या गढ़ी जाती है । इसके लिए चरित्र गढ़े जाते हैं । इसके विकास के लिए भी इसी विचार को ध्यान में रखा जाता है जिसमें एक प्रारंभ, मध्य और उत्कर्ष होता है । कथा की प्रारंभिक अवस्था में विचार एक बिन्दु की तरह होता है । मध्य तक उस बिन्दु का विस्तार हो जाता है और उत्कर्ष तक आते-आते उस विचार के प्रतिपादन के साथ कहानी खत्म हो जाती है । किन्तु दृश्य-माध्यमों में फिल्म या टी.वी या यह कहें कि इलैक्ट्रानिक माध्यमों के दृश्य प्रधान विधा के लिए कहानी का यह स्वरूप भी तीन अन्य भागों में विभक्त हो जाता है पटकथा, संवाद, शूटिंग आलेख।

4.2.3 पटकथा

सबसे पहले हम पटकथा के बारे में बात करें जिसे अंग्रेजी में स्क्रीन प्ले कहा जाता है । जब तक कहानी साहित्य की विधा में होती है तो पटकथा की जरूरत नहीं होती है क्योंकि वह सिर्फ पढ़ने के लिए होती है, किन्तु जैसे ही इस कहानी को परदे पर लाने की कोशिश की जाती है तब इस कहानी में दृश्यात्मक तत्वों को वास्तविक रूप से दिखाने के लिए पटकथा की जरूरत हो जाती है । छोटे से उदाहरण में यदि समझने की कोशिश की जाए तो इस प्रकार लिखा जा सकता है-

कहानी का अंश है- 'रधिया भागने लगी । सामने एक बहुत पुराना मकान दिखलाई पड़ा । उसमे वह छिप गयी । वह हांफ रही थी । आखों में मौत की छाया स्पष्ट नजर आ रही थी । अब यदि इस की पटकथा तैयार करनी पड़े तो मुख्य रूप से सबसे पहले मैदान का दृश्य आएगा जिसमें रधिया भाग रही है । दूसरा दृश्य एक पुराने महल का होगा जिस में रधिया छिपती है । तीसरा दृश्य उसकी आखों का क्लोजअप होगा, जिसमें डरी हुई भावनाओं की अभिव्यक्ति आखों से प्रकट होगी । पटकथा में ऐसे ही विस्तार से सैट तथा कलाकार के अभिनय पक्ष को विस्तार से लिखा जाता है जो अन्य विधाओं के आलेख से भिन्न होता है, क्योंकि पटकथा को लिखते समय कैमरे की जरूरत को भी ध्यान में रखना पड़ता है । कैमरे को क्या-क्या तस्वीरें लेनी है प्रथम स्तर पर पटकथा में तय किया जाता है ।

4.2.4 संवाद

पटकथा के बाद की स्थिति संवाद की होती है । रधिया इन स्थितियों में यदि बोलना चाहे तो क्या करेगी? चिल्लाएगी? किसी से मदद मांगेगी या भगवान से प्रार्थना करेगी? इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए संवाद लिखा जाता है । यहां दिलचस्प तथ्य यह है कि कहानी पटकथा और संवाद लिखने के लिए एक आदमी का होना कोई जरूरी नहीं । यदि विचार किसी निर्माता के दिमाग मे आता है तो वह किसी भी कहानी लेखक से इस पर आधारित कहानी लिखने का आग्रह कर सकता है । यदि कहानी लिखी गई है तो वह किसी दूसरे पटकथा लेखक को इसके लिए अनुबंधित कर सकता है । ठीक इसी प्रकार यदि वह चाहे तो अच्छे संवादों के लिए पटकथा के अनुसार अनुभवी संवाद लेखक से सम्पर्क करके अनुबंधित कर सकता है । संवाद लेखक के लिए भी कोइ जरूरी नहीं है कि वह एक ही हो । 'मुगले आजम' फिल्म में उर्दू के पांच मशहूर लेखकों को संवाद लिखने के लिए अनुबंधित किया गया था । जिस प्रकार भारतीय फिल्मों में संगीतकारों की जोड़ी को संगीत निर्देशन के लिए अनुबंधित करने

की परंपरा चल पड़ी उसी प्रकार सलीम-जावेद या मिर्जा ब्रदर्स ने भी सामूहिक रूप से कथा, पटकथा एवं संवाद लिखने की नई शुरूआत की थी ।

4.2.5 शूटिंग आलेख

आलेख की अंतिम परिणति शूटिंग आलेख में होती हैं जब निर्देशक कैमरा के विभिन्न कोणों के हिसाब से आलेख तैयार करता है और पूरी पटकथा की उसी तरह से शूटिंग करता है । यदि ऊपर के उदाहरण को याद करें तो पटकथा के बाद शूटिंग आलेख में तय किया जायेगा कि रधिया जब दौड़ेगी तो उस समय कैमरे की स्थिति क्या होगी? कैमरा एक तो लांग शॉट पर रधिया को भागते हुए दिखला सकता है । इसको और गतिमान बनाये रखने के लिए बीच में दौड़ती हुई रधिया के पैरों का क्लोज-अप और फिर दौड़ते हुए चेहरे के क्लोज-अप को भी दिखाया जा सकता है । यदि रधिया दौड़कर खंडहर में चली जाती है तो प्रभाव की दृष्टि से उतना अच्छा नहीं होगा जितना कि रधिया के भागते हुए पैरों एवं चेहरे के क्लोज-अप दिखने के बाद पड़ सकता है ।

इस तरह हम देखते हैं कि मूल रूप से आलेख के पांच स्तर होते हैं । विचार से लेकर शूटिंग तक कथा, पटकथा, संवाद और शूटिंग आलेख जैसी पांच स्थितियां होती है ।

बोध प्रश्न-1

1. आलेख का स्वरूप अंत तक क्यों बदलता रहता है?
2. स्क्रीन प्ले से क्या तात्पर्य है?
3. आलेख के पांच स्तरों के नाम बताइए ।

4.3 आलेख के प्रकार

कार्यक्रमों के हिसाब से आलेख के कई प्रकार होते हैं । उद्घोषणा, कंपीयरिंग, नाटक, वृत्तचित्र जैसे अलग-अलग कार्यक्रमों के लिए अलग-अलग प्रकार के आलेख होते हैं । चाहे उद्घोषणा के लिए दस पंक्तियां लिखी गई हों या दस पेज का नाटक लिखा गया हो, दोनों स्थितियों में उन्हें आलेख ही कहा जाएगा । इसलिए यहां मूल तथ्य यह है कि बिना आलेख के किसी कार्यक्रम की कल्पना नही की जा सकती । किन्तु यह जितना सैद्धांतिक रूप से सच है उतना व्यावहारिक रूप से सच नहीं है, क्योंकि आलेख को कई कार्यक्रमों में जरा भी महत्व नहीं दिया जाता, हालांकि समाचारों का वाचन भी आलेख के अनुसार होता है । आलेख का ज्यादा प्रचलन नहीं होने के कारण सिर्फ महत्वपूर्ण और बड़े-बड़े कार्यक्रमों में ही आलेख की मांग की जाती है । आज दूरदर्शन में इतने कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं किन्तु आलेख का महत्व भी सिर्फ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के लिए है ।

4.3.1 वृत्तचित्र

वृत्तचित्र के लिए भी आलेख उतना ही जरूरी है शरीर के लिए जितनी आत्मा । चूंकि वृत्तचित्र में अनेक घटनाओं की एक श्रृंखला होती है जिसे आलेख के द्वारा ही एक सूत्र में बांधा जा सकता है । इसलिए कई विद्वानों का मत है कि एक अच्छे आलेख में ही एक बेहतर फिल्म की संभावना बनी रहती है । यदि अच्छा आलेख नहीं हो तो निर्देशक, छायाकार, संपादक और अच्छा अभिनेताओं के होते हुए भी कार्यक्रम प्रभाव नहीं डाल सकते । उदाहरण के लिए समीक्षकों का मानना है कि आज मुंबई फिल्म उद्योग में फिल्म तकनीक ने काफी प्रगति कर ली है, किन्तु बेहतर आलेख के अभाव में बड़ी-बड़ी

फिल्में भी बाकर ऑफिस पर दम तोड़ रही है । आलेख के बिना फिल्म उद्योग में मंदी का दौर आ गया है । कमोबेश टी.वी. के लिए भी आलेख की ऐसी ही महत्वपूर्ण उपयोगिता है ।

जब वृत्तचित्र के लिए आलेख की रचना तैयार की जाती है तब अन्य तरह के आलेखों से यह भिन्न होती है, क्योंकि उसमें कल्पना और सच का कठिन समन्वय करना जरूरी होता है । इस आलेख में कल्पना से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी प्रवृत्ति, घटना या व्यक्ति से जुड़े तथ्य होते हैं और तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश नहीं किया जा सकता । इसलिए इसके लेखन के लिए शोध एवं विषय से जुड़ी सामग्री की मुख्य भूमिका होती है । इसलिए वृत्तचित्र की कथा, पटकथा, संवाद इत्यादि लिखते समय तथ्यों को ध्यान में रखना जरूरी होता है । कमोबेश उद्घोषणा के साथ भी ऐसी मजबूरी होती है कि उद्घोषक सिर्फ एक नियोजित तरह के कार्यक्रमों की ही चर्चा करता है और स्वयं अपनी ओर से सिवाय विशेषण जोड़ने के और कुछ नहीं करता । किन्तु वृत्तचित्र में इस तरह की छूट आलेख के रचयिता को नहीं मिलती । इतिहास ने अकबर के लिए जिस प्रकार के विशेषण की स्वीकृति दी है लेखक उससे अलग नहीं हो सकता । इसलिए वृत्तचित्र के आलेख को ऐतिहासिक एवं घटनाओं की यथार्थ सीमा के तहत ही लिखना पड़ता है जबकि नाटक या इस प्रकार की शैली के लिए आलेख की ऐतिहासिक प्रतिबद्धता उतनी नहीं होती जब तक कि इस तरह के विशेष विषय लेखन के लिए न लिए जाएं जिसका इतिहास से किसी भी प्रकार का संबंध हो ।

4.4 तकनीकी जानकारी

4.4.1 स्पष्ट परिकल्पना

यह एक लेखक, के लिए जो टी.वी. के लिए लेखन करना चाहते हैं, यह जरूरी है कि विषय की जानकारी के साथ-साथ टी.वी. माध्यम की तकनीक की भी अच्छी तरह से जानकारी हो । क्योंकि मूल रूप से उसी की परिकल्पना (विजन) पर पूरे कार्यक्रम को तैयार किया जाना है । इसलिए उसकी परिकल्पना में स्पष्टता और संप्रेषणीयता जरूरी है । यदि संप्रेषणीयता में किसी प्रकार की गड़बड़ी या अवरोध होता है तो निर्देशक, कैमरामैन एवं संपादक की टेबल तक भ्रम की सी स्थिति बनी रहती है जिसका सीधा प्रभाव कार्यक्रम की गुणवत्ता पर पड़ता है । इसलिए लेखक को लिखते समय माध्यम के तमाम तकनीकी एव कलात्मक पक्ष की संभावना को भी ध्यान में रख लेना उचित होगा । लेख और निर्देशक के बीच संप्रेषणीयता का अभाव पूरे कार्यक्रम को चौपट कर सकता है ।

4.4.2 ध्वनि-प्रभाव

इस संदर्भ में यहां एक पक्ष यह भी विचारणीय है कि लेखक को दृश्य के साथ-साथ ध्वनि के प्रभावों को भी समझने और उसके उपयोग के संकेत को प्रस्तुत करने की योग्यता होनी चाहिए । क्योंकि टी.वी. के कार्यक्रमों को सिर्फ कैमरे के माध्यम से ही प्रस्तुत नहीं किया जा सकता बाछ उसके साथ ध्वनि एवं संगीत के जरूरी उपयोग की जानकारी भी देनी पड़ती है और यह सकते पटकथा के समय लेखक को बताना जरूरी होता है । यदि रधिया भाग रही है और भय के कारण वह बेचैन हो रही है तो लेखक इसका संकेत दे सकता है कि उसके डर के प्रभाव को किसी संगीत रग किसी ध्वनि इफेक्ट से प्रभावी बनाया जा सकता है । क्योंकि असल में कार्यक्रम का सबसे पहला दर्शक लेखक/ मानसिक रूप से स्वयं होता है । इसलिए ध्वनि, संवाद और संगीत के अंतर्संबंधों का उसके लिए समझना जरूरी

है । यही कारण है कि तकनीक की दृष्टि से आलेख लिखना सहज नहीं होता और सुविधानुसार कुछ भी लिखे को आलेख मानकर काम चला लिया जाता है ।

4.4.3 उत्कर्ष

वैसे चाहे वृत्तचित्र का आलेख हो या किसी धारावाहिक का उत्कर्ष (Climax) एक महत्वपूर्ण स्थिति है जिस पर कार्यक्रम का प्रभाव आधारित होता है । टी.वी. कार्यक्रम ही क्यों, यह इतना आवश्यक तत्व है कि नाटक, उपन्यास, नृत्य और कविता किसी भी विधा के लिए उत्कर्ष का तत्व महत्वपूर्ण एवं आवश्यक होता है । किसी समय 'एक राजा था' से लेकर 'अंत में वह खुशी-खुशी साथ रहने लगा' एक ऐसी रेखा है जिसे नजर अंदाज कर देना या किसी लेखक के लिए संभव नहीं है । आलेख एक बिन्दु से शुरू होकर उत्कर्ष के बिन्दु पर समाप्त हो जाता है और जिसके आगे कहने-सुनने एवं समझने के लिए कुछ भी बचा नहीं रहता । जिस आलेख के अंत मे दर्शकों की जिज्ञासा ऐसा क्यों हुआ या कैसे हुआ बनी रहती है वह उतना प्रभावी नहीं होता । अत: उसका संदेश स्पष्ट और भ्रमरहित होना चाहिए । इसके लिए एक बेहतर उत्कर्ष की रचना जरूरी हो जाती है । चूंकि आलेख की कुंजी उत्कर्ष में होती है इसलिए इस यात्रा में लेखक और निर्देशक दोनों की गुणवत्ता का परिचय भी मिल जाता है । हालांकि दृश्य-माध्यम में खासकर नई पीढ़ी के निर्देशकों ने उत्कर्ष के बाद भी उत्कर्ष जैसे तत्व को जोड़ने की कोशिश की है किन्तु इसका निर्वाह करना कठिन होता है ।

4.4.4 सीन सिक्वेंस (Scene Sequence.)

आलेख लिखते समय लेखक की खास कर टी.वी. नाटक या फिल्म के लिए सीन एवं सिक्वेंस अर्थात दृश्य एवं अंक का संकेत भी देना होता है । नाटकों के लेखन में इसे अंक एवं दृश्य के रूप में देखा जाता है । उदाहरण के लिए एक अंक में कई दृश्य होते हैं और सभी एक दूसरे से जुड़े होते हैं। उसी प्रकार एक सिक्वेंस में कई दृश्य होते हैं और कई दृश्य मिलकर एक सिक्वेंस पूरा करते हैं । खासकर शूटिंग के संदर्भ में इस प्रकार के विभाजन से कई लाभ होते हैं । समय और श्रम दोनों की बचत तो होती ही है साथ में धन भी ज्यादा व्यय नहीं होता । इसलिए शूटिंग के लिहाज से तमाम दृश्यों को सिक्वेंस के अनुसार रिकार्ड कर लिया जाता है । हालांकि टी.वी. नाटकों के लिए इस प्रकार के विभाजन की जरूरत कम ही होती है क्योंकि आमतौर पर टी.वी. नाटक एक स्टूडियो और लगभग एक समय में रिकार्ड किए जाते हैं । इस प्रकार का विभाजन वृत्तचित्र या फिल्म के निर्माण में ज्यादा लाभ पहुंचाता है।

टी.वी. को क्लोज- अप का माध्यम कहा गया है जिसका तात्पर्य यह है कि कैमरे का मूवमेंट मुख्यतया चेहरे या सब्जेक्ट के क्लोज-अप के इर्द गिर्द ही संचालित होता है । दूसरे शब्दों में लांग-शॉट की ज्यादा जरूरत टी.वी. परदे के लिए नहीं होती । चिल्लाये की चकाचौंध ने टी.वी. के परदे को भी प्रभावित किया, इसलिए अब ने टीवी. के सैट भी भड़कीले बनाए जाने लगे हैं. और परदे पर एक साथ पांच से लेकर सात कलाकार भी इकट्ठे नजर आते हैं । जबकि इसके व्याकरण के अनुसार टीवी. कैमरे के सामने. एक और अधिक से अधिक तीन कलाकार एक साथ दिखाए जा सकते हैं । इसलिए टी.वी. लेखन के लिए इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी हो जाता है कि ज्यादा से ज्यादा कलाकार एक साथ मंच पर कैमरे के सामने नजर नहीं आएं और दूसरा यह कि उनके संवाद क्लोज-अप को ध्यान में रखकर लिखे जाने चाहिए।

4.4.5 शब्द-चयन का स्वरूप

यहां ध्यान देने की जरूरी बातें ये हैं कि टी.वी. अपने आप में एक दृश्य-माध्यम है और कई दृश्य इतने प्रभावशाली होते हैं कि उन्हें अलग से विश्लेषण की जरूरत नहीं होती । उदाहरण के लिए क्रिकेट मैच की कमेंटरी जब आकाशवाणी केंद्रों से रिले की जाती है तब उसका स्वरूप कुछ और होता है । कमेंट्री को क्रिकेट के मैदान में होने वाली तमाम छोटी-बड़ी गतिविधियों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना होता है । वैसी ही कमेंट्री यदि दूरदर्शन पर प्रसारित की जाए तो दर्शकों में चिढ़ और गुस्सा दोनों तरह के भाव उत्पन्न हो सकते हैं । इसलिए दूरदर्शन के जो अनुभवी कमेंटेटर हैं वे बहुत कम ही चिढ़ नपे-तुले शब्दों का प्रयोग करते हैं । शब्दों की जरूरत वहीं महसूस होती है जहां दृश्य का प्रभाव कम हो जाता है । इस भेद को इस उदाहरण से भी समझा जा सकता है ।

दृश्य के एक आदमी के पैर के पास एक गेंहुअन सांप फन उठाए बैठा है जिसके बारे में वह आदमी बिल्कुल अनजान है । यदि रेडियो पर उस आदमी को सावधान करना है तो हमें बताना होगा। "अरे भागो, तुम्हारे बाएं पैर के पास एक गेंहुअन सांप फन काढ़े खड़ा है. काट लेगा । भागो । "किन्तु दूरदर्शन पर इतना ही कहना होगा-"अरे भागो सांप" यहां यह कहने की जरूरत नहीं है कि सांप कैसे और कहां खड़ा है, क्योंकि दर्शक देख रहा होता है । इसलिए संवादों में शब्दों के चयन पर भी सतर्कता बरतनी पड़ती है । हम उन्हीं शब्दों का सहारा लेते हैं जो उस दृश्य को ज्यादा प्रभावकारी बना सके हैं । शब्द से भी कभी-कभी ज्यादा महत्वपूर्ण ध्वनि-प्रभाव लगते हैं । कैमरा की कुशलता और ध्वनि के प्रभाव से दृश्य को ज्यादा ही संप्रेषणीय बनाया जा सकता है । इसलिए आलेख लिखते समय लेखक को ध्वनि और संवाद दोनों के प्रभाव को तौलना पड़ता है । कभी-कभी तो ध्वनि-प्रभाव या संगीत कैमरे के प्रभाव के साथ मिलकर संवादों की जरूरत ही खत्म कर देते हैं । क्लोज-अप में आंसुओ का बहना और करुण संगीत मिलकर संवादों की जरूरत पूरी कर देते हैं । ऐसे में कहने या अलग से संवाद की जरूरत नहीं रह जाती-वह रो रहा है । दुखी है बेचारा ।

बोध प्रश्न-2

1. आलेख के प्रकार बताइए ।
2. वृत्तचित्र के आलेख के लिए शोध क्यों आवश्यक है?
3. ध्वनि-प्रभाव से क्या तात्पर्य है?

4.5 लेखक-निर्देशक और फिल्मी भाषा

'थीम' किसी भी टी.वी. कार्यक्रम का बौद्धिक तत्व होता है जिसे आलेख एवं निर्देशन के सहयोग से दर्शकों तक पहुंचाया जाता है । इसलिए आलेख के लेखक और निर्देशक के बीच जितना सहज एवं स्पष्ट चिंतन का आदान-प्रदान होगा, थीम उसी तीव्रता के साथ दर्शकों तक पहुंचायी जा सकेगी । आलेख और निर्देशक की सोच मिलकर ही एक महान कृति की रचना कर सकते हैं । हालांकि किसी एक थीम को दर्शकों तक पहुंचाने के लिए हर निर्देशक अपनेअपने ढंग से स्वतंत्र है किन्तु लेखक के साथ उसका सहज संप्रेषण इसे महत्वपूर्ण बना सकता है । यदि 'हम लोग' धारावाहिक की सफलता पर एक नजर डालें तो लेखक और निर्देशक के बीच अच्छे तालमेल को ज्यादा बेहतर तरीके से समझ सकते हैं । दूरदर्शन के अन्य धारावाहिकों में गुलजार कृत मिर्जा गालिब की प्रस्तुति को इस माध्यम की कलात्मकता एवं तकनीकी पक्ष की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है । यहां उल्लेखनीय यह है कि इसके लेखक एवं

निर्देशक स्वयं गुलजार हैं और उनके पास दृश्य माध्यमों के लिए बड़ी सशक्त भाषा है । इसलिए जब यह कहा जाता है कि दृश्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए ही संवादों का उपयोग किया जाना चाहिए तो इसे समझने के लिए मिर्जा गालिब धारावाहिक के दृश्यों का स्मरण करना उचित है । इस धारावाहिक में संवाद कैमरे की खूबसूरती को बढ़ाता हुआ सुनाई देता है ।

4.5.1 फिल्मी भाषा

विश्व के महान फिल्मकार व समीक्षक एलेन राव ग्रिलेत का मानना है कि- "कैमरा ही कलाकारों के संवाद के बीच ऐसी चीज पर केंद्रित हो सकता है जो बिल्कुल अलग दिखलाई पड़े खास कर दृश्य सन्ना पर या कमरे की दीवारों पर या गलियों में जहां कलाकार संवाद के दौरान टहलते हुए दिखलाई पड़ रहे हैं । यदि इसकी ऊंचाइयों के अर्थ को समझने की कोशिश कर तो लगेगा कि इस प्रक्रिया से जो दृश्य बनते हैं जिसके शब्द महज साधारण और नितांत विस्मरणीय हैं । खासकर रूप एवं छवि की गतिशीलता की तुलना में जिनका महत्व है और उनका अर्थ भी है । "यहां तात्पर्य यह है कि दृश्य-माध्यमों में केवल उसे ही आलेख नहीं माना जा सकता जो शब्दों में लिखे गए हैं या निर्देश दिए गए हैं बल्कि वैसे रूप या छवि भी फिल्म की भाषा को ज्यादा संप्रेषणीयता बना सकती हैं, जिसे कैमरे ने बड़ी स्वाभाविकता के साथ कैद करने की कोशिश की है । उदाहरण के लिए आलेख में किसी पुल का दृश्य लिखा है किन्तु उस पुल पर चिपकाए पोस्टर या पास लुढ़के कोलतार के डिब्बों का उल्लेख नहीं है । किन्तु जब कैमरा दृश्य की मांग के अनुसार उस पुल के चित्र लेता है तब इस प्रकार की छोटी-मोटी चीजें भी उस पुल के दृश्य में शामिल हो जाती है जिसका विस्तार से वर्णन आलेख में नहीं किया गया है किन्तु ऐसी चीजें उस पुल को एक अलग छवि जरूर प्रदान करती है ।

यहां कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आलेख की विस्तृत रूप से व्याख्या की जाए तब लेखक के विचार से लेकर कैमरे द्वारा खींचे गए चित्रों के संकेतार्थ भी इसके अविभाज्य अंग बन जाते हैं । यही कारण है कि समय के बदलने-के साथ ही आलेख के अर्थ में भी परिवर्तन आया है और जैसा लिखा गया है कि वर्तमान समय में इसे भी एक सामूहिक विधा के रूप में स्वीकृत किया गया है । आज से पूर्व जब आलेख के महत्व को एक किस्म की प्रतिबद्धता के साथ स्वीकारा जाता था तब यह मान लिया जाता था कि पूरी फिल्म आलेख से ही बनी है ।

विश्व कें विख्यात् फिल्मकार स्व. सत्यजीत रे भी आलेख को पूरी प्राथमिकता के साथ स्वीकार करते थे । एक तरह से उनकी फिल्मों के बारे में कहा जाता है कि उनकी फिल्म कागज पर ही आलेख के रूप में तैयार हो जाती थी । सिर्फ कैमरे से उसके विजुअल्स जोड़ने का काम बचा रहता था ।

यह सत्य है कि टी.वी. के कार्यक्रमों में विशेष परिस्थितियों में ही आलेख का इस्तेमाल किया जाता है जबकि आकाशवाणी में थोड़ी बहुत परंपरा अभी भी कहीं-कहीं देखने को मिल जाती है । टी.वी. कार्यक्रम निर्माण, खासकर इलेक्ट्रॉनिक कैमरे के सहयोग से इतना आसान हो गया है कि सामान्य तौर पर इसकी ट्रेनिंग की ज्यादा जरूर महसूस नहीं होती । इसलिए इस माध्यम से कार्यक्रम बनाना जितना आसान हो गया है उतना आलेख तैयार करना भी जबकि आलेख तैयार करना सरल कार्य नहीं है । खासकर नाटकों या फिल्म के आलेख में अभिनेताओं को सबसे कड़ी चुनौति का सामना करना पड़ता है । सुप्रसिद्ध फिल्म चिंतक जोसेफ वान स्टर्नबर्ग लिखते हैं - "अभिनय वेशभूषा बदलकर आलेख के शब्दों को याद करना ही नहीं है बल्कि विचारों का पुनर्निर्माण करना भी है जिसे संवादों और अभिनय के द्वारा किया जा सकता है । यह आसान नहीं है । शब्दों के सबसे अच्छे अर्थ में अभिनेता सिर्फ

दुभाषिया ही नहीं है और न सिर्फ विचारों का संवाहक है जो दूसरों के मस्तिष्क तक ले जाता है बल्कि उसे स्वयं भी एक अच्छे रचनात्मक कलाकार की तरह जीना पड़ता है।"

इस पाठ के आरंभ में लेखक, निर्देशक यानी संवाद और कैमरे की प्रतिबद्धता की बात कही गई थी । अब ऐसी परंपरा देखने को नहीं मिलती । आमतौर पर यह निर्देशक का माध्यम हो गया है क्योंकि आलेख की कल्पना को पूर्णरूप से यथार्थ रूप देना उसी की जिम्मेदारी होती है-फिर भी कई ऐसे निर्देशक हैं जो आलेख को अक्षरश: फिल्माने की कोशिश करते हैं । मुंबई फिल्म संसार में चूंकि लेखकों के महत्व को अपवाद स्वरूप ही सराहा गया है इसलिए इसका प्रभाव टी.वी. की संस्कृति पर भी देखने को मिलता है । प्रारंभ में स्व. कृष्ण चन्दर, सआदत हसन मंटो, राजेन्द्रसिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास, मुखराम शर्मा, सचिन भौमिक जैसे अपवाद स्वरूप लेखक ही हैं जिन्होंने पटकथा लेखक के रूप में अपनी विशिष्टता बनाए रखी । बाद में गुलजार और सलीम जावेद ने इस वर्ग की विशिष्टता में चार चंद लगा दिए । सलीम जावेद ने पटकथा लेखन के महत्व को मुंबई फिल्म उद्योग में एक जरूरी तत्व के रूप में स्वीकारने के लिए मजबूर कर दिया।

प्रस्तुत उदाहरण पटकथा और कैमरे की प्रतिबद्ध रचना है जिसमें काफी ईमानदारी से पटकथा को फिल्माने की कोशिश की गई है । फ्रांस के सुप्रसिद्ध फिल्म लेखक मारग्रिट डुरास की पटकथा को विश्वविख्यात् निदेशक एलेन रेसनेस ने फिल्माया था । इस आलेख को इसलिए असाधारण माना जाता है कि निर्देशक ने इसके मूल स्वरूप पर ही पूरी फिल्म को केंद्रित रखा है । बहुचर्चित फिल्म हिरोशिमा ऑन अमूट के प्रारंभिक आलेख का नमूना इस प्रकार है -

जैसे ही फिल्म शुरू होती है नंगे कंधों वाले दो जोड़े धीरे-धीरे नजर आते है । जैसे ही इन कंधों को हम लोग देखते हैं पता चलता है कि वे धड़ के सर एवं कूल्हे के भाग से कटे हुए हैं- एक दूसरे से लिपटे हुए और जैसे कि इन्हें राख, ओस, बरसात या पसीने में मिलाकर सुखा दिया गया हो (जो भी आसान लगे) । यहां मुख्य बात यह है कि यह ओस या पसीने का चुहचुहाना आणविक मशरूम की तरह लगते हैं जो हिलते है और वाष्प बनकर उड़ जाते हैं । इस दृश्य से ताजा विचारों की हिंसात्मक एव द्वन्द्वात्मक अनुभूति होनी चाहिए । कंधे कई रंगों के हैं । एक काला और दूसरा प्रकाशवान । इसके पार्श्व से फुस्को का शौक देने वाला संगीत सुनाई पड़ता है । हाथों की भिन्नता भी पहचान में आ जाती है । स्त्री का हाथ काले कंधों पर पड़ा हुआ है । पड़ा हुआ होना से ज्यादा उचित होगा जकड़ा हुआ है । एक आदमी की आवाज-बेलौस और ठंडी-जैसे कुछ पंक्तियां उद्धृत कर रही हो -

मर्द की आवाज :-तुमने हिरोशिमा में कुछ नहीं देखा-कुछ नहीं देखा ।

(सुविधा के अनुसार इस आवाज का इस्तेमाल किया जा सकता है । एक स्त्री की आवाज बेलौस, फंसी हुई एक रस जैसे वह पाठ उद्धृत कर रही हो ।)

स्त्री की आवाज - मैंने सब कुछ देख लिया. सब कुछ (फुस्को का संगीत जो पहले फेड आउट हो गया था दुबारा शुरू होता है । ठीक उसी क्रम से जिस क्रम से उस स्त्री का हाथ कंधे को कसता जा रहा है. सहलाने लगता है । उसके नाखूनों के लगने का चिह्न उस कंधे पर दिखलाई पड़ते हैं । फिर स्त्री की आवाज सुनाई पड़ती है । शांत. रंगहीन. बेलौस)

स्त्री अस्पताल.. जैसा कि मैंने देखा.. मैंने सचमुच देखा. हिरोशिमा में एक अस्पताल है.. मैं कैसे नहीं देखती?

(अस्पताल सीढ़ियां, मरीज, कैमरा, ठंडेपन के साथ आब्जेक्टिव शॉट लेता है (हम लोग उस स्त्री को देखते हुए नहीं देखते हैं । फिर हम लोग उस कंधे पर वापस आते हैं जिसे स्त्री ने जोर से पकड़ रखा है जैसे कि वह उसे जाने नहीं देगी) ।

पुरुष: नहीं तुमने हिरोशिमा में अस्पताल नहीं देखा, तुमने हिरोशिमा में कुछ नहीं देखा । (अब स्त्री की आवाज और निर्वैयक्तिक हो जाती है । संग्रहालय के शॉट । वहां की प्रकाश-व्यवस्था वैसी है जैसी अस्पताल की थी । अंधेरी और अस्पष्ट बम के गिराने के प्रमाण माडल, झुलसी चमड़ी, गले लोहे, जली-झुलसी देह.)

स्त्री : -संग्रहालय में चार बार....

पुरुष : -क्या हिरोशिमा में संग्रहालय है?

स्त्री : -हिरोशिमा के संग्रहालय में चार बार.... मैंने देखा लोगों को घूमते हुए । विचारों में खोए। चित्रों में किसी चीज के अभाव में पुनर्निर्माण करने में लगे हुये...

यह उदाहरण फिल्म लेखन का जरूर है किन्तु कैमरा टी.वी. माध्यम के लिए उतना ही जरूरी है इसलिए फिल्म प्रभाव को अलग नहीं किया जा सकता । यहां तक कि टीवी. को फिल्म का जेबी संस्करण माना जाता है । कहां 270 एस.एम. के परदे पर दिखाई जाने वाली फिल्म जब 61 या 51 सेंटीमीटर के परदे पर आ जाती है तो टी.वी. उस का बौन्साई संस्करण लगता है । इसलिए आलेख में परदे की सीमा को ध्यान में रखते हुए शॉट इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। कैमरों के शॉट के अतिरिक्त आलेख या पटकथा या संवादों के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

बोध प्रश्न-3

1. लेखक और निर्देशक घनिष्ठ सहयोग क्यों आवश्यक है?
2. पटकथा के महत्व को स्थापित करने में गुलजार और सलीम जावेद का विशेष योगदान क्यों रहा?
3. टी.वी के फिल्म माध्यम का जेबी संस्करण क्यों कहते हैं?

4.6 सारांश

टी. वी कार्यक्रम के लिए आलेख दस पंक्तियों का हो सकता है जैसे उद्घोषणा के लिए, और दस पृष्ठ का भी वृत्तचित्र या धारावाहिक के लिए । फिल्म की तरह टी.वी भी निर्देशक का माध्यम है। वही आलेख को छायाकार के माध्यम से अपनी कल्पना के अनुसार निर्णायक स्वरूप देता है । नाटक या धारावाहिक का आलेख पटकथा का रूप धारण करता है फिर संवाद लिखे जाते हैं और शूटिंग स्क्रिप्ट बनती है इस दौरान आलेख में अनेक परिवर्तन होते हैं फिर निर्देशक छायाकार और कलाकार कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए सुविधा या स्थिति के अनुसार आलेख संशोधन कर सकते हैं इसलिए टी.वी लेखन सामूहिक लेखन कहलाता है।

टी.वी लेखक को दृश्य- माध्यम के तकनीकी और कलात्मक पक्ष की गहरी समझ होनी चाहिए। उसमें संगीत, ध्वनि-प्रभाव, फिल्मी भाषा और प्रतीकों का सर्वोत्तम उपयोग करने की क्षमता हो।

4.7 शब्दावली

क्लोज-अप : पात्र का नजदीक से लिया गया फोटो चित्र जिसमें कंधे से लेकर सिर तक नजर आये।

शूटिंग स्क्रिप्ट: छायांकन की दृष्टि से तैयार किया गया आलेख जिसमें कैमरे की स्थिति कोण, सामीप्य या दूरी सम्बन्धी स्पष्ट निर्देश अंकित हों । इसमें प्रत्येक शॉट, संवाद, संगीत, साउंड इफेक्ट, कैमरा मूवमेंट और सिक्वेंस का उल्लेख होता है ।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. द वर्क ऑफ द टेलीविजन जर्नलिस्ट: राबर्ट टाइरेल, फोकल प्रेस लि., लंदन
2. टेलीविजन एण्ड स्क्रीन राइटिंग: रिचर्ड ए. ब्लुम, बटरवर्थ-हैनिमैन ।

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. कहानी-उपन्यास के लेखन और टी.वी. लेखन में क्या अन्तर है?
2. लेखक और निर्देशक में सहयोग और समरसता क्यों आवश्यक है?
3. टी.वी. कार्यक्रम में कैमरा संचालन, ध्वनि-प्रभाव और संगीत का महत्व समझाइए ।
4. अपने नगर की किसी प्रमुख समस्या पर 10 मिनट का वृत्तचित्र बनाने के लिए कमेंटरी लिखिए और बताइए किन स्थानों के छायांकन और किन लोगों से बातचीत शामिल है

इकाई 5 टेलीविजन-संवाददाता

ईकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 संवाददाता को परिभाषा

5.2.1 मुद्रित माध्यम

5.2.2 प्रसार माध्यम

5.3 टेलीविजन संवाददाता की भूमिका

5.4 संवाददाता की विशेषताएं

5.4.1 बाह्य पहलू

5.4.2 आंतरिक पहलू

5.4.2.1 दायित्व बोध

5.4.2.2 प्रबंधन क्षमता

5.4.2.3 तकनीकी कुशलता

5.4.2.4 टीम भावना

5.5 व्यावहारिक कार्य

5.5.1 समाचार लेखन

5.5.2 भेंटवार्ता/साउंड बाइट

5.5.3 पीस टू कैमरा

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 उपयोगी पुस्तकें

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

5.0 उद्देश्य

इस ईकाई को पढ़कर आप जान सकेंगे कि पत्रकारिता और टेलीविजन समाचारों के प्रसारण मे संवाददाता की क्या भूमिका रहती है । आपको यह भी मालूम हो जाएगा कि टेलीविजन संवाददाता में क्या विशेषता होनी चाहिए और अच्छा संवाददाता बनने के लिए किन-किन तकनीकी पक्षों का ज्ञान होना आवश्यक है । आप यह भी जान सकेंगे कि जनसंचार-माध्यमों के स्वरूप में तेजी से आ रहे बदलाव के कारण टेलीविज़न संवाददाता की भूमिका मे क्या परिवर्तन हुआ है । इस पाठ से आप समझ सकेंगे कि टेलीविजन समाचारों के प्रस्तुतीकरण के लिए संवाददाता को किन-किन प्रक्रियाओं से गुजर कर समाचार तैयार करना पड़ता है।

5.1 प्रस्तावना

अपने आस पास की घटनाओं को जानने की मनुष्य की सहज इच्छा ने ही पत्रकारिता और जनसंचार-माध्यमों को जन्म दिया है । एक दूसरे तक संदेश पहुंचाने का जो काम पहले अंतर्वैयक्तिक संम्पर्क के जरिए हुआ करता था, वह छपाई टैक्नोलोजी तथा रेडियो टैक्नालोजी के विकास के पश्चात् सामूहिक रूप से होने लगा । इसलिए इन माध्यमों को मास मीडिया या जनसंचार-माध्यम कहा जाता है । किन्तु पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो और टेलीविजन केवल माध्यम हैं जो किसी घटना की सूचना अथवा समाचार को असंख्य लोगों तक पहुंचाने की भूमिका निभाते हैं । इस जानकारी को एकत्र करने का कार्य तो व्यक्तियों द्वारा ही किया जाता है । समाचार एकत्र करने के कार्य को रिपोर्टिंग और इस दायित्व को निभाने वाले व्यक्ति को संवाददाता अथवा कोरेस्पोंडेंट कहा जाता है ।

रेडियो और टेलीविज़न समाचार यानी प्रसारण पत्रकारिता के प्रादुर्भाव से पूर्व संवाददाता द्वारा केवल समाचारपत्रों और संवाद एजेंसियों के लिए रिपोर्टिंग की जाती थी जो सहज और सरल कार्य था । इसमें संवाददाता घटना विशेष की जानकारी विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करके लिख कर या टेलीविजन, टेलीप्रिंटर अथवा फैक्स से समाचारपत्र या एजेंसी को भेज देता है । परन्तु टेलीविजन संवाददाता का कार्य अत्यन्त जटिल है । इसमें संवाददाता को घटना का केवल लिखित ब्यौरा नहीं देना होता बल्कि समाचार के श्रव्य एवं दृश्य तथ्य भी जुटाने होते हैं, क्योंकि समाचार श्रव्य अथवा दृश्य रूप में प्रस्तुत करना होता है । भारत में इस दशक के प्रारंभ तक टेलीविजन समाचार केवल दूरदर्शन से प्रसारित होते थे । दूरदर्शन समाचारों में नवीनता, विविधता तथा रोचकता का अभाव था । संवाददाता की भूमिका भी सीमित थी । किन्तु उपग्रह टेलीविजन चैनलों के आगमन तथा विभिन्न चैनलों द्वारा समाचार प्रसारण शुरू हो जाने के पश्चात् टेलीविजन समाचार की शैली में सुधार हुआ है और दूरदर्शन सहित सभी चैनलों में स्पर्धा होने के फलस्वरूप टेलीविजन समाचारों को पेश करने की तकनीक में नित नए प्रयोग किए जा रहे हैं ।

समाचार एकत्र करने यानी रिपोर्टिंग की बुनियादी आवश्यकताएं वहीं रहते हुए भी संवाददाता की भूमिका तथा दायित्व में काफी विस्तार हुआ है । आज टेलीविजन संवाददाता की भूमिका परंपरागत संवाददाता से काफी भिन्न हो चुकी है और नई-नई चुनौतियां उसके सामने आ रही हैं । यदि आप टेलीविजन के लिए रिपोर्टिंग करना चाहते हैं तो टेलीविजन संवाददाता की बदली हुई भूमिका, कर्त्तव्यों, दायित्वों तथा विशेषताओं को समझना आवश्यक है ।

5.2 संवाददाता की परिभाषा

जैसाकि आप पढ़ चुके हैं कि संवाददाता का मुख्य कार्य संवाद यानी समाचार एकत्र करना है। इसके लिए संवाददाता को घटना या समाचार के स्थल अथवा समाचार के स्रोत तक व्यक्तिगत रूप से पहुंचना होता है । संवाददाता समाचार से जितना निकटता से जुड़ा होगा उतना ही समाचार विश्वसनीय और प्रभावशाली बनेगा । वैसे तो संवाददाता द्वारा दिए गए या भेजे गए समाचार का अनेक स्तरों व चरणों पर परिष्कार यानी संपादन होता है किन्तु अंतिम तौर पर तैयार समाचार की बुनियाद संवाददाता द्वारा भेजा गया डिस्पेच ही बनता है । रिपोर्टिंग पत्र-पत्रिका के लिए हो या प्रसारण-माध्यमों के लिए, समाचार की प्रस्तुति में संवाददाता की आधारभूत भूमिका रहती है । इसके लिए संवाददाता को अपने सम्पर्क सूत्र विकसित करने पड़ते हैं ताकि उसे समाचार और समाचार की संभावनाओं वाले स्रोतों की

तत्काल जानकारी मिल सके । कोई भी समाचार सबसे पहले प्राप्त करना किसी भी संवाददाता का मुख्य लक्ष्य रहता है । राजनीतिक संवाददाता इस मामले में विशेष रूप से चिंतित और सक्रिय रहते हैं । समाचारपत्र या संवाद समिति की विश्वसनीयता बढ़ाने में 'न्यूज़ ब्रेक' यानी अन्य माध्यमों से पहले खबर प्रसारित या प्रकाशित करने का काफी महत्व है । समाचार की रचना और स्वरूप अलग-अलग माध्यमों के लिए अलग- अलग होता है । अत: पत्र-पत्रिकाओं का संवाददाता जिस शैली में खबर तैयार करेगा, वह प्रसारण-माध्यम के लिए काम करने वाले संवाददाता की शैली से भिन्न होगी ।

5.2.1 मुद्रित-माध्यम

मुद्रित माध्यमों में दैनिक एव अन्य नियतकालिक समाचारपत्र-पत्रिकाएं तथा संवाद एजेंसियां आती हैं । क्योंकि दैनिक समाचारपत्र ही समाचार संप्रेषण का प्रभावशाली और व्यापक माध्यम दीर्घकाल तक रहा है । इस लिए आज भी समाचारपत्रों के संवाददाताओं का प्रभुत्व कायम है । यही कारण है कि रेडियो और टेलीविजन केंद्रों तथा चैनलों के लिए संवाददाता मुख्यत: समाचारपत्रों ने ही उपलब्ध कराए । आज भी जिन स्थानों पर रेडियो या टेलीविजन समाचार संगठनों के अपने प्रतिनिधि नियुक्त नहीं है, वहां अखबारों या संवाद समितियों के संवाददाता से वायस डिस्पैच या फोन के माध्यम से समाचार लेने की विश्वसनीय तकनीक का प्रयोग किया जाता है । मुद्रित-माध्यमों के संवाददाता किसी घटना या गतिविधि का पूर्ण विवरण अन्य स्रोतों से पुष्टि या खंडन एवं प्रतिक्रिया तथा उपलब्ध जानकारी के आधार पर घटना की पृष्ठभूमि आदि तार, फैक्स, टेलीप्रिंटर, फोन, इंटरनेट, ई-मेल आदि के माध्यम से पत्र के प्रकाशन के स्थान तक भेजता है । हां, दैनिक समाचारपत्र का संवाददाता अपने पत्र की नीति को ध्यान में रखते हुए समाचार की खोज और प्रस्तुति करता है जबकि संवाद समिति के संवाददाता के सामने इस तरह की कोई बंदिश नहीं रहती । वह घटना का ब्यौरा ज्यों का त्यों भेज देता है क्योंकि समाचारों का इस्तेमाल करने वाले समाचारपत्र अलग-अलग विचारधाराओं के हो सकते हैं (बल्कि होते ही हैं) जो संवाद समितियों से निष्पक्ष, विश्वसनीय और संयमपूर्वक लिखे गए समाचार की अपेक्षा करते हैं । सरकारी विभाग और विदेशी दूतावास भी संवाद समिति की सेवा लेते हैं । समाचार प्रधान पत्रिकाओं के संवाददाताओं को समाचार तत्काल भेजने की आवश्यक्ता नहीं होती । अत: वह घटना के सभी पक्षों पर अतिरिक्त जानकारी एकत्र करके अपनी राय और भावी संभावनाओं के साथ समाचार तैयार करके भेजता है । पत्रिका के संवाददाता की भूमिका में समाचार संपादक की भूमिका का कुछ पुट भी शामिल रहता है ।

5.2.2 प्रसारण-माध्यम

प्रसारण-माध्यमों के संवाददाता को समाचार एकत्र करने की ऊपर बताई गई भूमिका तो निभानी ही पड़ती है साथ ही अपने माध्यम की मांग के अनुसार उसे श्रव्य और दृश्य सामग्री भी जुटानी और प्रेषित करनी होती है । प्रसारण-माध्यमों के संवाददाता के लिए लिखित पक्ष को विस्तार देना आवश्यक नहीं है जबकि मुद्रित माध्यमों के संवाददाता का पूरा काम लिखित रूप में होता है । उदाहरण के लिए रेडियो का संवाददाता घटना का मोटा-मोटा ब्यौरा देने के बाद मौके पर मौजूद किसी व्यक्ति, विषय के किसी विशेषज्ञ या घटना से प्रभावित व्यक्ति की ध्वनि रिकार्ड करके भेज देगा जिससे घटना का ब्यौरा तथा अन्य पहलू स्वत: ही सामने आ जाएंगे । संवाददाता घटना का ब्यौरा स्वयं अपनी आवाज में देकर समाचार को अधिक विश्वसनीय बना सकता है । रेडियो का श्रोता जब घटना से जुड़े लोगों

की अपनी आवाज में विवरण सुनता है तो समाचार सीधे उसके मन-मस्तिष्क से जुड़ जाता है । रेडियो संवाददाता अपना समाचार टेलीफोन लाइन से रिकार्ड करवा सकता है अथवा आडियो कैसेट में रिकार्ड करके वायु अथवा सड़क मार्ग से भेज सकता है । स्थानीय संवाददाता मौके पर जाकर सभी पक्षों की आवाज रिकार्ड करके समाचार कक्ष को उपलब्ध कराता हैं

टेलीविजन संवाददाता की भूमिका इससे भी दो कदम आगे है । उसे ध्वनि के साथ-साथ दृश्य सामग्री भी जुटानी पड़ती है जिसमें कैमरामैन उसकी सहायता करता है । टेलीविजन संवाददाता को लिखित सामग्री, ध्वनि तथा दृश्य तीनों पक्षों का ध्यान रखना होता है ।

5.3 टेलीविजन-संवाददाता की भूमिका

आपने पढ़ा कि प्रसारण-माध्यमों के लिए काम करने वाले अधिकतर संवाददाता मुद्रित माध्यमों से ही अपने कैरियर की शुरूआत करते हैं । बहुत कम संवाददाता हैं जिन्होंने सीधे टेलीविज़न संवाददाता के रूप में काम प्रारंभ किया हो । समाचारपत्रों, संवाद एजेंसियों या रेडियो के लिए समाचार एकत्र करने वाले व्यक्ति टेलीविजन की तकनीकों की जानकारी प्राप्त करके तथा कुछ व्यावहारिक अनुभव या प्रशिक्षण लेकर सफल एवं कुशल टेलीविजन संवाददाता बन जाते हैं । भारत में तो यह बात और भी अधिक सार्थक है क्योंकि यहां टेलीविजन समाचार का इतिहास अपेक्षाकृत नया है । दूरदर्शन समाचार में तो अभी तक भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों की नियुक्ति के कारण रेडियो तथा अन्य माध्यमों में काम कर चुके अधिकारी संवाददाता के रूप में भी काम करते हैं । दूरदर्शन ने विशेष रूप से समाचार संकलन के लिए जो संवाददाता कुछ वर्ष पहले नियुक्त किए थे, उनमें से अधिकांश लोग अखबारों, पत्रिकाओं और रेडियो में काम कर रहे थे । अन्य चैनलों द्वारा भी समाचार कार्यक्रमों के लिए जो संवाददाता नियुक्त किए गये हैं वे भी अखबारों की पृष्ठभूमि वाले हैं । किन्तु सभी अखबारी संवाददाता टेलीविजन संवाददाता नहीं बन सकते । इसके लिए तकनीकी जानकारी के अलावा कुछ खास गुणों की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न-1

1. समाचारपत्र-संवाददाता और टेलीविजन के संवाददाता में बुनियादी अंतर बताइए ।
2. टेलीविजन समाचार प्रसारण में संवाददाता की भूमिका स्पष्ट कीजिए ।

5.4 टेलीविजन संवाददाता की विशेषताएं

आप जान चुके हैं कि टेलीविजन संवाददाता की भूमिका अन्य माध्यमों के संवाददाता की भूमिका से अधिक जटिल तथा बहु-आयामी होती है । यहां हम जिन विशेषताओं की चर्चा कर रहे हैं, उनमें वे विशेषताएं भी शामिल है जो पत्र-पत्रिकाओं, संवाद समितियों और रेडियो समाचार के संवाददाताओं पर भी लागू होती हैं ।

संवाददाता की बुनियादी विशेषता तो यह है कि उसकी समाचार और पत्रकारिता में रुचि और, निष्ठा हो । पत्रकारिता से जुड़ी शैक्षणिक योग्यताएं और प्रशिक्षण सोने में सुहागा है । टेलीविजन समाचारों मे अन्य माध्यमों की तुलना में भाषा का योगदान कम होता है, फिर भी भाषा के महत्व को कम नहीं आका जा सकता । संवाददाता को समाचारों की भाषा पर अधिकार और भारतीय संदर्भ में अंग्रेजी और हिन्दी का अच्छा ज्ञान होना चाहिए । संवाददाता को अपने समाचारों की भाषा में हो रहे विकास तथा परिवर्तनों पर नजर रखनी चाहिए और उस भाषा के साहित्य का सामान्य परिचय होना चाहिए । उसे

टेलीविजन के विभिन्न तकनीकी पक्षों की भी पूरी समझ होनी चाहिए । इन बुनियादी विशेषताओं के अलावा संवाददाता में अन्य अनेक विशेषताओं की अपेक्षा है जिसका विवरण आगे दिया जा रहा है ।

5.4.1 बाह्य पहलू

बाह्य पहलुओं से अभिप्राय: उन विशेषताओं से है जो प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं और संवाददाता के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती हैं । ये पहलू उसे सहज ढंग से समाचार एकत्र करने तथा उनकी प्रस्तुति में सहायक सिद्ध होते हैं । टेलीविजन चूंकि दृश्य माध्यम है, अत: इन पहलुओं की प्रासंगिकता असंदिग्ध है । संवाददाता यदि देखने में स्वस्थ, रूपवान और प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी है तो वह अधिक विश्वास के साथ लोगों से मिल सकता है और बातचीत कर सकता है । टेलीविजन पर अपना समाचार प्रस्तुत करते हुए भी वह मनोहारी लगेगा, जिससे समाचार की संप्रेषणीयता, विश्वसनीयता और प्रभाव में वृद्धि होगी । इसी प्रकार उसकी आवाज मधुर, स्पष्ट और चमकदार होगी तो उसकी बात निश्चय ही अधिक प्रभावशाली होगी । निस्संकोच और धारा प्रवाह बोल सकने और समय तथा संदर्भ के अनुरूप शब्दों व मुहावरों का चयन तथा प्रयोग कर सकने की क्षमता कुशल संवाददाता की महत्वपूर्ण विशेषता है । संवाददाता को समाचारों तथा उन पर प्रतिक्रियाएं प्राप्त करने के उद्देश्य से हर उम्र, हर वर्ग तथा विविध स्वभावों व विचारधाराओं वाले व्यक्तियों से मिलना होता है अत: उसमें मिलनसारिता. शिष्टाचार तथा सद्व्यवहार का. गुण होना आवश्यक है, इसी से मिलती-जुलती विशेषता वेशभूषा की भी । संवाददाता को अवसर, परिस्थिति तथा अपने व्यक्तित्व के अनुरूप प्रभावशाली किन्तु सुरुचिपूर्ण वेशभूषा धारण करनी चाहिए । कुछ संवाददाता, विशेषकर महिला संवाददाता अधिक भड़कीली, तंग और रंग-बिरंगी वेशभूषा धारण करके अपने व्यक्तित्व का प्रभाव कम कर देती हैं । किन्तु विशेष परिस्थितियों जैसे कि युद्ध, भूकंप, बाद, दुर्घटना, महामारी, भुखमरी, उपद्रव जैसे त्रासद समाचारों के समाचार एकत्र करते और प्रस्तुत करते समय वेषभूषा का महत्व गौण हो जाता है ।

5.4.2 आंतरिक पहलू

अभी आपने पढ़ा कि टेलीविजन संवाददाता को अपना व्यक्तित्व तथा अपने काम-काज को प्रभावशाली बनाने के लिए अपने व्यावहारिक, व्यावसायिक जीवन में कुछ बाह्य पहलुओं का ध्यान रखना पड़ता है । किन्तु संवाददाता को कुछ आन्तरिक गुण भी विकसित करने चाहिए जो बाह्य पहलुओं से अधिक महत्वपूर्ण हैं ।

5.4.2.1 दायित्व बोध

इनमें सबसे पहली विशेषता है दायित्व संभालने की तत्परता । संवाददाता को किसी भी समय किसी भी प्रकार की घटना का समाचार लेने के लिए निकलना पड़ सकता है । कुछ वर्ष पहले दिल्ली के निकट हरियाणा में चरखी-दादर में दो विमान टकरा कर दुर्घटनाग्रस्त हो गए थे । इससे पहले दिल्ली हवाई अड्डे के निकट रूस का एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ था । ये दोनों दुर्घटनाएं तड़के हुई थी और संवाददाताओं को तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर अंधेरे में ही दुर्घटना को कवर करके चित्र तथा समाचार भेजने का दुष्कर एव चुनौतीपूर्ण कार्य संभालना पडा था । इसी प्रकार 1993 में महाराष्ट्र में लिटर में भीषण अप के दौरान अचानक संवाददाताओं को भूकंप प्रभावित क्षेत्र में पहुंचकर समाचार भेजने पड़े

। अच्छा टेलीविजन संवाददाता वास्तव में चुनौतियों की प्रतीक्षा करता है और कोई भी कठिन दायित्व आते ही उसे निभाने के लिए आगे आता है ।

5.4.2.2 प्रबन्ध क्षमता

संवाददाता को परिश्रमी और कल्पनाशील होना चाहिए ताकि वह अपना मिशन पूरा करने के यानी समाचार और दृश्य सामग्री जल्दी से जल्दी गंतव्य स्थान तक पहुँचाने के उपाय छू सके । ऐसे में व्यवहार कुशलता का गुण काफी काम आता है । ऊपर हमने लातूर के भीषण भूचाल की चर्चा की है । जिन दिनों यह भूकंप आया था निजी चैनलों पर समाचार प्रसारण अपनी अवस्था में था । दूरदर्शन के हैदराबाद स्थित संवाददाताओं ने प्रतिदिन तीन-तीन सौ किलोमीटर सड़क यात्रा करके वहाँ के चित्र और समाचार दिल्ली भेजने की व्यवस्था की क्योंकि भूचाल स्थल के निकट किसी भी स्थान से चित्र प्रेषित करने की संचार सुविधा नहीं थी । संवाददाता को अपनी सूझ-बूझ और सीमित साधनों के बल पर संवाद तथा विजुअल प्रेषित करने पड़ते हैं । अत: बिना घबराए अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए धैर्यपूर्वक परिश्रम तथा विवेक का इस्तेमाल करने की क्षमता टेलीविजन संवाददाता की महत्वपूर्ण विशेषता है । दूसरे शब्दों में संवाददाता को कुशल प्रबन्धक भी होना चाहिए । उसे कैमरामैन, लाइट ब्वाय, ध्वनि संयोजक आदि सभी का सहयोग लेना होता है । यदि कभी कोई उपकरण खराब हो जाए तो कैसे तत्काल उसे ठीक कराना है या कौन-सा-वैकल्पिक तरीका अपनाना है, यह सब सोचने-समझने की शक्ति उसमें होनी चाहिए । दिल्ली में हुई विमान्दुर्घटना के बाद आस-पास बिजली का कोई प्वाइंट नहीं था और कैमरे की बैटरी फेल हो गई तो दूरदर्शन के संवाददाता ने कहीं दूर जाकर बिजली का प्वाइंट ढूंढा और लंबे तार की मदद से कैमरा ऑपरेट किया । उसकी इस सूझबूझ और परिश्रम की बदौलत दर्शकों को कुछ ही समय बाद सवेरे के समाचारों में विमान दुर्घटना की तस्वीरें देखने को मिल सकीं।

5.4.2.3 तकनीकी कुशलता

संवाददाता अपना काम बखूबी तभी कर सकता है जब उसे टेलीविजन प्रसारण के तकनीकी पहलुओं का व्यावहारिक ज्ञान होगा । जब उसे वीडियो तथा ऑडियो रिकार्डिग, संपादन, वीडियो-ऑडियो मिक्सिंग, कैमरा संचालन जैसे कार्यो का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि अनेक बार ऐसे अवसर भी आते हैं जब संवाददाता को बिना किसी सहायक के स्वयं ही ये सब काम करने पड़ते हैं ।

जब संवाददाता को बाहर किसी स्थान पर या विदेश में कवरेज के लिए जाना हो तो उसे पहले मालूम कर लेना चाहिए कि किस स्थान पर वीडियो संपादन तथा समाचार प्रेषण की सुविधाएं उपलब्ध हैं । इसी तरह माइक के इस्तेमाल का भी समुचित ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि उसे लोगों से बातचीत करके भी समाचार एकत्र करने होते हैं ।

5.4.2.3 टीम भावना

आपने पहले पढ़ा कि टेलीविजन समाचारों के लिए रिपोर्टिंग करना एक जटिल और बहु-आयामी प्रक्रिया है जिसमें अनेक पक्ष सम्मिलित हैं । संवाददाता ई. एन. जी. (इलेक्टॉनिक न्यूज गैदरिंग) टीम का मुखिया होता है और उसे कैमरामैन, लाइटमैन, ध्वनि-संयोजक, इंजीनियर आदि अनेक व्यक्तियों का सहयोग लेना होता है । अत: उसमें सबको साथ लेकर चलने की क्षमता और नेतृत्व का गुण अवश्य होना चाहिए । कई बार बहुत कम समय में उसे न केवल समाचार प्राप्त करना होता बल्कि अपनी

आवाज में रिकार्ड करके पूरा कैप्सूल बनाकर प्रस्तुत करना होता है । यदि उसमें नेतृत्व-कुशलता तथा सहयोगियों को साथ लेकर चलने की क्षमता नहीं होगी तो वह अपना काम सफलतापूर्वक नहीं कर पाएगा । उसे समाचार बुलेटिन के संपादक के साथ भी पूरा तालमेल रखकर काम करना होता है क्योंकि संपादक ही यह तय करता है कि अमुक समाचार को किस प्रकार का स्वरूप देना है, उसकी अवधि कितनी रखनी है और उसमें कौन-कौन से पहलू शामिल हैं । अत: अपने मिशन के प्रति व्यावसायिक निष्ठा, अनुशासन और टीम भावना को अपने भीतर विकसित करके ही टेलीविजन संवाददाता सही भूमिका निभा सकता है ।

5.4.2.4 निष्पक्षता

निष्पक्षता और तटस्थता यों तो सभी माध्यमों के संवाददाताओं और प्रस्तुतकर्त्ताओं का अनिवार्य गुण है, किन्तु टेलीविजन संवाददाता के लिए यह सावधानी अधिक महत्वपूर्ण है । इसका कारण यह है कि टेलीविजन में व्यक्ति, समूह अथवा संगठन प्रत्यक्ष दर्शकों के सामने आते हैं जिससे उन्हें प्रचार या ख्याति मिलने की संभावना बढ़ जाती है । किसी नेता, अधिकारी या कार्यकर्त्ता को आवश्यकता से अधिक प्रोजेक्ट करना या कम अवधि के लिए विजुअल में रखना पक्षपातपूर्ण अथवा भेदभावपूर्ण माना जा सकता है । कई बार कुछ पक्षों की ओर से दबाव तथा प्रलोभन भी आते हैं । किन्तु संवाददाता में इन दबावों और प्रलोभनों का सामना करने तथा अपने पर अंकुश लगा सकने की क्षमता होनी चाहिए । विषय और प्रस्तुति दोनों दृष्टियों से निष्पक्षता बरतना आवश्यक है । उसे अपनी व्यक्तिगत विचारधारा, निष्ठा और पसंद-नापसंद को समाचार की प्रस्तुति पर कभी भी हावी न होने देना चाहिए।

बोध प्रश्न-2

1. टेलीविजन संवाददाता के बाहरी स्वरूप को क्यों महत्व दिया जाता है?
2. टीम भावना के बिना टेलीविजन संवाददाता कभी सफल नहीं हो सकता । क्यों?
3. प्रबन्ध कुशलता की अपेक्षा क्यों की जाती है?

5.5 व्यावहारिक कार्य

आप जान चुके हैं कि टेलीविज़न संवाददाता में क्या-क्या विशिष्ट गुण होने चाहिए । इन गुणों और विशेषताओं के आधार पर संवाददाता रिपोर्टिंग तथा समाचार की प्रस्तुति कर अपना दायित्व सही ढंग से निभा सकता है । अब हम समाचार एकत्र करने तथा उसे टेलीविजन के समाचार बुलेटिन में शामिल करने योग्य रूप देने की प्रक्रिया के कुछ मुख्य पहलुओं तथा विधियों की चर्चा करेंगे । घटनास्थल या समाचार के स्थल, सभा, बैठक, सम्मेलन, कार्यक्रम, उत्सव, प्रतियोगिता आदि को देख-सुनकर उसके बारे में जानकारी एकत्र करना और उसे लिखना यह सभी माध्यमों की रिपोर्टिंग का प्राथमिक पहलू है । किन्तु टेलीविजन संवाददाता को समाचार लेने तथा उसकी प्रस्तुति में जो अन्य कार्य करने पड़ते हैं, उन्हें जान लेना भी आवश्यक है ।

5.5.1 समाचार लेखन

किसी घटना के विभिन्न पहलुओं की मुख्य बातें टांकने बाद संवाददाता समूचे घटनाक्रम को व्यवस्थित रूप देता है । इसके लिए सबसे पहले उसे इंट्रो यानी आमुख लिखना होता है । आमुख किसी

समाचार का वह हिस्सा है जिससे समाचार प्रारंभ होता है । पूरी घटना का सबसे महत्वपूर्ण भाग जो सभी दर्शकों की रुचि का हो, आमुख बनता है । आमुख का निर्णय क़रते हुए संवाददाता को अपने समाचार संगठन की नीति का भी ध्यान रखना होता है । संवाददाता बाद में इस इंट्रो को बदल भी सकता है । इसके बाद समाचार की काया (बाडी) की तैयारी की जाती है । यह आवश्यक नहीं कि घटना को क्रमवार ही लिखा जाए । उदाहरण के लिए किसी दुर्घटना के समाचार मे सबसे पहले मृतकों की संख्या बताई जाएगी । उसके बाद सहायता और राहत कार्यो का ब्यौरा दिया जाएगा और घायल लोगों तथा जीवित बचे व्यक्तियों की राय ली जाएगी । आप अंत में यह बता सकते हैं कि दुर्घटना किस समय और किस तरह हुई । जैसा कि पहले आप पढ़ चुके हैं टेलीविजन में भाषिक विवरण को कम तथा श्रव्य एव दृश्य पक्ष को अधिक महत्व दिया जाता है । अत: कम से कम किन्तु प्रभावशाली भाषा का इस्तेमाल करते हुए समाचार इस तरह लिखा जाए कि उसमें संबंधित पक्षों की प्रतिक्रियाएं उनके चित्र आदि को भरपूर स्थान दिया जा सके । जब चित्र और स्वाभाविक ध्वनि उपलब्ध होती है तो भाषा निरर्थक हो जाती है । स्वाभाविक ध्वनि यानी नेचुरल साउंड घटना के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देती है । किसी की हत्या, मृत्यु या प्राकृतिक आपदा का समाचार देते हुए पीड़ित व्यक्ति अथवा उसके संबंधियों के रुदन अथवा कराह की स्वाभाविक ध्वनि के साथ घायलों के घाव या चेहरों पर परेशानी व पीड़ा के भाव क्लोज-अप में दिखा दिए जाएं तो उससे जो प्रभाव उभरेगा उसके सामने मार्मिक शब्दों में दिया गया ब्यौरा एकदम फीका साबित होगा । अत: टेलीविजन संवाददाता हर प्रकार के समाचार में, विशेषकर मानवीय घटनाओं के समाचारों में शब्दों से बहुत कम और चित्रों व ध्वनि के माध्यम से अधिक कहने की कोशिश करता है । इससे समाचार की प्रामाणिकता तथा विश्वसनीयता स्थापित होती है । टेलीविजन समाचार अधिक प्रभावोत्पादक होते हैं क्योंकि दर्शक को घटनास्थल का साक्षी बना देते हैं ।

5.5.1.2 भेंटवार्ता/साउंड बाइट

अभी आपने पढ़ा कि टेलीविजन समाचार में चित्रों और ध्वनि का सर्वाधिक महत्व है । किसी घटना के विविध पक्षों के चित्र कैमरे. में कैद करके उन्हें आवश्यकता के अनुरूप संपादित करके इस्तेमाल किया जा सकता है और स्वाभाविक ध्वनि मौके पर रिकार्ड करके उसका यथास्थान उपयोग किया जा सकता है । टेलीविजन समाचार को विश्वसनीय और सहज बनाने में साउंड बाइट यानी संबंधित व्यक्तियों द्वारा बोले गए शब्दों का अत्यधिक योगदान है ।

यह साउंड बाइट यानी वाचिक अंश कई तरह से प्राप्त किये जाते हैं। किसी घटना के प्रत्यक्षदर्शियों के पास जाकर संवाददाता उनसे घटना का ब्यौरा देने को कह सकता है। किसी बैल्ट या संमेलन से बाहर निकलने वाले प्रतिनिधियों या विशिष्ट पदाधिकारियों से बैठक में हुई बातचीत अथवा लिए गए निर्णयों की जानकारी मांगी जा सकती है। इस तरह की अनौपचारिक (आफ हैंड) बातचीत में कई बार बहुत महत्वपूर्ण खबरें हाथ लग जाती हैं। इस तरह की साउंड बाइट से घटना से जुड़े सभी पक्षों की राय सामने आ जाती है और श्रोता स्वयं उसकी संचाई की मात्रा का अनुमान लगा सकता है। उदाहरण के लिए मिलावटी शराब से लोगों के मरने व बीमार हो जाने की स्थिति में संवाददाता को पीड़ित व्यक्तियों, मृतकों के परिवारजनों, उस क्षेत्र की पुलिस, किसी डॉक्टर तथा किसी सामाजिक कार्यकर्त्ता की प्रतिक्रियाएं रिकार्ड करनी चाहिए ।

साउंड बाइट अथवा ध्वनि अंश रिकार्ड करने का एक अन्य उपाय है भाषण दे रहे अथवा विचार-विमर्श में भाग ले रहे व्यक्ति की आवाज को मौके पर रिकार्ड करना । इसी तरह संवाददाता

सम्मेलन को संबोधित करने वाले व्यक्ति की ध्वनि को रिकार्ड करके उसके अंश को साउंड बाइट के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है । संवाददाता सम्मेलन में टेलीविजन संवाददाता अपने तथा दूसरों दारा पूछे गए प्रश्नों तथा उनके उत्तर में कही गई बातों को रिकार्ड कर सकता है।

भेंटवार्ता या इंटरव्यू टेलीविजन समाचार का एक प्रमुख स्रोत है । यह भेंटवार्ता किसी घटना, बैठक, सम्मेलन आदि के स्थल पर की जा सकती है और स्टूडियों में व्यवस्थित रूप से भी ली जा सकती है । भेंटवार्ता का एक लाभ यह होता है कि संवाददाता पहले से संगत प्रश्न सोच लेता है या लिख लेता है । इसी तरह स्टूडियो में एक से अधिक लोगों के बीच हुई परिचर्चाओं के अंश भी सछंड बाइट के रूप में प्रसारित किए जा सकते हैं । इन ध्वनि अंशों के उपयोग से संवाददाता अपने दारा दिए गए समाचार की पुष्टि करा लेता है । इससे समाचार की विश्वसनीयता और प्रभाव सहज ही बढ़ जाता है ।

5.5.3 पीस टू कैमरा

आपने ऊपर पढ़ा कि श्रव्य एवं दृश्य सामग्री से समाचार को प्रामाणिकता तथा विश्वसनियता प्राप्त होती है । इस संदर्भ में टेलीविजन प्रसार में पीस टू कैमरा तकनीक की भी उपयोग भूमिका है । पीस टू कैमरा का अर्थ है संवाददाता द्वारा घटना के मौके से दृश्य और श्रव्य रूप में घटना का ब्यौरा देना या समाचार का समापन करना । संवाददाता जहां खड़ा होकर या बैठक कैमरे के सामने अपनी बात कहता है उसकी पृष्ठभूमि प्राय: घटनास्थल या उसे जुड़ा स्थान दिखाई देता है । उदाहरण के लिए किसी राजनीतिक दल के राष्ट्रीय अधिवेशन का समाचार देते हुए संवाददाता अधिवेशन के मंच के सामने खड़े होकर अपनी बात कहता हुआ दिखाया जाता है तो श्रोताओं को एहसास हो जाता है कि संवाददाता स्वयं समाचार के स्थान पर उपस्थित है जिससे सहज ही समाचार की विश्वसनीयता स्थापित हो जाती है ।

जैसा कि पहले कहा गया है कि दृश्य एवं श्रव्य माध्यम होने के कारण टेलीविजन से प्रसारण में संवाददाता के लिए निष्पक्षता एवं संयम से काम लेना आवश्यक है । संयम तथा आत्मानुशासन की पीस टू कैमरा में विशेष जरूरत रहती है क्योंकि इसमें संवाददाता स्वयं को प्रस्तुत कर रहा होता है । यदि संवाददाता अपने को समाचार बुलेटिन में अनुचित ढंग से या आवश्यकता से अधिक समय तक मौजूद रहने या अपनी छवि निखारने के लोभ का शिकार हो जाएगा तो पीस टू कैमरा का उलटा प्रभाव पड़ेगा और समाचार तथा संवाददाता की विश्वसनीयता आहत हो जाएगी । हर समाचार में पीस टू कैमरा आवश्यक नहीं होता । इस प्रकार पीस टू कैमरा में संवाददाता की समाचार-प्रस्तुति-क्षमता की ही नहीं, उसके व्यावसायिक कौशल एवं पत्रकारिता सम्बन्धी सूझ-बूझ की भी परीक्षा होती है । इस कसौटी पर खरा उतरना टेलीविजन संवाददाता के लिए अनिवार्य है ।

बोध प्रश्न-3

1. टेलीविजन समाचार में भेंटवार्ता का क्या महत्व है?
2. पीस टू कैमरा से क्या तात्पर्य है?

5.6 सारांश

इस पाठ में आपने जाना कि टेलीविजन संवाददाता बनने के लिए क्या-क्या गुण और विशेषताएं होनी चाहिए । आप यह भी जान गए कि टेलीविजन संवाददाता का काम अन्य संचार माध्यमों के

संवाददाताओं से किस तरह भिन्न और अधिक जटिल होता है आपने यह भी पढा कि टेलीविजन संवाददाता में व्यवहार कुशलता, शिष्टाचार, वेशभूषा की समझ के साथ-साथ आत्म-विश्वास हर चुनौती एवं दायित्व को संभालने की क्षमता व पहलू प्रबन्ध कौशल निष्पक्ष दृष्टि टीम भावना और नेतृत्व-क्षमता भी होनी चाहिए। इसके अलावा टेलीविजन तकनीक के विभिन्न पहलुओं की व्यावहारिक जानकारी होना भी आवश्यक है । हमने इस पाठ में आपको यह भी बताया कि टेलीविज़न संवाददाता को समाचार एकत्र करने तथा उसकी प्रस्तुति में किन विशिष्ट विधियों और तकनीकों का आश्रय लेना पड़ता है।

5.7 शब्दावली

1. **टेलीविज़न संवाददाता:** टेलीविज़न संवाददाता को केवल समाचार संग्राहक ही नहीं, वक्ता और प्रसारण तकनीक का जानकार भी होना चाहिए ।
2. **आफ हैंड-इंटरव्यू:** ऐसे साक्षात्कार या सवाल-जवाब जो मौके पर उपस्थित और विषय से संबंधित व्यक्तियों से किए जाते हैं । पहले से नहीं मालूम होता कि किससे बात करनी होगी, और न प्रश्नों का कोई पूर्व-नियोजित सिलसिला होता है।
3. **साउंड बाइट:** राय या प्रतिक्रिया प्रकट करने वाले व्यक्ति की आवाज का रिकार्ड किया गया अंश, जिसे समाचार या किसी कार्यक्रम के बीच में सुनाया जा सकता है ।
4. **पीस टू कैमरा:** संवाददाता द्वारा घटनास्थल से संवादप्रेषण के लिए जब दूसरे कैमरे का इस्तेमाल किया जाए ।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. द वर्क ऑफ द टेलीविजन जर्नलिस्ट: राबर्ट टेइरेल, फोकल प्रेस, लंदन ।
2. ब्राडकास्ट जर्नलिज्म: हैकमुल्डर, जोंगे बी.पी सिंह, अनमोल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. दृश्य-श्रव्य संप्रेषण और पत्रकारिता: डॉ. जेम्स एस. मूर्ति, भारतीय भाषा पीठ, नई दिल्ली
4. ब्राडकास्ट जर्नलिज्म: ऐंड्यू बॉयड, हैनिमैन प्रोफेशनल पब्लिशिंग ।

5.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. टेलीविज़न संवाददाता का काम समाचारपत्र तथा संवाद एजेंसियों के संवाददाताओं से किस प्रकार भिन्न है?
2. टेलीविजन समाचारों के प्रसारण में संवाददाता की भूमिका पर निबंध लिखिए ।
3. टेलीविजन संवाददाता की आंतरिक विशेषताओं से क्या अभिप्राय: है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. टेलीविजन माध्यम की तकनीकी जानकारी संवाददाता के लिए क्यों आवश्यक है?
5. टेलीविजन समाचार प्रस्तुति में शब्दों से अधिक महत्व श्रव्य एवं दृश्य तत्वों का है, इसे स्पष्ट कीजिए।
6. टेलीविज़न तथा रेडियो के लिए रिपोर्टिंग में क्या समानताएं और भिन्नताएं हैं ?

NOTES

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैद्यानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष